3-2

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

ज्योतिष सर्वसंग्रह

भाषा टीका चारों प्रकरण सहित



कर्मकाण्ड विषय की अनेक प्रकार की पुस्तकों के रचियता

●

सम्पादक :

पं० रामस्वरूप शर्मा (मेरठ निवासी)

☎ २५५५१६

प्रकाशक :

जनता प्रकाशन [पंजी.]

कूंचा चेलान, खारी बावली दिल्ली-6

संशोधित संस्करण] [मूल्य १० रुपये

(3.2)

॥ श्री ॥

ज्योतिष सर्वसंग्रह

भाषा टीका चारों प्रकरण सहित

कर्मकाण्ड विषय की अनेक प्रकार की पुस्तकों के रचियता

सम्पादक :—

पण्डित रामस्वरूप शर्मा

(मेरठ निवासी)

ने पण्डितों के लाभ के लिए बनाया

☎ २५५५१६

प्रकाशक :

जनता प्रकाशन [पंजी.]

कूंचा चेलान, खारी बावली दिल्ली-6

संशोधित संस्करण]

[मूल्य १० रुपये

विषय-सूची

जातक प्रकरण—प्रथम भाग

॥ श्री विघ्नेश्वराय नमः ॥

ज्योतिष सर्वसंग्रह

[भाषा टीका सहित]

प्रथम भाग जातक प्रकरण

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धिसिद्धये ।
समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो सर्वसंग्रहः लिख्यते ॥

मधुस्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाश्र नमो नमस्यः
तथेष ऊर्जश्च सदाः सहस्यस्त पस्तपस्यश्च यथा क्रमेणः ॥

अथ द्वादस मासों के नाम संस्कृत और भाषा में

चैत को मधु और मीन भी कहते हैं	आषाढ़ को शुचि और मिथुन भी कहते हैं	आश्विन को ईश व कन्या भी कहते हैं	पौष को सहस्य और धन भी कहते हैं
बैसाख को माधव और मेष भी कहते हैं	श्रावण को नभ और कर्क भी कहते हैं	कार्तिक को उर्ज और तुला भी कहते हैं	माघ को तप व मकर भी कहते हैं
ज्येष्ठ को शुक्र और वृष भी कहते हैं	भाद्रपद को नभस्य और सिंह भी कहते हैं	मार्गशिर को सह और वृश्चिक भी कहते हैं	फाल्गुण को तपस्य व कुम्भ भी कहते हैं

सोलह तिथियों के नाम

१ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पंचमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी, १५ पूर्णमासी ३० अमावस्या।

तीन तीन तिथियों के नाम

१ पडवा ६ छठ ११ एकादशी, ये नन्दा तिथि हैं
२ दोयज ७ सप्तमी १२ द्वादशी, ये भद्रा तिथि हैं
३ तीज ८ अष्टमी १३ त्रयोदशी, ये जया तिथि हैं
४ चौथ ९ नवमी १४ चतुर्दशी, ये रिक्ता तिथि हैं
५ पंचमी १० दशमी १५ पूर्णिमा, ३० अमावस्या ये पूर्णा तिथि हैं।

अथ सप्तवाराः।

रविः सोमस्तथा भौमो बुधो श्रीष्मपतिरेव च शुक्रः
शनैश्चर श्चैवं वाराः सप्त प्रकीर्त्तिता॥

रविवार, चन्द्रवार, भौमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार।

रविवार को आदित्यावार या ऐतवार, चन्द्रवार को सोमवार, भौमवार को मंगलवार, बुधवार बुध, गुरु को बृहस्पति व जुमेरात, शुक्रवार को जुम्मा शनिवार को थावर भी कहते हैं। राहु, केतु ये सात वार में मिलकर नवग्रह कहलाते हैं।

पूर्वापरं मासदलं पक्षौ नील सितामिधौ।
आदौ शुक्ल प्रवक्तव्यः केचिंत् कृष्णोऽपि मासके॥

एक महीने के दो पक्ष होते हैं—कृष्ण पक्ष और शुक्लपक्ष। अन्धेरी रात को कृष्णपक्ष और चांदनी रात को शुक्लपक्ष, महीने की शुरू की पड़वा से अमावस तक कृष्णपक्ष, अमावस के बाद की पड़वा से पूर्णमासी तक शुक्ल पक्ष। कृष्ण पक्ष को बदी और शुक्लपक्ष को सुदी कहते हैं।

अथ षट ऋतु

मृगादिराशि द्वय भानु भोगात् षट्चर्तवः स्युःशिशरोवसन्त ग्रीष्मश्च वर्षाश्क शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठा।

बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

एक एक ऋतु दो महीने वर्तमान रहती है जैसे मेष वृष के सूर्य में यानी वैशाख ज्येष्ठ में बसन्त ऋतु होती है मिथुन कर्क के सूर्य में यानी आषाढ़ श्रावण में ग्रीष्म। सिंह कन्या के सूर्य यानी भाद्रपद आश्विन में वर्षा ऋतु होती है। तुला वृश्चिक के सूर्य में यानी कार्तिक मंगसिर में शरद। धन मकर के सूर्य में यानी पौष माघ में हेमन्त। कुम्भ मीन के सूर्य में यानी फाल्गुन चैत्र में शिशिर। छः महीने सूर्य उत्तरायण और छः महीने दक्षिणायन रहता है। उत्तरायण सूर्य में देवताओं का दिन होता है और दक्षिणायन में रात होती है। इसी कारण जितने शुभ काम हैं उत्तरायण सूर्य में होते हैं। माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आषाढ़ इन ६ महीनों में सूर्य उत्तरायण रहता है और श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मंगसिर, पौष इन ६ महीनों में सूर्य दक्षिणायन रहता है। ये संक्रांति के हिसाब से पंचांग में लिखा रहता है। धनु की संक्रांति के ९ अंशों पर उत्तरायण होता है। मिथुन के ९ अंशों पर सूर्य दक्षिणायन होता है इस प्रकार मकर के सूर्य से छः मास उत्तरायण (सौम्यायन) और कर्क के सूर्य से छः मास दक्षिणायन (याम्याय) के माने जाते हैं।

अष्टविंशति नक्षत्राणी

अब २८ नक्षत्र लिखते हैं।

१ अश्वनी २ भरणी ३ कृतिका ४ रोहिणी ५ मृगाशिरा ६ आर्द्रा ७ पुनर्वसु ८ पुष्य ९ श्लेषा १० मघा ११ पूर्वाफाल्गुनी १२ उत्तरा फाल्गुनी

१३ हस्त १४ चित्रा १५ स्वाति १६ विशाखा १७ अनुराधा १८ ज्येष्ठा १६ मूल २० पूर्वाषाढ़ २१ उत्तराषाढ़ २२ अभिजिम् २३ श्रवण २४ धनिष्ठा २५ शतभिषा २६ पूर्वाभाद्रपद २७ उत्तराभाद्रपद २८ रेवती।

नक्षत्रों के देवता--चक्र

न०	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
देवता	अश्विनी कुमार	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्रमा	रुद्र	अदिति
न०	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू० फा०	उ० फ०	हस्त	चित्रा
देवता	गुरु	सर्प	पितर	भग	अर्यमा	सूर्य	विश्व कर्मा
न०	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़	उ० षाढ़
देवता	वायु	इन्द्र अग्नि	मित्र	इन्द्र	निऋति	जल	विश्वे देवा
न०	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	शतभि०	पू० भा०	उ० भा०	रेवती
देवता	विधि	विष्णु	वसु	वरुण	अजैक पाद	अहिर्बुध्न	पूषा

सप्त विंशति योगाः

विष्कुंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा।
अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १ ॥
गंडो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघायो हर्षणस्तथा।
वज्रं सिद्धव्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ २ ॥

सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म चैन्द्रोऽथवैधृतिः।
सप्त विंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः॥३॥

१ विष्कुम्भ २ प्रीति ३ आयुष्मान ४ सौभाग्य ५ शोभन ६ अतिगड ७ सुकर्मा ८ धृति ९ शूल १० गंड ११ वृद्धि १२ ध्रुव १३ व्याघात १४ हर्षण १५ वज्र १६ सिद्धि १७ व्यतीपात १८ वरीयान १९ परिघ २० शिव २१ सिद्धि २२ साध्य २३ शुभ २४ शुक्ल २५ ब्रह्म २६ ऐन्द्र २७ वैधृति इति सप्त-विंशतियोगाः समाप्ताः ।। ये सत्ताइस योग हैं।

अथ एकादशकरण नाम

१ वव २ वालव ३ कौलव ४ तैतिल ५ गर ६ वणिज् ७ विष्टि

ये सात चर संज्ञक करण हैं।

८ शकुनी ९ चतुष्पद १० नाग ११ किंस्तुघ्न

ये चार करण स्थिर हैं इस प्रकार ११ करण हैं।

करण बनाने का प्रकार

शुक्ल पक्ष की पड़वा से गत तिथि को दूना करे अर्थात बीच की तिथि को दूना करे और सात से ज्यादा हों तो सात का भाग दे जो बाकी रहे ववादि वही करण जानना। (उदाहरण) जैसे हमें कृष्णपक्ष को द्वितीया के पहले तथा दूसरे दल करण जानना है तो गत तिथि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तक १६ हुई। इन्हें दूना किया तो ३२ हुए, इनमें ७ का भाग देने से ४ बचे, पहले दल में चौथा तैतिल करण हुआ, दूसरे दल में गर करण हुआ।

बारह राशियों के नाम

१ मेष २ वृष ३ मिथुन ४ कर्क ५ सिंह ६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ९ धन १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन।

दिनमान देखना

साठ घड़ी का एक दिन रात होता है कभी दिन बड़ा हो जाता है और कभी रात। एक घड़ी के साठ पल होते हैं, एक पल के ६० विपल होते हैं २॥ पल का एक मिनट होता है २२ मिनट की एक घड़ी होती है २॥ घड़ी का १ घन्टा और २४ घन्टों का एक दिन रात होता है। १ नक्षत्र के चार चरण होते हैं। चार अक्षर। जब किसी बालक का जन्म हो उस दिन देखना है कि कौन सा नक्षत्र है? नक्षत्र के चार भाग करले। जब वह नक्षत्र शुरू हुआ हो जब तक रहेगा। जैसे अश्विनी नक्षत्र में जन्म हुआ है, तो देखो कि यह नक्षत्र ६० घड़ी भोग करता है तो पन्द्रह पन्द्रह घड़ी के चार चरण हुए और जो नक्षत्र ६० घड़ी से कम या अधिक हो तो उतनी ही घड़ियों को चार जगह बांटे तो जितनी बांट आये उतनी ही घड़ियों पलों का एक चरण जाने, जिस चरण में जन्म हो उसी चरण का अक्षर नक्षत्र नाम में पहले आता है अश्विनी में जन्म हुआ तो यह देखो कि कौन से चरण में जन्म हुआ? उसी चरण के अक्षर के नाम पर रखे। जैसे चू चे चो ला अश्विनी पहले चरण का अक्षर चू है दूसरे का चे है तीसरे का चो है चौथे का ला है। जो चू पर लड़के का जन्म हो तो चुन्नीराम लड़की का जन्म हो तो चुनिया चे पर चेतराम। चो चोखराज, चोलावती। ला पर लाला, लाल मणि या लीला। सब नक्षत्रों पर ऐसे ही नाम रखे ब्राह्मण के यहां शर्मा, क्षत्रियों के यहां वर्मा, वैश्य के यहां गुप्त करके, शूद्र के यहां दास व चौधरी लगाकर नाम रखे जिस नक्षत्र के चरण में लड़के या लड़की का जन्म होगा उसका वही नक्षत्र होगा।

बारह राशियों के रंग

मेष का रंग लाल, वृष का कपूर, मिथुन का हरा, कर्क का गुलाबी, सिंह का पीला, कन्या का चित्र विचित्र जैसा तुला का सफेद, वृश्चिक का काला, धन का पीला, मकर का नवल जैसा, कुम्भ का भी नवल जैसा, मीन का मछली जैसा होता है।

चार-चार (अक्षरों) चरणों के नक्षत्र

१ चू	चे	चो	ला	अश्विनी	रु	रे	रो	ता	स्वाति १५
२ ली	लू	ले	लो	भरणी	ति	तू	ते	तो	विशाखा १६
३ अा	इ	ऊ	ए	कृत्तिका	न	नी	नू	ने	अनुराधा १७
४ ओ	बा	बि	बु	रोहिणी	नो	या	यी	यू	ज्येष्ठा १८
५ वे	वो	कां	कीं	मृगसिरा	ये	यो	भ	भी	मूल १९
६ के	घ	ङ	छ	आर्द्रा	भू	धा	फा	ड	पूर्वाषाढा २०
७ के	को	ह	ही	पुनर्वसु	भे	भो	ज	जी	उत्तराषाढा २१
८ हु	हे	हो	डा	पुष्य	ज	जे	जो	खा	अभिजित २२
९ डि	डू	डे	डा	अश्लेषा	ख	खी	खू	खे	श्रवण २३
१०म	मी	मू	ने	मघा	ग	गी	गू	गे	धनिष्ठा २४
११ मो	टा	टी	टू	पू०फा०	गो	सा	स	सु	शतभिषा २५
१२ टे	टो	प	पी	उ०फा०	से	सो	द	दी	पू०भाद्रपद २६
१३पू	प	ण	ठ	हस्त	दू	थ	झ	ञ	उ०भाद्रपद २७
१४पे	पा	रे	री	चित्रा	दे	दो	च	च	रेवती २८

नौ अक्षरों की एक राशि होती है। जैसे चू+चे+चो+ला+ली+लू+ले+लो+आ। इन नौ अक्षरों की मेष राशि हुई। इन अक्षरों में जिनके नाम का अक्षर होगा उसकी मेष राशि होगी ऐसे ही ये बारह राशि हैं।

नौ अक्षरों की राशि दो अक्षरों की राशि और स्वामी

नक्षत्र चरण	राशि	संक्षिप्त	स्वामी
चू चे चो ला ली लू ले लो अ	१ मेष	आ ला	मंगल
इ उ ए ओ बा बी बु बे बो	२ वृष	ओ बा	शुक्र
का की कु घ ङ छ के को ह	३ मिथुन	का छा	बुध
हि हू हे हो डा डि डु डे डो	४ कर्क	डा हा	चन्द्रमा
म मी मू मे मो टा टी टू टे	५ सिंह	मो टा	सिंह
टो प पी पू ष ण पे पो	६ कन्या	पा ठा	बुध
र री रू रे रो ता ति तू ते	७ तुला	रा ता	शुक्र
तो न नी नू ने नो या यी यू	८ वृश्चिक	नो या	मंगल
ये यो भ भी भू धा फा ढा भे	९ धन	भू धा	गुरु
भो ज जी खी खू खे खो ग गी	१० मकर	खा गा	शनि
गु गे गो सा सि सू से सो द	११ कुम्भ	गो सा	शनि
दी दू थ झ ञ दे दो च ची	१२ मीन	दा चा	गुरु

सवा दो नक्षत्रों का एक राशि चन्द्रमा होता है—जैसे अश्विनी, भरणी कृतिका के एक चरण तक मेष का चन्द्रमा होता है। जिसका अश्विनी नक्षत्र का जन्म होगा या भरणी का, या कृतिका के एक चरण तक का होगा उसकी मेष राशि होगी।

चन्द्रमा तथा राशि देखना

अश्विनीभरणी कृतिकापादे मेषः। कृतिकानां त्रयः

पादा रोहिणी मृगशिर अर्द्धं वृषः । मृगशिर अर्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुन । पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्ते कर्कः ॥ मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादे सिंहः उत्तराणां त्रयः पादा हस्तचित्रार्द्धं कन्या चित्रार्द्धं स्वातिः विशाखापादत्रयं तुला । विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः । मूलं च पूर्वाषाढा उत्तरापा देधनुः उत्तराणां त्रयः पादा श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः ॥ धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपद पादत्रयं कुम्भः । पूर्वाभाद्रपदापादमेकंभाद्रपद उत्तरारेवती मीनः ॥

टीका अश्विनी के ४ चरण, भरणी ४ चरण, कृतिका के १ चरण तक मेष का चन्द्रमा रहेगा। कृतिका ३, रोहिणी ४, मृगशिर के २ तक वृष का मृगशिर २ आर्द्रा ४ पुनर्वसु ३ तक का चन्द्रमा। पुनर्वसु १ पुष्य ४ श्लेषा ४ तक का चन्द्रमा। मघा ४ पूर्वा फाल्गुनी ४ उत्तारा फाल्गुनी के १ तक सिंह का चन्द्रमा। उत्तरा फाल्गुनी ३ हस्त ४ चित्रा २ तक कन्या का चन्द्रमा। चित्रा २ स्वाति ४ वि॰ ३ तक तुला का चन्द्रमा। विशाखा १ अनु॰ ४ ज्येष्ठा ४ तक वृश्चिक का चन्द्रमा। मूल ४ पूर्वाषाढ़ा ४ उत्तराषाढ़ा १ तक धन के चन्द्रमा। उत्तराषाढा ३ श्रवण ४ धनिष्ठा २ तक मकर के चन्द्रमा। धनिष्ठा २ शतभिषा ४ पूर्वाभाद्रपद ३ तक कुम्भ के चन्द्रमा। पूर्वाभाद्रपद १ उत्ताराभाद्रपद ४ रेवती ४ तक मीन का चन्द्रमा होता है।

जब किसी लड़के का जन्म हो उस वक्त लग्न देखना कि इस वक्त क्या लग्न है। पहिले यह देखे कि इस मास में सूर्य किस राशि का है। सूर्य हो उससे सातवीं राशि पर सूर्य छिप जाता है, जिस राशि पर सूर्य हो उसको संक्रांति कहते हैं। उस राशि का २९ अंश तक एक अंश रोज घटता है ३० अंश पर सूर्य दूसरी राशि पर होता है वही संक्राति है। एक महीना सूर्य एक राशि पर रहता है। १२ राशियों पर इसी प्रकार घूमता है। अब

लग्न देखना चाहिए कि वैशाख के महीने में किसी के बालक हुआ हो तो चैत्र में मेष की सक्रांति होगी उसी रोज से मेष का सूर्य होता है जिस वक्त सूर्य उदय होता है उस वक्त मेष लग्न रहता है और तीन घड़ी चौंतीस पल भोगता है यानि तीन घड़ी चौंतीस पल चढ़े तक रहता है फिर वृष लग्न आ जाता है। ऐसे ही दिन रात में १२ लग्न भोगते हैं। संक्रान्ति के जितने अंश बीतते जायेंगे। वह लग्न उतना ही रात में बीतता जाएगा। अब देखिए कि मेष की संक्रान्ति के दस दिन गए जब किसी के बालक हुआ तो संक्रान्ति के दस अंश गए तो वह मेष लग्न तिहाई रात में बीत जाता है क्योंकि दस तिया तीस। अब मेष लग्न ३ घड़ी ३४ पल का है। १ घड़ी १२ पल रात में बीता और २ घड़ी २२ पल दिन चढ़े तक रहा फिर वृष आ गया। जो १० घड़ी १५ पल दिन चढ़े तक रहा फिर वृष आ गया जो १० घड़ी १५ पल दिन चढ़े तक किसी के बालक हुआ तो १० घड़ी १५ पल का इष्ट होता है। २ घड़ी २२ पल मेष लग्नबाकी रहा और ३।३४ वृष और ४।७ मिथुन इनको जोड़ो तो १६।३ आया। अब देखो इष्ट १०।१५ का हो तो जानो मिथुन लग्न रहा। एक नियम और है इष्ट की घड़ी पल यानी जितना दिन चढ़ा हो या जितनी रात गई हो अर्थात् जितना इष्ट हो, यह देखे कि संक्रांति के जितने अंश शेष हैं। पंचांग में देखे जितने सूर्य की राशि के अंश गए हों उतने अंश के कोष्ठ में लगनसारणी में देखे उसी खाने को घड़ी पल इष्ट में जोड़ दे। जोड़ के। जहाँ अंक मिले वही लग्न जानना।

अथ लगन भोग देखना

मीने मेषे २१४ कृत भू नेत्रे वृषे कुम्भे २४७ मुनि वेदभुजा। मकरे मिथुने ३०९ शशिख वन्हिः कर्के धने शराकृतरामा ३४५ वृश्चिक सिंहे ३५१ रूप शराग्निः कन्यातुल ३४२ भुजवेदगुणः।

—अथ लग्न भोग चक्रम—

राशि	मेष	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	क०	तुला	वृ०	धन	म०	कु०	मीन
घड़ी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	
पल	३४	७	१	४५	५१	४२	४२	५१	४५	१	७	३४

अथ तिथि गन्डान्तम्

नन्दा तिथेश्च नामादौ पूर्णायाश्च तथान्तके ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्ड घटि द्वयम् ॥

टीका— नन्दा तिथि के आदि व पूर्णा के अन्त की एक घड़ी गन्डान्त है और अशुभ है।

अथ नक्षत्र गन्डान्तम्

ज्येष्ठा श्लेषा रेवतीनां नक्षत्रांते घटीद्वयम् ।
आदौ मूलमघाश्विन्या भगण्डे घटिकाद्वयम् ॥

टीका—ज्येष्ठा श्लेषा रेवती के अन्त की २ घड़ी और मूल मघा अश्विनी के आदि की दो घड़ी गण्डान्त, अशुभ है।

अथ लग्न गन्डान्तम्

मीन वृश्चिक कर्कान्ते घटिकार्द्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥

टीका—मीन वृश्चिक कर्क के अन्त की आधी घड़ी, मेष धन सिंह के आदि की आधी घड़ी में शुभ काम अशुभ हैं।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्न गण्डे च जातकः
न जीवति यदा जातो जीविते च धनी भवेत् ।

टीका—तिथि नक्षत्र लग्न के गण्डान्त में बालक का जन्म हो तो न जीवे, जीवे तो धनी हो । ६ नक्षत्र गण्ड हैं मूल ज्येष्ठा, श्लेषा, आर्द्रा रेवती मघा । ज्येष्ठा मूल श्लेषा० इन तीन का रिवाज है । अश्विनी रेवती मघा का नहीं है ।

ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्

ज्येष्ठादौ मातरं हन्ति द्वितीये पितरं तथा ।
तृतीये भ्रातरं चैव मातरं च चतुर्थके ॥
आत्मानं पंचमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।
सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठ भ्रातरमष्टमे ।
नवमे श्वशुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशांशके ॥

टीका—६० घड़ी के दश भाग करे फिर ६-६ घड़ी का फल कहें ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जो बालक का जन्म हो तो नानी को अशुभ । दूसरी ६ घड़ी में नाना को कष्ट । तीसरी ६ घड़ी में मामा को कष्ट । चौथी ६ घड़ी में माता को कष्ट । पांचवी ६ घड़ी में बालक को कष्ट । छटी ६ घड़ी में गोत्र वालों को कष्ट । सातवीं ६ घड़ी में नाना के परिवार को कष्ट और अपने कुटुम्ब को कष्ट । आठवीं ६ घड़ी में भ्राता को कष्ट और नवीं ६ घड़ी में ससुर को कष्ट । दसवीं ६ घड़ी में सब कुटुम्ब को कष्ट होता है ।

मूल नक्षत्र फलम्

मूलेष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः ।
स्तम्भेषु षष्ठं घटिकात्वचि चैकादश स्मृताः ॥

शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश।
पुष्पे पंच फले वेदाः शिखायां च त्रयः स्मृता॥
मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानि र्धनक्षयः।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां भ्रातृपीडनम्॥
परिवारक्षयः पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतेः।
फले राज्यं शिखायां स्यादल्पजीवी च बालकः॥

टीका—मूल वृक्ष वनाकर ८ घड़ी जड़ में, ६ स्तम्भ में, ११ त्वचा में ६ शाखा में, १४ पत्र में, ५ पुष्प में, ४ फल में, तीन शिखा में इस प्रकार ६० घड़ी धरिये, फिर उसका फल कहे। जो मूल की ८ घड़ी में बालक का जन्म हो तो नाश हो, स्तम्भ की ३ घड़ी में हो तो धन की हानि। त्वचा की ११ घड़ी में हो तो भाई का नाश, शाखा की ६ घड़ी में हो तो माता को पीड़ा करे। पत्तों की ११ घड़ी में परिवार का नाश, फलों की ४ घड़ी में जन्म हो तो राजा का मन्त्री हो अथवा वंश में या देश में श्रेष्ठ हो। शाखा की ३ घड़ी में जन्म हो तो अल्प आयु हो।

मूल वृक्ष फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	फूल	फल	शिखा
८	६	११	६	१४	५	४	३
मू० नाश	धन हीन	भ० नाश	मा० कष्ट	पर० क्षय	राजाम०	राजहो	अल्पायु

श्लेषा नक्षत्र फलम्

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांशयुगशच बाहू। हृज्जानु गुह्यपद मित्यदि देह भागः॥ बाणाद्रि नेत्रहुत भुक्श्रुतिनाग

रुद्रं षडनन्दपंचशिरसः क्रमशन्तु नाड्यः ॥१॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः राज्यं कामक्रियारतिः॥ पितृभक्तो बली स्वघ्नस्तत्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥

टीका—श्लेषा नक्षत्र के जिस भाग में बालक का जन्म हो उनका फल कहना। श्लेषा नक्षत्र की पहली ५ घड़ी में बालक का जन्म हो तो राज्य प्राप्ति। दूसरे भाग की ७ घड़ी में पिता का नाश। तीसरे भाग की २ घड़ी में माता पिता को कष्ट। चौथे भाग की ३ घड़ी में पर स्त्री रत। पांचवे भाग की ४ घड़ी में पिता का भक्त। छठे भाग की आठ घड़ी में बलवान। सातवें भाग की ११ घड़ी में आत्मघाती। आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी। नवें भाग की ६ घड़ी में भोगी। दशवें भाग की ५ घड़ी में धनवान इस प्रकार ६० घड़ी के पृथक २ भाग करके फल कहे।

मल, ज्येष्ठा, श्लेषा के अलग अलग विचार

जो इन तीन नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में बालक का जन्म हो तो इनका २४००० मन्त्रों का जप करावे या जितनी श्रद्धा हो और जब वह नक्षत्र २८ दिन में फिर आवे, जिसमन्त्र का जाप हो उस दिन का दसूठन करे और जितना मन्त्र जाप हो उसके दशांश का हवन करे। या १४ या २१ या २८ ब्राह्मण जिमावे, तब मूल आदि नक्षत्रों का दोष दूर होता है नहीं तो विघ्न होता है।

अथ मूल नक्षत्र मन्त्रः

ओ३म् मातेवपुत्रपृथिवी पुरीष्यमग्निं स्वेयो नावमारुषातां विश्वैर्देवैर्ऋतुभि संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुश्चतु ॥

लघु मूल मन्त्रः

ओ३म् एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व ॥ १ ॥

अश्लेषा मन्त्रः

ओ३म् नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा मन्त्रः

ओं स इषुहस्तैः सनिषंगिभिर्व्वशीस सृष्टा सयुधऽइन्द्रो
गणेन । सं सृष्ट जित्सोमपा बाहुः शद्ध्युग्र धन्वाप्रति
हिताभिरस्ता ॥ ३ ॥

अश्विनी मन्त्रः

ओं अश्विनीतेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् ।
वाचेन्द्रबलेन्द्रायदधुरिन्द्रियम्। ओंअश्विभ्यांनमः। ॥४ ॥

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में बालक का जन्म हो तो पिता को बाधा हो, दिन में जन्म हो तो पिता को कष्ट, रात्रि का जन्म हो माता को कष्ट, संध्या में हो तो आपे को कष्ट हो ।

मघा मन्त्रः

ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधाः नमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधानमः अक्षन्नपितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतपन्त :
पितरः शुन्धवम् ॥ ५ ॥

मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो मातृ पक्ष को कष्ट। द्वितीय में पिता को कष्ट। तृतीय चरण में सुख सम्पति, चतुर्थ चरण में धन प्राप्ति हो।

रेवती मन्त्रः

ओं पुषन् तव व्रते वयंतरिंष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ६ ॥ ओंपुष्णे नमः ।

रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में राजा हो, दूसरे चरण में मन्त्री, तृतीय चरण में सुख सम्पत्ति, चतुर्थ में आपे को कष्ट हो।

शुभ अशुभ ग्रहः

चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, शुभ, सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु पाप और क्रूर ग्रह हैं।

सूर्य से नवें स्थान से पिता, चन्द्रमा से चौथा माता, मंगल से तीसरा भाई, बुध से छठा रोग शत्रु, गुरु से पांचवां सन्तान, शुक्र से सातवां भार्या, शनि से आठवां मृत्यु का ज्ञान कर कहे।

जिस स्थान पर शुभ ग्रह हों शुभ फल, पाप और क्रूर ग्रह हों तो बुरा फल ग्रहानुसार कहे।

जिस स्थान का स्वामी अपने स्थान से दूसरे स्थान को देखता हो उस स्थान की वृद्धि, पाप ग्रह क्रूर ग्रह हानि करता है। जिस स्थान में शुभ ग्रह हो उसकी वृद्धि और अशुभ ग्रह हानि करता है।

छठवें स्थान में शुभ ग्रह अशुभ और पाप ग्रह शुभ फल देते हैं।

गुरु अपने स्थान की हानि, शनि अपने स्थान की वृद्धि करता है। गुरु की दृष्टि शुभ शनि की अशुभ होती है।

बारह स्थानों के नाम

तनुर्धनुं सुहृत् सुखं पुत्र शत्रुः कलत्रकाः ।
मरणं धर्म कर्माय-व्यायो द्वादस संशयाः ॥



तनु १ र्धनं २ सहोत्थाख्यँ ३
सुहृत ४ पुत्रा ५ र्श्री ६
योषितः ७ निधनं ८ धर्म ९
कर्म्मा १० आय ११ व्यय
१२ भावास्ततौः क्रमात् ॥

ग्रहों की दृष्टि

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमे वा ।
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥
शनेस्त्वेकादशे पूर्णा दृष्टिर्जीवस्य कोणके ।
बुधैर्ज्ञेया पूर्णदृष्टि—भौमस्य चतुरष्टके ॥

टीका—सब ग्रह अपने स्थान से तीसरे व दसवें घर में एक पाद दृष्टि से देखते हैं ९वें व पांचवें घर में दो पाद दृष्टि, चौथे व आठवें घर में तीन पाद दृष्टि और सब ग्रहों की सातवें घर में सम्पूर्ण दृष्टि होती है। शनि गुरु, भौम इनकी सम्पूर्ण दृष्टि में ये भेद हैं कि ये ग्रह शनि तीसरे व दसवें घर में भी, गुरु पाँचवें व नवें घर में भी, मंगल ४ व आठवें घर में भी सम्पूर्ण दृष्टि से देखता है।

ग्रहों की अवधि

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रः सपाददिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्द्ध—वर्षद्वयं शनिः ॥
राहुः केतुः सदाभुक्ते सार्द्धमेकन्तु वत्सरम् ।

टीका—सूर्य, शुक्र, बुध एक एक महीना एक एक राशि पर भोग करते हैं यानी रहते हैं चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है। मंगल डेढ़

महीने, बृहस्पति १ वर्ष, शनिश्चर २॥ वर्ष, राहु केतु डेढ़ डेढ़ वर्ष भो करते हैं।

ग्रहों की जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदौ तथाऽसुरौ ।

टीका—शुक्र बृहस्पति की ब्राह्मण जाति है। मंगल सूर्य की क्षत्री बुध चन्द्रमा की वैश्य, शनिश्चर, राहु केतु इनकी दैत्य जाति है।

ग्रहों के रंग

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।
हरितः बुधो गुरुः पीत शनिः कृष्णस्तथैव च ।
राहु केतुस्तथा धूम्रं कारयेच्च विचक्षणः ॥

टीका—मंगल सूर्य इनका लाल रंग, चन्द्रमा शुक्र का सफेद रंग बृहस्पति का पीला, बुध का हरा, शनि का काला, राहु, केतु का धुएं जैसा। ग्रहों के स्थान—सूर्य शरीर, चंद्रमा मन, मंगल सत्व, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान व सुख, शुक्र वीर्य अर्थात कामदेव, शनि दुःख। ग्रहों के बल-बलवान ग्रह पुष्ट और निर्बल ग्रह बलहीन होते हैं।

टीका—सूर्य राजा, चन्द्रमा मन्त्री, मंगल सेनापति, बुध गुरु शुक्र मन्त्री, शनि दूत। जो ग्रह फल देने वाला है वह ऐसे ही अधिकारी के द्वारा फल देता है।

राशियों के भाव संज्ञा

मेष वृष धनसिंहाश्चतुष्पादस्युः मकरपूर्वभाश्च ।
कीट कर्कटराशिः वृश्चिकः कथितः मकरस्य पश्चि ॥

१ शीर्ष २ मुख ३ बाहु ४ हृदय ५ उदर ६ कटि ७ नाभि ८ लिंग ९ गुदा १० जंघा ११ जानु १२ चरणानि।

एक चर दूसरी स्थिर तीसरी द्विस्वभाव इसी प्रकार बारह राशियों को गिने इनकी यही तीन संज्ञा हैं।

स्वामी देखना

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।
बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो धनुर्मीनकयोर्गुरु।
अधिपः कथितो विज्ञै शनि मकर कुम्भयो॥

स्वामी	भौम स्वामी	शुक्र स्वामी	बुध स्वामी	गुरु स्वामी	श० स्वामी	चन्द्र स्वामी	सूर्य स्वामी
राशि	१	२	६	९	१०	४	५
राशि	८	७	३	१२	११	०	०

ग्रह उच्च नीच देखना

रविर्मेषे तुले नीचो वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके।
भौमश्चनक्रे कर्के च स्त्रियां सौम्यों झषे तथा॥
गुरुः कर्के च मकरे च मीने कन्ये सितस्य च।
मन्दुस्तुलायां मेषे च कन्या राहुर्गृहस्य च॥
राहुर्युग्मे च चापे च तमोवत् केतुजं फलम्।
प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद् बुधैः॥

ग्रह	सू०	च०	मं	बु०	गु०	शु०	श०	राहु	के०
उच्च	१	२	१०	६	४	१२	७	३	९
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	९	३

टीका—जिस राशि का जो ग्रह उच्च होता है उससे वही ग्रह छटी राशि नीच का होता है।

ग्रहों के दान

सूर्याय धेनुन्ताम्रं च गोधूमं रक्तचंदनम् ।
चन्द्रं शंख चन्दनं च सितवस्त्रं च तण्डुलम् ॥
कुज वस्त्र प्रदातव्या रक्तवस्त्रं गुडौदनम् ।
बुधे कर्पूरमुग्धे च हरितवस्त्र हरित्मणिम् ॥
पीतवस्त्र द्वयं जीवो हरिद्रा चणिकं मणिम् ।
अश्वं शुक्रः सितं देयाच्छुक्ल धान्यानि यानि च ॥
शनौ तैलतिले देयात्कृष्ण गोदानमुत्तमम् ।
राहुश्च महीषी छागा माषाश्च तिलसर्षपौ ॥
अजामेषश्च दातव्यौ केतश्चान्नं च मिश्रितम् ।
स्वर्ण–विप्र पूजाभिः सर्वेषु शाश्तिरुत्तमा ॥

ग्रह दान वस्तु चक्रम्

सूर्य	गुड़, लाल गेहूं, लाल कपड़ा, सोना, तांबा, लाल चन्दन, लाल फूल घृत, केशर, मूंगा, लाल गौ, माणिक यानि मणि कुसुम ।
चन्द्र	सफेद चावल, कपूर, चांदी, घृत, चन्दन श्वेत, श्वेत वस्त्र, दही, श्वेत फूल, बूरा, मोती, शंख, मिश्री, सफेद बैल ।
मंगल	मूंगा, गेहू लाल, तांबा, गुड़, लाल कनेर का फूल. घृत, लाल कपड़ा लाल चन्दन, मसूर, लाल, बैल, सोना केशर कस्तूरी ।
बुध	मूंग, कांसी का पात्र, सोना, घृत हाथी दांत, हरा वस्त्र, हरी मणि, हरा फूल, हरे फल, मिश्री पन्ना, खांड, कपूर, वस्त्र ।
गुरु	हल्दी, पुस्तक, पीला कपड़ा, घृत, पीले फूल, पुखराज, चने की दाल सोना, घोड़ा, शक्कर, कांसी, पीला फल, केशर ।

शुक्र	सफेद कपड़ा, चावल, गाय, सोना, चांदी, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन शंख, घृत, बूरा, हीरा, दही, मिश्री, सफेद फूल ।
शनि	उड़द, तिल, तेल, कपड़ा, भैंस, लोहा, काले जूते, काली गौ, काला कम्बल, काला फूल, नीलम, सोना, कस्तूरी ।
राहु	काली गौ, तिल, तेल, काला कपड़ा, लोहा, घोड़ा, सरसों, बकरी, सतनजा, नील, काला कम्बल, काला फूल, सोना, शीशा ।
केतु	काले तिल, तेल, सोना, कस्तूरी, मैंढा, छुरी, सतनजा, काला कम्बल लोहा, काले फूल, राहु केतु का दान, बुध या शनिवार को करे ।

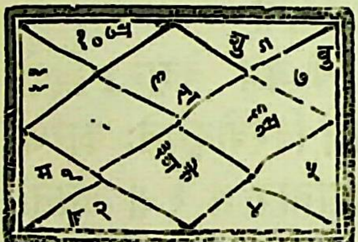
टीका—साधु, ब्राह्मणों और भूखों को भोजन कराने से, पीपल की पूजा करने से, वेद पाठी ब्राह्मण को प्रणाम करने से गुरुजनों की आज्ञा का पालन करने से, कथा के पढ़ने सुनने से, हवन, दान, जप करने से सब ग्रह प्रसन्न होते हैं ।

अथ जन्मपत्री लिखना

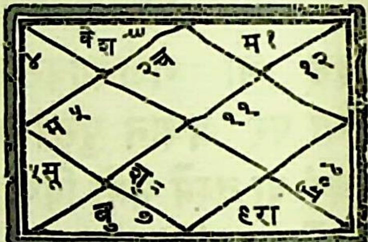
ओ३म् श्री गणेशायनमः ॥ यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषंतथान्ये । विश्वोद्गतेः कारण मीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥ १ ॥ जननी जन्मसौख्यानां वर्द्धनी कुल संपदाम् पदवी पूर्वपुन्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका । अथ शुभ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपति विक्रमादित्य राज्ये संवत् २०३० शाके शालिवाहनस्य १८९५ उत्तरायणे वा दक्षिणायने शरद ऋतौ मासानां मासोत्तमे मासे कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ ४ चतुर्थी सौमवासरे घट्यः ५१ पलानि २२ कार्तिकानाम नक्षत्रे २४/२२ सिद्ध योगे ८/२३ ३५/१० बालकनामकरणे १५/२३ तत्र दिनमानं २८/४० रात्री-प्रमाणं ३१/२० कन्यार्कगतांशाः २८ शेषांशाः २तत्रेष्टम्

१३/४२/३० तत्समये धनलग्नोदये विप्रवंशे वशिष्ठ गोत्रे पण्डित बुद्धसेन शर्मात्पुत्रः पण्डित पन्नीलाल शर्मा तत्पुत्र पण्डित विजयकुमार शर्मा तस्य गहे पुत्रो जातः कृतिका चतुर्थ चरणे जन्मवंशोत्तस्थ जन्मनाम एजमचन्द शर्मा सर्वेश्वर कृपया दीर्घायुष्युमानभवतु। तस्यराशीः वृष, वर्णवैश्य वश्य चतुष्पद। योनिः छाग। राशीश शुक्रगण राक्षस नाड़ी अन्त्य, वर्ग सप्त, एते गुणा विवाहादौव्यवहारादौ च विचारणीया। शुभं भूयात॥

अथ जन्म कुण्डली



अथ चन्द्र कुण्डली



लग्न परीक्षा और ग्रह फल

शब्द मेषे वृषे सिंहे, मकरेच तथा तुले।
अर्द्ध शब्दो घटे कन्य शेषे शब्द विवर्जयेत्॥

टीका—मेष, वृष, सिंह, मकर, तुला इन लग्नों में बालक जन्म हो तो होते ही रोवे, कुम्भ, कन्या में रोकर चुप हो जावे अर्थात् थोड़ा रोवे और लग्नों में बालक रोवे नहीं।

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धा प्रशवोऽन्यथोदये चरणौ।
उभयोदये च हस्तो शुभदृष्टः शोभनोऽन्यथा कष्टः॥

५/६/७/८/३/११ इन लग्नों में जन्म हो तो शिर से पैदा हुआ, मीन लग्न में हाथों के बल पहले दोनों हाथ आयें और १/२/४/६/१० इन लग्नों में पैरों की तरफ से जन्म कहें। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो बिना कष्ट पाप ग्रह की दृष्टि से हो तो कष्ट से हुआ।

मीने मेषे च द्वे भार्ये षतुस्त्रो वृषकुम्भयोः।
तुलायां च सप्तकयान्यां बाणाश्च धनकर्कयो॥
अन्य लग्ने तथा तिस्त्रः सूतिकायां विधीयते।

टीका—मीन, मेष लग्न में दो स्त्री। वृष, कुम्भ में ४ स्त्री। तुला कन्या लग्न में ७ स्त्री कहें। धन, कर्क में ५ स्त्री कहें। और अन्य लग्नों में प्रसूत ग्रह में ३ स्त्री कहें।

शशि-लग्ने समाधात्री ज्येगृहेशे दिगम्बरम्।
तिस्त्रो वै मन्दिरे नार्यः बालकस्य युववृद्धः॥

टीका—लग्न में जहां चन्द्रमा पड़े उस बीच में जितने पाप ग्रह हों उतनी ही स्त्री कहें। बाल युवा, वृद्ध ग्रहों के अनुसार कहें।

पापे च विधवा नारी क्रूर ग्रहे कुमारिका।
सौम्यग्रहे चसौभाग्या सूतिकायां विधीयते॥

टीका—लग्न और चन्द्रमा के बीच में जितने पाप ग्रह हों उतनी विधवा, जितने क्रूर हों उतनी कुमारी जितने शुभ ग्रह हों उतनी सुहागिन कहें।

यत्र राहुस्तत्र शय्या मंगलतत्र भंगदः।
रविस्थाने दीपकश्च शनौ लोहश्च जायते॥

टीका—जहां राहु हो वहां खाट कहें, जहां मंगल हो खाट पुरानी या पाया फटा हुआ, जहां सूर्य हो दीपक का स्थान कहें, जहां शनिश्चर हो वहां लोहा कहें।

उदयस्थेऽपि वा मंदे कुजे वास्तं समागते।
स्थिते वातः चया नाथे शशाँकसुत शुक्रयोः।

टीका—जो शनि लग्न में हो या ७वे मंगल में हो या चन्द्रमा ३/६/२/७ इन राशियों का होवे तो घर नहीं था, ऐसा कहें।

राशियों के स्थान

१ मेष सिर, २ वृष मुख, ३ स्तन, ४ हृदय, ५ उदर, ६ कण्ठ, ७ नाभि ८ लिंग, ९ गुदा, १० जंघा, ११ घुटना, १२ पैर। इनमें से जन्म समय जिस राशि में पाप ग्रह हो उसी स्थान पर तिल या लहसुन का निशान कहें।

सिंह कन्या धने मीने कर्कचे च तथा तुले।
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमौ न जायते।

टीका– सिंह, कन्या, धन, मीन, कर्क, तुला, लग्नों में बालक का जन्म शैय्या या हाथों पर अन्य लग्नों में पृथ्वी पर कहें।

दशमे बुधजीवौ च चन्द्र स्थाने यदा भवेत्।
सूर्यश्च तथा भोमश्च बालस्य षडंगलिः॥
सव्यपहस्तः तथा चैव दक्षिण करमेव च।
वाम हस्ते भवेद्राज्यँ सजातः कुलदीपकः॥

टीका—दसवें स्थान बुध या गुरु हो या केन्द्र १/४/७/१० में हो या सूर्य मंगल में हो तो बालक के ६ उंगलो कहं बाँये या दायें पैर में, बांये हाथ में ६ उंगली अच्छी होती हैं।

तनुस्थथाने यदा चन्द्रोऽथवा षष्ठे तथा भवेत्।
बालकस्य भवेज्जन्म तैलं दीपे न दृष्यते॥
दशमे शुक्रसौरी च पंचमे चैव चन्द्रमाः।
तस्मिन् बाले च जाते वै दीपकं परिपूर्णकम्॥
खन्ड दीपं तथा बुधे अष्टमे च वृहस्पतौ॥

टीका—तनु स्थान में छटे स्थान में चन्द्रमा हो तो दीपक में तेल नहीं था। शुक्र शनि दसवें स्थान हों और चन्द्रमा पांचवे हो तो दीपक में तेल भरा हुआ कहें बुध हो तो आधा दीपक तेल भरा हुआ कहें।

अष्टम बृहस्पति हो तो तेल भरा नहीं ऐसा कहें। जो लग्न के आरम्भ में जन्म हो तो बत्ती पूरी थी और जो मध्य में हो तो आधी और अन्त में नहीं रही थी ऐसा कहें।

चरलग्ने करे दीप्तं स्थिरे तत्रैव संस्थितम्।
द्विस्वभावे तथा लग्ने दीपं हस्ते प्रचालयेत् ॥

टीका - जो सूर्य चर राशि में हो या चरलग्न हो तो दीपक हाथ में उठाया कहें स्थिर लग्न में वहीं धरा कहें, द्विस्वभाव में उठाकर वहां धर दिया या बत्ती डाली हो ऐसा कहें।

लग्नेन्दुमध्येशनिर्मिष्ठतैलं सूर्योभवेत्तस्यघृतस्दीप्तं।
शेषे ग्रहे कटुतैलदीपं मेवप्रसूतौ खलु दीपमाहुः ॥

टीका—लग्न में चन्द्रमा या शनि हो तो दीपक में मीठा तेल, सूर्य हो तो घी, कोई अन्य ग्रह हो तो कड़वे तेल का कहें।

द्वादशे भवने भौमे वामनेत्रं विनश्यति
द्वादशे रवि राहुश्च दक्षिण चक्षु नाशयेत् ॥

टीका—१२वे स्थान में मंगल हो तो बांया नेत्र बिगड़ा कहें और १० वें सूर्य राहु हो तो दाहिनी आंख का नाश कहें।

शुक्रश्च तृतीते स्थाने सिंह मेषे बृहस्पतौ।
दशमे अर्कभौमो च मूकौ भवति बालकः।

टीका—तीसरे शुक्र हो, मेष का या सिंह का गुरु हो, और दसवें सूर्य हो या मंगल हो तो बालक गूंगा हो ऐसा कहें।

तुलसी कुम्भो अकुलीर लग्ने वाच्यं प्रसूता गृह पूर्व द्वारे। कन्याधनुर्मीननृयुग्नलग्ने स्यादुत्तरा पश्चिमतो वृषे च। मेषे च सिंहे मकरे च याम्ये निगद्यते सौमुनि द्वारवेशः

टीका—तुला, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इन सब लग्नों में बालक का जन्म हो तो जच्चा के घर का दरवाजा पूर्व को बतावें। और ६/६/१२/३ इनमें उत्तर को, २ में पश्चिम को १/५/१० में दक्षिण को द्वार कहें।

रिपु स्थाने यदा चन्द्रः षड्आत्रं नैव लंघते।
अथवा षष्ठमासं च जातकाय विचारयेत्॥

टीका—जिसके छठे स्थान में पाप ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो ६ दिन तक कष्ट रहे, या ६ मास तक जीवे।

लग्न स्थाने यदा सौरि रिपु स्थाने चन्द्रमाः।
कुजश्च दशमे स्थाने मृतको जायते पिता॥

टीका—लग्न में शनि ६वे चन्द्रमा १०वे मंगल हो तो उसके पिता की मृत्यु हो या पिता को कष्ट हो।

रवि शनि मंगलवारः यात् कृतिका भरणीयुता।
श्लेषा छट आठें चौदस्याँ सो उपजे कन्या धीया।
आपमरे या माय सतावे कुलच्छाय करे कलंक लगावे।

टीका—रवि, शनि, मंगलवार और कृतिका, भरणी श्लेषा ये नक्षत्र ६/८/१४ ये तिथि कन्या का जन्म हो तो कन्या मरे, या माँ मरे या कुलक्षत हो या कलंक लग जावे।

आदित्ये नवमें तातो माता चन्द्र चतुर्थके।
भौमेश्चतृतीये भ्राता स्यात् बुधातृतीये च मातुलः॥

टीका—सूर्य के नवें स्थान में पिता को, चन्द्रमा से चौथे स्थान माता को मंगल से तीसरे स्थान भाई को, बुध से तीसरे स्थान मामा को देखे। यदि अच्छा ग्रह हो तो अच्छा फल क्रूर नीच हो तो बुरा फल कहें।

चौथ चतुर्दशी नवमी जानो रवि गुरु मंगल पहचानो।
जो तीनों में उत्तरा लहै निश्चय बीज पराया कहै।

टीका—४/१४/९ ये तिथि सूर्य, गुरु, भौम वार हो और उत्तरा नक्षत्र में बालक हो तो और का बिन्द कहें।

चतुष्पदगते भानौ शेषैर्वीर्यमन्वितेः।
द्वितनुस्थैः चद्वयुमलौभवः कोश वेष्टता॥

टीका—सूर्य चतुष्पद राशि १/२/६ परार्ध मकर पूर्वार्ध में होवे और सब ग्रह द्विस्वभाव में बलवान होय तो दो बालक का जन्म कहें।

षष्ठाष्टमे च मूर्तौ च राहुश्चैव भवेद्यदि।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्यु रक्षाति यदि शंकरः।

टीका—६/८/१ भाव में राहु हो तो चौथे वर्ष में जातक मृत्यु शंकर भी रक्षा करे तो भी न जीवे।

चतुर्थे च गतो राहुः अथवा दसमे भवेत्।
तस्य बालकस्य जन्मेषु दशमेमासि न जीविति॥

टीका—चौथे तथा दसवें भाग में राहु हो तो दशवें महीने में कष्ट कहे

मीने च लग्ने गुरुभार्गवौ च मेषे च सूर्यो।
मकरे कुजः स्यात् महीपतिः छत्रधरोति बालः॥
मान्यो भवेद्वापि धनाढ्यतां गतेः॥

टीका—जो मीन लग्न हो उसमें गुरु शुक्र हो और मेष राशि का सूर्य हो मकर का मंगल हो तो जातक नृप हो या राजा का मन्त्री हो या धनाढ्य हो।

लग्ने शुक्रो बुधो, यस्य केन्द्रें बृहस्पति।
दशमे अँकारको यस्य स जातः कुलदीपकः॥

टीका—लग्न में शुक्र बुध न हो और केन्द्र १/४/७/१० में और गुरु और मंगल हो तो वो बालक कुल में दीपक हो।

लग्ने शुक्रो बुधोनास्तिनास्ति केन्द्रें बृहस्पति।
दशमे अंकारको नास्ति स जातः किं करिष्यति॥

टीका—लग्न में शुक्र बुध न हो और केन्द्र में गुरु भी न हो और १०वें मंगल भी न हो तो वह दूसरों पर आश्रित रहे।

चतुर्थ कर्मणि सोमः सुखेन प्रसवो भवेत्।
त्रिकोणेऽस्तं गतोः पापाः कष्टतः प्रसवो भवेत्॥

टीका—लग्न से ४ वां १० स्थान में चन्द्रमा हो तो माता को कष्ट ना हो और जो ६/५/७ पाप ग्रह हो तो माता को कष्ट हो।

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि।
षष्ठेऽष्टमे भवेत् चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत्॥

टीका—कृष्णपक्ष में दिन में, शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो और ६वें औत आठवें में चन्द्रमा हो तो सब अरिष्ट दूर हों।

अर्कसुतः कुजो राहुः पंचमस्थो प्रसूतिर्वा।
लशुनं वामकुक्षौ च गर्गाचार्येण भाषितम्॥

टीका—शनि राहु मंगल ये ग्रह पांचवे स्थान हो तो बांई कोख में लहसुन कहें। यह गर्गाचार्य का मत है।

सिंह लग्ने यदा जाता यामित्रे च शनैश्चरः।
ब्रह्मपुत्रोपि सञ्जातो म्लेच्छो भवति बालकः॥

टीका—सिंह लग्न में बालक का जन्म हो, सातवे स्थान शनि हो तो ब्राह्मण के घर पैदा हुआ भी म्लेच्छ होता है।

लग्नस्थाने यदा शौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति॥

टीका—लग्न में शनि, ६वे चन्द्रमा, ७ वे मंगल हो तो पिता न जीवे।

दशमस्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो यदि।
मृतये तस्य बालकस्य पिता शीघ्रं न जीवति॥

टीका—१०वे स्थान में मंगल हो और शत्रु की राशि में हो तो उस बालक का पिता शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

त्रिभिरुच्चैर्भवेद्राजा त्रिभिः स्वस्थानि मन्त्रिणां।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्भवेत्शठः॥

टीका—जिसके तीन ग्रह उच्च के हों वह राजा होता है और जो तीन ग्रह अपने स्थान के हों तो मन्त्री नीच के हों तो दास हो और जो ग्रह अस्त में पड़े हों तो मूर्ख होता है।

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युः यदि रक्षति शंकरः ॥

टीका—जो जन्म लग्न में मंगल हो और ८वे में बृहस्पति हो तो १२ वर्ष में मृत्यु हो। शंकर भी रक्षा करे तो भी न जीवे।

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥

टीका—चौथे स्थान में राहु हो ६/८ वें चन्द्रमा हो तो बालक की तत्काल मृत्यु हो। शिव भी रक्षा करे तो भी न जीवे।

लग्ने क्रूरश्च भवने क्रूरः पातालगो यदा ।
दशमे भवनं क्रूरः कष्टेजीवित जीवति बालकः ॥

टीका—क्रूर ग्रह को लग्न और क्रूर ग्रह चौथे स्थान हो तो भी बालक कष्ट से जीवे।

दशमे भवने राहुर्मातापित्रोः प्रपीडनम् ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युः बलिकस्य न संशयः ॥

टीका—दसवें स्थान में राहू हो तो माता पिता को कष्ट और १२वें वर्ष मृत्यु तुल्त अरिष्ट हो।

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥

टीका—शनि के क्षेत्र में सूर्य और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो १२ वर्ष में अरिष्ट हो। (क्षेत्र, स्थान, घर भी कहते हैं)।

मूर्तौ शुक्रबुधो यस्य केन्द्र चैव बृहस्पतिः ।
दशमेऽअंगारकश्चैव सं ज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका—जिसके जन्म लग्न में बुध शुक्र हो, केन्द्र में गुरु हो, १० वें स्थान में मंगल हो तो वह बालक कुल में दीपक हो।

पञ्चमे च निशानाथो त्रिकोणे यदि वाक्पति ।
दशमे च महीसुतः परमायुः स जीवति ॥

टीका—लग्न से ५ वे स्थान चन्द्रमा हो, त्रिकोण में बृहस्पति हो ५/६/१० में मंगल हो तो परमायु हों।

धनस्थाने यदा शौरिः सिंहकेयो धरात्मजा।
शुक्रो गुरु सप्तमे वा अष्टमे रवि चन्द्रमाः॥
ब्रह्म पुत्रो भवेद्वापि वेश्यासु च सदा रतिः।
प्राप्तो विंशत्तिमेवर्षेम्लेच्छो भवति नान्यथा॥

टीका—दूसरे स्थान में शनि राहु मंगल हो और सातवे स्थान शुक्र गुरु हो और आठवें स्थान में रवि चन्द्र हो तो ब्राह्मण का पुत्र भी हो तो भी वेश्यागामी होता है। २० वर्ष की उम्र में म्लेच्छ हो जाता है।

अज सिंह कुजे शौरिर्लग्ने तिष्ठति पंचवे।
पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं हि शिशोः क्रमात्॥

टीका—रवि राहु मंगल शनि ये १/५ स्थान में पड़े तो कष्ट देते हैं। शनि रवि हो तो पिता को कष्ट, राहु माता को, मंगल भ्राता को, शनि जातक को कष्ट देता है।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः।
वर्षष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरो यदि रक्षति॥

टीका—मंगल के क्षेत्र में बृहस्पति हो, ६/८ चन्द्रमा हो तो ८ वर्ष में बालक को कष्ट हो जो ईश्वर ही रक्षा करे तो ही बच सके।

दशमेपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत्।
वर्ष तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च॥

टीका—१०वे राहु अथवा लग्न में राहु हो तो १६वे वर्ष में मृत्यु या मृत्यु समकष्ट होता है।

षष्ठे च भवने भौमः राहुश्च सप्तमे भवेत्।
अष्टमे च यदा शौरिः तस्या भार्या न जीवति॥

टीका—छटवे स्थान मंगल हो सातवे राहु हो आठवे स्थान शनि हो तो स्त्री को कष्ट हो।

कन्या की जन्म पत्री में पाप ग्रह, क्रूर, नीच सातवे स्थान में हो ती ये वैधव्य योग करते हैं इनका देखना बहुत ही आवश्यक है।

स्त्री कुण्डली फलम्

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत्।
कर्कराशिस्थिते भौमे शौरो भ्रमति वेश्मसु ॥

टीका - सातवे में जिस स्त्री के शुक्र हो वह कुल को दोष लगावे, कर्क राशि में मंगल या शनि हो तो वन्ध्या हो या घर घर फिरे।

बाल्ये च विधवा भौमे परित्याज्या दिवाकरे।
तस्मै शौरिः पापदृष्टे कन्यैव समुपैष्यति ॥

टीका - जिस स्त्री के ७ वे स्थान पर भौम हो उसको बाल विधवा योग कहें, सूर्य हो तो पति त्याग करे, शनि या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो कन्या का विवाह बड़ी उमर में हो।

एक एव सुरराजपुरो वा केन्द्रागोपि नव पंचमगोवा।
शुभ ग्रहस्य विलोकयुतोवाशेषखेचरबलेन न किंवा ॥

टीका - जिस स्त्री के केन्द्र में १/४/७।१० हो या ६।५ हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि हो तो फिर खोटे ग्रह कुछ नहीं कर सकते।

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च राहुर्विनष्ट-तनयां रविजो दरिद्राम्। शुक्रः शशांकतनयश्च गुरुश्च साधवीमायुः दायंप्रकुस्तेऽत्र च सर्व राशः ॥

टीका - जिस स्त्री के लग्न में सूर्य और मंगल हो वह विधवा राहु केतु सन्तान का नाश, शनि हो तो दरिद्रा, शुक्र, बुध बृहस्पति होय तो साध्वी हो, चन्द्रमा हो तो आयु कम करे।

कुर्वन्ति भास्करशनश्चर राहुभौमाः दारिद्रयदुःख-मतुलं सततं द्वितीये। वित्तेश्वरीमविधवां गुरु शुक्रसौम्यः नारीं प्रभूतातनयाँ कुरुते शशांकः ॥

टीका—सूर्य, शनि, राहु, केतु और मंगल यह ग्रह दूसरे स्थान में स्थिति हों तो वह स्त्री अत्यन्त दरिद्रा और दुःखिता होती है। बृहस्पति, शुक्र या बुध स्थित हो तो वह स्त्री सौभाग्यवती और अधिक धनवती होती है। और चन्द्रमा बहुत पुत्र देता है।

शुक्रेन्दुभौमगुसूर्य बुधास्तृतीये कुर्युः सतीं बहु सुतां धनभोगिनीं च। कन्यां करोति रविजो बहु वित्तयुक्ताम् पुष्टिं करोति नियतं खलुसैंहिकोयः।

टीका—जिस स्त्री के तीसरे स्थान में शुक्र, चन्द्रमा, मंगल बृहस्पति सूर्य बुध में से कोई ग्रह हो तो वह स्त्री पतिव्रता अनेक पुत्रवती और धनवान होती है, शनि हो तो उसके विशेष धन उसी स्थान में राहु केतु भी हो तो उसके शरीर को पुष्ठ करते हैं।

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशील-रहितां कुरुते शशांकः राहुःसपत्नि सहित क्षिति-वितलाभम् दद्यातुद्बुधः सुरगुरुभृगुजश्च सौख्यम्।

टीका—चतुर्थ स्थान में मंगल या सूर्य हो तो उस स्त्री के दुग्ध स्वल्प चन्द्रमा से सौभाग्य और सुशीलता का नाश राहु केतु हो तो कन्या अधिक भूमि तथा धन लाभ का, बुध बृहस्पति और शुक्र हो तो उसे अनेक प्रकार की सुख की प्राप्ति होती है।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ, चन्द्रात्मज बहुसुतां गुरुभार्गवौ च राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशांकः॥

टीका पंचम स्थान में सूर्य या मंगल हो तो सन्तान का कष्ट करता है, बुध बृहस्पतिवार शुक्र हो तो पुत्रवती होती है, राहु केतु से मरण शनि प्रवल रोग और चन्द्रमा से कन्या अधिक होती है।

षष्ठे शनश्चरकुजा रवि राहुजीवाः नारी करोति शुभगां पतिसेवनीं च। चन्द्र करोति विधवामुशना दारिद्रां वेश्यां शशांकतनयः कलहप्रियां वा॥

टीका—जिस स्त्री के छठे स्थान में शनि, सूर्य, राहु, केतु, बृहस्पति अथवा मंगल इनमें से कोई ग्रह बैठा हो वह स्त्री सुभगा और पति की सेवा करने वाली, छटे स्थान में चन्द्रमा हो तो विधवा और शुक्र हो तो दरिद्रा, बुध हो तो वेश्या अथवा नित्य कलह प्रिय होती है ।

सूर्यऽऽरशारिशशिसौम्यगुरुश्च शुक्रः नारी करोति सततं निज जन्मलग्नात् । ईशैर्विहीनविधवां च जरासमेतां सौन्दर्यभर्तृ सुखभोगयुतां क्रमेण ।

टीका—सूर्य सप्तम हो तो वह पति को त्याग दे, मंगल सप्तम हो तो विधवा हो, शनि हो तो बहुत उम्र का विवाह हो, चन्द्रमा हो तो सुन्दर हो, बुध हो तो सौभाग्यवती, बृहस्पति हो तो सर्व सुखी, शुक्र हो तो भोगी भाग्यवती हो ।

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोग मृत्युं शशांक भृगवश्व तथैवराहुः । सूर्यः करोति निधनां सुभगां महीजः सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥

टीका—जिस स्त्री के सूर्य अष्टम स्थान में बृहस्पति, अथवा बुध बैठे हों उसको पति से वियोग चन्द्रमा, शुक्र तथा राहु केतु स्थित हों तो उसका मरण सूर्य से विधवा मंगल सदाचरण करने वाली बनाता है शनिश्चर उस स्थान में हो तो उसके पुत्र बहुत हों अपने पति को प्रिय होती है ।

चन्द्रात्मजौ भृगुदिवाकरसौम्यधिषणाः धर्मस्थिता विद्यते किल धर्मनिष्ठाम् । भौमोरूज सूर्यसुतश्च रण्डा नारी प्रसूततनयां कुरूते शशांकः ।

टीका—बुध, शुक्र सूर्य और बृहस्पति नवमें स्थान में हों तो उस स्त्री की बुद्धि को धर्म में, मंगल से रोग, शनि से विधवा, चन्द्रमा संतानदाता है ।

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात् पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च । मृत्युँ कुजोऽर्थरहिताँ कुलटां च चन्द्रःशेषग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः ॥

टीका—दशम स्थान में जिस स्त्री के राहु स्थित हो वह विधवा, सूर्य और शनि पाप में प्रीति, मंगल धन का नाश और मृत्यु चन्द्रमा से कुलटा, पर पुरुष से प्रीति, अन्य ग्रह धनवती और सुभगा होती है।

आयुः स्थितश्च तपनः कुरूते सुपुत्रां पुत्रवतीं च महिजोऽर्थवतीं हि चन्द्रः। आयुष्मतीं सुरगुरूश्च तथैव सौम्यो राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्॥

टीका—ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह सुपुत्रवती, मंगल पड़ा हो तो पुत्र की सदैव अभिलाषा बनी रहे। चन्द्रमा से धनवती, बृहस्पति से आयु की वृद्धि और बुद्ध राहु केतु से विधवा हो शुक्र अनेक प्रकार से धन का लाभ कराता है।

अन्तेगुरुर्हि विधवां दिनकृद्दरिद्रां चन्द्रोधनव्ययकरीं कुलटां च राहुः। साध्वी भवेत् भृगबुधौ बहुपुत्र पौत्राम् प्राणप्रसक्त हृदयां सुहृदां कुजश्च॥

टीका—बारहवें स्थान में बृहस्पति हो तो विधवा, सूर्य दरिद्रा (धनहीन) चन्द्रमा धन व्यय राहु केतु कुलटा (व्यभिचारिणी) यदि शुक्र अथवा बुद्ध हो तो वह स्त्री पतिव्रता होती है और मंगल अनेक पुत्र पौत्र युक्त सुहृदयी बनाता है।

छटी दसूटन बतलाना

टोका—६ दिन की छटी और दस दिन का या ग्यारह दिन का दसूटन शुभ वार का हो और जन्म पत्र में जहां चन्द्रमा पड़े वहीं जातक राशि समझनी चाहिए।

वर्ग

अवर्गो गरुडो ज्ञेयो बिडालः स्यात्कवर्गकः।
चवर्गः सिंहनामास्याद्टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः॥
सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोपि यबर्गो शूषकः स्मृतः।
यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः॥

गरुड़ वर्ग	बिलाववर्ग	सिंह वर्ग	कुत्ता वर्ग	सर्प वर्ग	मूषक वर्ग	मृग वर्ग	मेंढ़ा वर्ग
अ	क	च	ट	त	प	य	श
आ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
इ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
उ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ए	ङ	ञ	ण	न	म	□	□

वर्ग वैर

वैरं मूषकमार्जारं तद् वैरं मृगसिंहयोः ।
वैरं गरुड़सर्पश्च यद् वैरं स्वानमेषयोः ॥

टीका—मूषे और बिलाव का । मृग और सिंह का । गरुड़ और सर्प का, कुत्ते और मेंढ़े का बैर होता है ।

वर्ग फल

स्ववर्गात् पंचमे शत्रुः श्चतुर्थ मित्रसंज्ञकः ।
उदाशीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥

टीका—अपने वर्ग से पांचवे वर्ग से बैर जानो । चौथे हो तो मित्र, तीसरे हो तो उदासीन जानना चाहिए ।

ग्रह जप संख्या

रवेः सप्त सहस्त्राणि चन्द्रस्यैकादशैव तु ।
भौमे दशसहस्त्राणि बुधे चाष्ट—सहस्त्रकम् ॥
एकोनविंशतिर्जीवे शुक्रस्यैकादशैव तु ।

त्रयोविंशति मन्दे क राहुष्टादशैव तु।
केतोः सप्तसहस्त्राणि जप संख्याः प्रकीर्तिताः ॥

टीका—सूर्य की ७०००, चन्द्रमा को ११०००, मंगल की १०००० बुध की ८००० बृहस्पति की १९०००, शुक्र की ११०००, शनि की १३००० राहु की १८०००, केतु की ७००० हजार मन्त्र जाप संख्या है।

ग्रह दान समय

बुधस्य घटिका पञ्च शौरिमध्याहन्मेव च।
चन्द्रेजोवयोः संध्यायाँ भौमस्य घटिकाद्वयम् ॥
राहुकेत्वोऽर्धरात्रे प्रातं सूर्य शुक्रेऽरुणोदये।
अन्यकाले न कर्त्तव्यं कृते दानन्तु निष्फलम् ॥

टीका—बुध का दान ५ घड़ो दिन चढ़े, शनि का मध्यान्ह में, चन्द्रमा और बृहस्पति का सायंकाल में, मंगल का दो घड़ी दिन चढ़े, सूर्य और शुक्र का सूर्य उदय होने पर, राहु केतु का आधी रात को दान करना चाहिए अन्य समय दान करें तो निष्फल होता है। छाया दान कांसे की कटोरी में घी भरकर सूर्योदय पर होना चाहिए।

अथ वर्ण देखना

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः।
शूद्रो युग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यौ कन्यावृषौ मृगः ॥

卐卐卐

अथ वर्ण चक्रम्

राशि			वर्ण
मेष का	सिंह का	धन का	ब्राह्मण वर्ग
वृष का	कन्या का	मकर का	क्षत्रिय वर्ग
मिथुन का	तुला का	कुम्भ का	शूद्र वर्ग
कर्क का	वृश्चिक का	मीन का	वैश्य का

अथ वर्ण फलम्

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्राह्मणा रक्षितो यदि ॥
विप्र वर्णे च या नारी शूद्र वर्णे च यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥

टीका—उत्तम वर्ण की कन्या और नीच वर्ण का पुरुष हो तो पुरुष की मृत्यु हो। इसलिए उत्तम वर्ण की कन्या से विवाहकरना वर्जित है तथापि ब्राह्मण वर्ण को विशेष करके माना है। ब्राह्मण वर्ण की कन्या और शूद्र वर्ण का पति हो तो शुक्र की भी पुत्री हो तो भी विधवा होय।

अथ वश्य देखना

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहे धनुवृषाः ।
चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषश्चयत् ।
द्विपदास्तु मृगार्द्धं तु कुम्भमीनौ जलश्रितौ ॥

टीका—मकर राशि का पूर्वार्द्ध (उत्तराषाढ़ के तीनों चरण और श्रवण के डेढ़ चरण पर्यन्त का चन्द्रमा) मेष आधा धन का पिछला भाग

वृष के चतुष्पद की संज्ञा जानिये। कर्क राशि की कटि संज्ञा है, वृश्चिक की सर्प संज्ञा है और तुला, मिथुन, कन्या और आधा धन का पहला भाग इनको द्विपद जानिये, मकर का पिछला भाग, कुम्भ, मीन का जलचर जानिये।

अथ वश्य विचार

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशि वश्या सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः। सर्वेऽपिसिंहस्य वशो विजातिं ज्ञेये नाराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥

टीका—सिंह को छोड़कर सब मनुष्य सब राशियों के वश में हैं, जलचर राशि तो मनुष्य का भोजन ही है और वृश्चिक को छोड़ सिंह के सब वश में हैं और सब मनुष्यों के व्यवहार से जानो।

अथ तारा देखना

जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च तद् दिनभावधिम्।
नवभिस्तु हरेद् भागं शेषा तारां विनिर्दिशेत् ॥

टीका—जन्म नक्षत्र से विवाह के दिन के नक्षत्र तक गिने उसमें ९ का भाग दे शेष बचे तो तारा जानिये।

अथ तारों के नाम

जन्माख्यसम्पद्विपद्क्षेम प्रत्यिरः साधको वधः।
मैत्रातिमैत्राः ताराः स्युस्त्रिरा वृत्या नवैव ही ॥

टीका—१ जन्म, २ सम्मत्, ३ विपद्, ४ क्षेम, ५ प्रत्यारि, ६ साधक, ७ वध, ८ मैत्र, ९ अतिमैत्र, ये ९ तारों के नाम हैं।

तारा शुभाशुभ फलम्

जन्मतारा द्वितीया च चतुष्षष्ठाष्टमो तथा।
नवमषष्ठी शुभा ताराः, शेषास्त्रिोऽशुभावहाः ॥

टीका—जन्म, संपद्, क्षेम, साधक, मैत्र, अतिमैत्र ये छः शुभ हैं विपद्, प्रत्यारि, वध ये तीन तारे अशुभ हैं।

अथ योनि देखना

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः।
पुण्यश्च कृतिका छागो नागश्च रोहणीमृगः ॥१॥
आर्द्रा मूलमपि श्वाच्च मूषकः फाल्गुनी मघा।
मार्जारो दितिरा श्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥२॥
महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठानुराधिका।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा चश्रुत्याषाढ़ौ च मर्कटो ॥३॥
वसुभाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्धिश्वयोः।
योनयः कथितंभानां वैरमैत्री विचायताम् ॥४॥

अथ योनि चक्रम्

घोड़ा योनी	हाथी	बकरी	नाग	श्वान
अश्वनी शतभिषा की	रेवती भरणी की	पुष्य कृतिका की	रोहिणी मृगशिरा की	आर्द्रा मूला की
मषक	बिलाव	गौ	भैंस	मृग
पूर्वा फाल्गुनी मघा की	पुनर्वसु श्लेषा की	उत्तरा फा० उत्तरा भाद्र की	स्वाति हस्त की	अनुराधा ज्येष्ठा की
भेड़िया	बन्दर	सिंह	नेवला	
चित्रा-विशाखा की	पूर्वाषाढ़ श्रावण की	धनिष्ठा पूर्वा भाद्रपद की	अभिजित उत्तराषाढ़ की	योनी देखना

अथ योनि वैर देखना

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगम्।
वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दरुम्॥
लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं।
दम्पत्योर्नृपभृत्योरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः॥

योनि वैर चक्रम्

योनी	गाय का	हाथी का	कुत्ते का	नेवा का	बन्दर का	बिलाव का
वैर	भेड़िये से	शेर से	हिरण से	सर्प से	मेंढे से	चूहों से

ग्रह शत्रु देखना

शत्र मन्दसितौ समश्व शशिजौमित्राणि शेषा च खेः
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरशिमजश्चसुहृदोशेषः समाः शीतगोः
जीवेन्दूष्णकर कुराःकुजस्य सुहृदाशौरिः सिताकीसमौः
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे॥
सूरे सौम्यसितौवरी रविसुतो मध्यो:ऽपरोत्वन्यथा।
सौम्यार्की सुहृदौ संमौ कुजगुरुः शुक्रस्य शेषावरी॥
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समा सुगुरुः शौरस्यचा न्येऽयोः॥
ये प्रोक्ताः सुहृदास्त्रिकोणभादियुपुनस्तेष्मीमया कीर्त्तिताः

ग्रह शत्रु मित्र चक्रम्

ग्रह	रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं मं	र० बु०	र.चं.गु.	र० शु०	र.म.च.	बु० शु०	बु० शु०
सम	बुध	म० बृ० शु० श०	शु० श०	शु.श.म.	शनि	मं० बु०	गुरु
शत्रु	श० मु०	०००	बुध	चन्द्रमा	बु० शु०	र० च०	र.च.मं.

अथ गण देखना

अश्विनी मृगरेवत्यौहस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्त्रातिः कथ्यते देवतागणः ॥
तिस्त्रः पूर्वाश्चोत्तराश्चय तिस्त्रोऽप्यार्द्रा च रोहणी ।
भरणी च मनुष्यौख्यो गणश्य कथितो बुधैः ॥
कृतिका च मघाऽश्लेषा विशाखा तशतारकाः ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥

अथ गण चक्रम्

अ०	मृ०	रे०	ह०	पुष्य	पुन०	अनु०	श्र०	स्वा०	देवता गण
पू फा	पू० षा०	पू० भा०	उ फा	उ. षा.	उ भा.	आ०	रो०	भ०	मनुष्य गण
कृ०	म०	श्ले०	विश०	श०	चि०	ज्ये	ध०	मू०	राक्षस गण

अथ गण फलम्

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥

टीका—जो स्त्री पुरुष दोनों का एक ही गुण हो तो अधिक प्रीति और जो देवता और मनुष्य गण हो तो मध्य प्रीति, मनुष्य और राक्षस गण हो तो मृत्यु को प्राप्त हो। देवता और राक्षस गण हो तो क्लेश रहे।

अथ भकूट फलम्

मीनालिभ्यां युते चैव कुम्भे मिथुनसंयुते ।
मकरे कन्याकायुक्ते न कुर्यान्नव पञ्चमे ॥

टीका—मीन राशि से नवीं वृश्चिक और वृश्चिक से पांचवी मीन है भकूट नवम पंचम हुआ। सो विवाह में बुरा होता है। वैसे ही मिथुन से कुम्भ, मकर से कन्या, कन्या से मकर ठीक नहीं होता है, यह विवाह में त्याज्य है। नवीं पांचवीं राशि परस्पर ठीक नहीं होती।

एकाधिपत्ये राशि मैत्र्यां दुष्ट भकूट के ।
नाड़ी नक्षत्र शुद्धिश्चेद् विवाहः शुभदस्तदा ॥

टीका—वर और कन्या दोनों राशि का स्वामी एक ही ग्रह हो अथवा दोनों राशियों में मित्रता हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहें वो दुष्ट भकूट आदि में भी शुभ होता है।

अथ नाड़ी देखना

आदिमध्यान्त के वापि अन्तमध्यादि भानि च ।
अश्विन्यादि—क्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसंलिखेत् ॥
ऊर्ध्वगा वेदे रेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दशा स्मृताः ।
सर्पाकारं लिखेद् भानां नाड़ीचक्र वदेद बुधः ॥

टीका—आदि, मध्य, अन्त्य। अन्त्य मध्य आदि इस प्रकार अश्विनी से रेवती तक गिने। ४ रेखा खड़ी और १० रेखा तिरछी, इसी प्रकार सत्ताईस कोष्टों को नाड़ी चक्रम् कहते हैं।

अथ नाड़ी चक्रम्

आदि	अ०	आ०	पु०	उ.फा.	हस्त	ज्येष्ठा	मू०	शत०	पू० भा०
मध्य	भ०	मृ०	पुष्प	पू.फा.	चित्रा	अनु०	पू.षा.	धनिष्ठा	उ० भा०
अन्त्य	क०	रो०	श्लेषा	म०	स्वाति	व०	उ षा	श्रवण	रेवती

अथ नाड़ी दोष देखना

नाड़ीदोषस्तु विप्रीणां वर्णदो पश्च क्षत्रीये।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु षादजान्।

टीका—नाड़ी का विचार ब्राह्मण को, वर्ण का विचार क्षत्री को गण का विचार वैश्य को योनि का विचार शूद्र को अवश्य करना चाहिए।

अथ नाड़ी फलम्

एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम्।
वध्दाया च्च भवेद्धा निर्विवाहेचाशुभं भवेत्॥

टीका—जो वर कन्या दोनों की एक ही नाड़ी हो तो दोनों की मृत्यु हो और नाड़ी के दोष में विवाह करे तो हानि हो।

आदि नाड़ी वरं हन्ति मध्य नाड़ीश्च कन्याकाम्।
अन्त्यनाड्य द्वयोर्मृत्युर्नाड़ीदोषं त्यजेद् बुधः॥

टीका—जो आदि नाड़ी का दोष हो तो वर को अरिष्ट करें और दोनों की मध्य नाड़ी हो तो कन्या को अरिष्ट करें और अन्त्य नाड़ी का दोष लगे तो दोनों की मृत्यु हो।

नाड़ी दोष परिहार

एक नक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते।
अन्यर्क्षपातिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदाः॥

टीका—जो वर कन्या दोनों का एक ही नक्षत्र का जन्म हो तो एक नाड़ी का दोष न मानिए। अन्य में जन्म वर्जित है।

गोचर ग्रह देखना

त्रिषष्ठदशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः।
षष्ठाष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः॥
द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः।
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः॥

टीका—३।६।१० स्थान में मंगल, राहु, केतु, शनि शुभ हैं। ८।४।१० स्थान में बुद्ध शुभ है। २.५।८।९ स्थान में बृहस्पति शुभ है ११ वें स्थान में सब ग्रह शुभ फलदायक होते हैं।

द्विजन्मनि पञ्चमसप्तमगाः चतुरष्टकद्वादश धर्मयुताः
धन धान्यहिरण्यविनाशकराः रवि राहु शनैश्चर-
भूमिसुताः॥

टीका—२।१।५।७।४।८।१२।९ स्थानों में सूर्य मंगल राहु शनि बैठे तो धन का और अन्न का नाश करते हैं इन राशियों पर ये चार ग्रह अशुभ होते हैं।

१. अथ द्वादश भाव फलम्

लग्नेशोऽभ्युदितो लग्ने मृजीयोऽस्तंगतो यदि।
जीवत्येव तदाऽवश्यं शस्त्रविद्धोपि मानवः॥
लग्नेशः सप्तमे यस्य तस्य भार्या न जीवति।
प्रवासी च विरामी च पिता तस्य ऋणी भवेत्॥

टीका—जो लग्न का स्वामी लग्न में बैठा हो और अष्टमेश अस्त हो तो वह बालक जरूर जीवे। शस्त्र से छेदा हुआ भी नहीं मरे और जो लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो उस मनुष्य की स्त्री नहीं जीवे और कामना निष्फल हो और उसका पिता ऋणी हो।

२. धन भाव फलम्

धनेशः केन्द्रगो वापि धन सौख्यं महद् भवेत् ।
त्रिकस्थे वाऽथ सहजे धन सौख्यं न जायते ॥

टीका—जो धनेश दूसरे घर का स्वामी केन्द्र १।४।७।१० इन स्थानों में पड़े तो वह धनवान हो और ३।६।८।१२ स्थान में पड़े तो धन के लाभ से वंचित हो, निर्धन रहे।

३. भ्रातृभाव फलम्

सहजे सहजाधीशे भ्रातृसौख्यं प्रजायते ।
केन्द्रेपि तद्वहु ज्ञेयं त्रिकस्थे चाशुभं भवेत् ॥

टीका—जो तीसरे स्थान का स्वामी ६।१।४।७।१० इन स्थानों में पड़े तो भाई का सुख हो। ३।८।१२ इन स्थानों में पड़े तो भाई के सुख से वंचित हो।

४. मातृभाव फलम्

शनि भौमकयोर्मध्ये यदि तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥
तुर्येशः स्यात् शुभेराशौ पापग्रहैर्विवर्जितः ।
केन्द्रे चेन्मातुः सौख्यंस्यादन्यत्र नाशयेत्तथा ॥

टीका—जो शनि मंगल के बीच चन्द्रमा चौथे स्थान में पड़े तो माता को कष्ट हो। दशवे स्थान में हो तो पिता को कष्ट हो। और चौथे स्थान का मालिक केन्द्र में पड़ें और १/४/७/१० पाप ग्रहों से वर्जित हो तो माता का सुख हो, अन्यथा नहीं।

५. पुत्रभाव फलम्

पुतेशः सप्तमे यस्य तस्य गर्भो विनश्यति ।
अन्ये यत्र यदि पुत्रेशः सुखं त्रिकं विहाय वा ॥

टीका—जो पांचवे घर का स्वामी सातवे स्थान में हो तो गर्भ नष्ट हो यदि ६/८/१२ स्थान छोड़कर और स्थानों में हो तो पुत्र का सुख हो।

६. रिपु भाव फलम्

षष्ठेशो लग्नगेहस्थो रिपुहन्ता नरो भवेत्।
केन्द्रे चेद्रिपुभिः किंचित् व्ययाऽष्टरिपुगे न हि॥

टीका—जो छठे स्थान का स्वामी लग्न में हो तो दुश्मन का नाश करने वाला हो यदि वह ग्रह केन्द्र में हो तो दुश्मनों का भय अधिक रहे और यदि ६।८।१२ इन स्थानों में दुश्मन नष्ट हों, और मामाओं को भी नष्ट करे।

७. स्त्री भाव फलम्

सप्तमेशः केन्द्रगो वा पित्तादिभिर्विकारवान्।
स्त्रीसौख्यं च विजानीयात् भ्रातृवान् धनवानपि॥
अन्यत्र यदि गेहस्थे स्त्री विहीनो नरो भवेत्।
धने सहजेऽथलाभे वा स्त्रीसौख्यं महद् भवेत्॥

टीका—जो सप्तमेश केन्द्र १/४।७।१० इन स्थानों में हो तो पित्तादि विकार युक्त हो और स्त्री का अधिक सुख हो तथा भाई का सुख हो और धन प्राप्त हो।

८. मृत्यु भाव फलम्

ह्रल्पायुदिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि।
समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रे दीर्घायुरादिशेत्॥

टीका—लग्नेश सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु ३२ वर्ष और जो सूर्य से (सम) हो तो मध्य आयु ६४ वर्ष की हो और जो (मित्र) हो तो ९६ वर्ष आयु प्राप्त हो।

९. धर्म भाव फलम्

धर्मेशो धर्म गेहस्था धर्मवान् भाग्यवांस्तथा।
केन्द्रेपि च तदा ज्ञेयोऽन्यत्रस्थोप्यशुभो भवेत्॥

टीका—जो धर्म स्थान का मालिक धर्म स्थान में हो और केन्द्र १।४।७।१० इन स्थानों में पड़े तो धर्मवान व भाग्यवान हो, अन्यत्र पड़े तो अशुभ होता है।

१०. कर्म भाव फलम्

कर्मेशे लग्ने वापि राजतुल्या नरो भवेत्।
पितृसौख्यं विशेषेण लक्ष्मीः पूर्णा च जायते॥

टीका—यदि कर्मेश दसवे स्थान का मालिक लग्न में हो तो राजा के समान आचरण करने वाला मनुष्य हो, पिता का पूर्ण सुख हो और धन बहुत हो।

११. लाभ भाव फलम्

लाभेशे लग्नगे वापि केन्द्रे वाप्यथ वा भवेत्।
दिने दिनेपि लाभन्तु त्रिके हानिः प्रजायते॥

टीका—जो लाभ स्थान का मालिक लग्न में हो और केन्द्र १।४।७।१० में पड़े तो दिन प्रति दिन लाभ ही लाभ हो और जो ८।६/१२ स्थान में हो तो लाभ की हानि हो।

१२. व्यय भाव फलम्

व्ययेशे च त्रिकस्थे वा सर्वसम्पद्यतो नरः।
केन्द्रे वाऽथ त्रिलाभे वा दरिद्री जायते ध्रुवम्॥

टीका—जो बारहवे स्थान का मालिक ६।८।१२ पड़े तो सम्पूर्ण सुख हो, केन्द्र १।४।७।१०।३।११ वें स्थान पड़े तो दरिद्री हो, जिसके चंद्रमा से १ और १२ वें स्थान कोई ग्रह न हो तो वह मनुष्य दरिद्री होता है। यदि

चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो उसका दरिद्री योग नष्ट होता है।

||ग्रहवाहन चक्रम्|| ||ग्रहशान्ति रत्न चक्रम्||

सू० अश्व	च० मृग	मं० वाराह	सू० चुन्नी	च० मोती	मं० मूगा
बु० सिंह	गुरु हाथी	शु० दादुर	बु० पन्ना	बृ० पुखराज	शु० हीरा
शनि भैंसा	राहु चीता	केतु नाका	शनि नीलम	राहु गोमेद लहसुनिया	केतु मणी

इन वस्तुओं के दान से क्रूर ग्रह प्रसन्न होते हैं।

भाग देखना

पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वा मार्द्रादिकं द्वादशमध्य भागम् पौरन्दराद्यं नवकं भचक्रम् परंचभागं गणकाः विदग्धा।

टीका—पौष्णा अर्थात् रेवती इसको आदि लेकर ६ नक्षत्र रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा ये ६ नक्षत्र पूर्व भाग के हैं और आर्दा को आदि लेकर १२ नक्षत्र, आर्दा, पुनर्वसु, पुष्य श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा ये मध्य भाग के हैं और पौरन्दर अर्थात् ज्येष्ठा इसको आदि लेकर ९ नक्षत्र ज्येष्ठा मूला, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, अभिजित श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद ये पर भाग के हैं।

भाग फल देखना

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी॥

टीका—पूर्व भागी नक्षत्रों वाला बालक श्रेष्ठ होता है। मध्य भाग वाले नक्षत्रों की कन्या श्रेष्ठ होती है। और जो दोनों पर भागों के हों तो बड़ी प्रीति रहती है।

अथ ग्रह नपुंसक देखना

वुधसूर्यसुतौ नपुसंकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः। शिखिभूखपयो मरुद्गणानामधिपा भूमिसुतदयः क्रमेण।

टीका—बुध शनि नपुंसक हैं चन्द्रमा, शुक्र स्त्री हैं सूर्य मंगल बृहस्पति ये पुरुष हैं जन्म में ये बलवान ग्रह का रूप हैं।

अथ भकुट मेल देखना

मरणं पितृ मात्रोश्च संग्राह्यं नवपंचकम्।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखवहम्।
षडष्टके भवेन्मृत्युस्त्वं तस्य विचारयेत्॥

टीका—जो वर की राशि से कन्या की राशि नौवे हो तो उसके पिता की मृत्यु हो और जो कन्या की राशि से वर की राशि पांचवे हो तो उसकी माता की मृत्यु हो और वर की राशि से पाँचवे कन्या की राशि हो और कन्या से नवे वर की राशि हो तो यह त्रिकोण शुभ होता है, पुत्र पौत्र के सुख को देने वाली है। ६।८ वे स्थान होवे तो मृत्यु हो, अतः यत्न से विचार करे।

अथ पाये देखना

जन्मेरसेरुद्र सुवर्ण पादे द्विपंच नवमं रजतं शुभम् च।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदंबलिष्ठमतूर्येष्टसूर्येइतिलोहकष्टम्।

टीका—अगर चन्द्रमा लग्न में १ या लग्न से ६ या ११ हो तो सोने के पाये जानिये और २।५।९ हो तो चांदी के पाये जानिये और ३।७।१० हो तो ताम्बे के पाये जानिये यदि ४।८।१२ हो तो लोहे के पाये जानिये।

सर्वोपरिचक्रम्

न वर्गं न वर्णौ न गुणौ न योनिः द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा। ताराविरुद्धं नवपंचमं स्याद् राशिश-स्वामी शुभदो विवाहे।

टीका—वर्ग वर्ण-गण, योनि, राशि षडाष्टक, तारा नाड़ी, नवें, पांचवे इतने गुणों में से कोई मत मिलो और वर कन्या का एक स्वामी हो या दोनों में मित्रता हो तो जानो सब चीज मिल गई यह विवाह शुभदायक होता है।

अथ मंगली देखना

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या वै मृतभर्त्ता स्याद भर्त्ता भार्या हनिष्यति॥

टीका—१।१२।४।७।८। स्थानों में जिसके मंगल हो वह मंगली होता है.जो वर कन्या मंगली हों और उनका विवाह हो तो शुभ है और जो वर मंगली और कन्या सादी या कन्या मंगली वर सादा हो तो अशुभ।

मंगली दोष परिहार

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
नवमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते॥

टीका—जिसके ७।१।४।६।१२ इन स्थानों में शनि हो तो मंगली का दोष समाप्त करता है।

अथ भाद्रा देखना

दशम्यां च तृतीयायां कृष्ण पक्षे परे दले।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदलेस्मृता॥
एकादश्यां चतुर्थ्याम् च शुक्लपक्षे परे दले।
अष्टम्यां पूर्णिमायाँ च वि[illegible]टः पूर्व दले स्मृता॥

तिथि	१०	३	कृष्ण पक्ष में	भद्रा पर दल में वास करती हैं।
तिथि	७	१४	कृष्ण पक्ष में	भद्रा पूर्व दल में वास करती हैं।
तिथि	११	४	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पर दल में रहती हैं।
तिथि	८	१५	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पूर्व दल में रहती हैं।

चन्द्रमा के साथ भद्रा का वास ज्ञान

मेष मकर वृषकर्कट स्वर्गे कन्या मिथुन तुलाधनुनागे।
कुंभमीनअलिकेसरि मृत्ये विचरति भद्रात्रिभुवनमध्ये॥

मेष १	मकर १०	वृष २	कर्क ४	के चन्द्रमा में	स्वर्ग में भद्रा रहती हैं।
कन्या ६	मिथुन ३	तुला ७	धन ९	के चन्द्रमा में	पाताल लोक में भद्रा रहती हैं।
कुम्भ ११	मीन १२	वृश्चिक ८	सिंह ५	के चन्द्रमा में	मृत्युलोक में भद्रा रहती हैं।

अथ भद्रा वास फल देखना

स्वर्गे भद्रा शुभं भं कार्यें पाताले च धनागमः।
मृत्यु लोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशिनी॥

टीका—यदि स्वर्ग लोक में भद्रा हो शुभ कार्य करे, पाताल की भद्रा में लाभ हो। यदि मृत्यु लोक की भद्रा में सब कार्यों का नाश हो। अतः मृत्यु लोक की भद्रा में शुभ काम न करे।

यावत भद्रा पंचांग में लिखी रहती है तो जानो कि बीत गई जितने घड़ी पल लिखी हों उतने ही घड़ी पल दिन चढ़े तक और जो उपरान्त भद्रा जितने घड़ी पल लिखी हों पल में तीस घड़ी और जोड़े फिर जोड़ में जितनी

घड़ी आवे तब वे सब घड़ी पल बीत जावे तो भद्रा बीत गई ऐसा जानना।

अथ भद्रा के मुख पुच्छ देखना

पंचद्व्यद्रि कृताष्ट राम रसभू यामादि घट्यः शराः
विष्टे राश्यमद्गजेन्द्र रसरामाद्रयाँशिवबाणाब्धिषु ॥
याम्येष्वन्त्यघटी त्रयंशुभकरं पुच्छं तथा वासरे।
विष्टिस्तिथ्य पराद्ध जा शुभकरी रात्रौस्तु पूर्वाद्ध जा ॥

॥ भद्रा के मुख पुच्छ देखने का चक्र ॥

तिथि	०४	०८	११	१५	०३	०७	१०	१४
पहर	०५	०२	०७	०४	०८	०३	०६	०१
आदि	आ०	आ०	आ०	आ०	आ०	आ०	आ०	आ०
घ.मु.	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५
प्रहर	०८	०१	०६	०३	०७	०२	०५	०४
अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त
घ. पु.	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३

भद्रा के मुख की घड़ी त्याज्य और पुच्छ की शुभ कामना में लीन है।

नोट—प्रहर की गणना तिथि के आरम्भ से करनी चाहिए।

कन्या व पुत्र देखना

दम्पती पुत्रसंयुक्तौ द्विगुणौ चन्दुसंयुतौ।
पंचघ्नौ कन्यकायुक्तौ पंचविंशति शोधितौ ॥
वामे पुत्रम् विजानीयाद् दक्षिणे कन्यकाँ तथा।

टीका—जो कोई पूछे मेरे कितने लड़के और कितनी लड़की हैं तो स्त्री पुरुष यानी दो में जितने पुत्र हों मिला दे फिर दुगने कर एक और फिर पाँच गुणा करके कन्या भी मिला दे फिर पच्चीस घटा दे शेष जो बचे उनमें बाँई तरफ का जोड़ है वह तो पुत्र और दाहिनी तरफ का कन्या जानना चाहिए।

स्त्री पहले मरे या पुरुष

अक्षराणि द्विगुणितानि मात्रा चैव चतुर्गुणा।
एकीकृत्य त्रिभिर्भक्तं शेषं ज्ञेयं च लक्षणम्॥
एकं च पुरुषं हन्ति द्वितीयं नारीं तथैव च
शून्ये च पुरुषं ज्ञेयम् एवम् प्रश्नस्य लक्षणम्॥

टीका—स्त्री पुरुष के नाम के अक्षर गिनकर दुगने करे और मात्रा चौगुनी करके उन सबको एक जगह मिलावे औरतीन का भाग दे १ बचे तो पुरुष मरे, दो बचे तो स्त्री मरे, शून्य बचे तो भी पुरुष पूर्व में मरे।

जीवित की कुण्डली है या मरे की

जन्मांकप्रश्नांकरन्ध्रांकयुक्तं लग्नेशगुण्यं रन्ध्रे।
शभक्तं विषमेजीवितस्यैव समे मृत्यु मादिशेत्।

टीका—जन्म लग्न के अंक प्रश्न लग्न के अंक और जन्म लग्न से आठवे स्थान के अंक एक जगह करके जन्म लग्नेश से गुणा करे और अष्टमेश का भाग दे। जो विषम १।३।५ बचे तो जीते की और सम २।४।६ बचे तो मरे की जाननी चाहिए।

संक्रांति पुण्य का फलम्

संक्रान्तिकालदुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडश षोडशोष्णगोः। निशी थतोऽर्वागपरत्र संडक्रमे पूर्वा परान् हन्ति न पूर्वभागयोः।

टीका—संक्रांति के पहले और पीछे १६ घड़ी पुण्यकाल माना जाता है। आधी रात से पहले बैठी हो तो दिन के तीसरे भाग में पुण्यकाल माने और आधी रात के वाद बैठे तो दूसरे दिन के पूर्व भाग पहिले प्रातः अगला दिन माने और ठीक आधी रात को बैठे तो दोनों दिन मानें।

त्रिंशूतिः कर्कटे नाड्यो मकरस्य दशादिकाः।
तुला मेषस्य विंशः स्यात् शेषाः षोडश षोडश॥

टीका—कर्क की संक्रांति का ३० घड़ी पुण्य काल होता है और मकर की संक्रांति का ४० घड़ी पुण्य काल तुला मेष की संक्रांति का २० घड़ी पुण्य काल और राशियों की जो संक्राति १६ घड़ी पहिले या पीछे पुण्य काल जानो।

आदि मध्य अन्त्य भोगी चक्रम्

२	५	८	४	इन राशियों की संक्रांति आदि भोगनी है।
१	७	९	११	इन राशियों की संक्रांति मध्य भोगनी है।
३	६	१०	१२	इन राशियों को संक्रांति अन्त्य भोगनी है।

याप्युत्तरा पुण्यतमा मयोक्ता सायं भवेत्सा यदि। सापि पूर्वा। पूर्वा तु योक्ता यदि सात्रिभाते साप्युत्तरा रात्रीनिषीथिनी स्याम् ॥ १ ॥ अर्वाङ निशीथे यदि संक्रमः स्यात्पूर्वेन्हि पुण्यं परतः परेन्हि ॥ २ ॥

टीका—जो संक्रांति अन्त्य भोगनी चक्र में लिखो है वह सायं काल में अर्के तो आदि भोगतो हो जातो है और जो आदि भोगनी लिखो है वह प्रातःकाल में अर्कें तो वह अन्त्य भोगनी हो जाती है और जो आधी रात से पहले अर्कें वह आदि भोगनी होती हैं उसका पुण्य काल पहिले दिन। आधी रात से पीछे अर्कें तो अन्त्य भोगनी, अगले दिन जानो, जो ठीक आधी रात में बैठे तो दोनों दिन उसका पुण्य काल मानो।

अथ संक्रांति मुहूर्ति भेद

संक्रान्तौ मुहूर्तिं भेदा हर पवनयमे वारूणे सार्पशैद्रे
एषा पंचेन्दुसंज्ञागुरुकरपितृभेचाग्निदस्त्रे च सौम्ये।
त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूलेश्रु तिवशुवपुषा त्रीणिपूर्वाखरामे
ब्राह्म ऽदित्ये द्विदैवे भवति शरकृता दुत्तरा त्रीणिऋचम्
वाणवेदैः समर्घ स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः मूर्तौ
पञ्चदशे याते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥

टीका—आर्द्रा, स्वाति भरणी, शतभिषा, श्लेषा, ज्येष्ठा जो इन नक्षत्रों में संक्रांति बैठे तो १५ मुहूर्ती, प्रजा में दुर्भिक्ष पुष्य, हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, मूल, घनिष्ठा, रेवती, तीनों पूर्वा में अर्क तो ३० मुहूर्ती फल साधारण है। रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा, तीनों उत्तरा में अर्क तो ४५ मुहूर्ती जानो, इसका फल बहुत उत्तम है।

अथ संक्रांति समय फलम्

सूर्योदये विपत्तिर्जघता मध्यान्हे सकलशस्य विना-
शकारिणी। अस्तंगते फलं तृप्तं च सौख्यं सुभिक्षं
मंगलं निशि चार्द्धरात्रौ ॥

टीका—जो सूर्य निकलने पर संक्रांति बैठे तो प्रजा को भारी, दोपहर में बैठे तो नाश, जो सूर्य छिपे घर बैठे तो राजा को अशुभ। जो रात्रि में बैठे तो शुभदायक है।

होरा देखना

वारातु षष्ठ षष्ठस्य होरा सार्द्ध द्विनाडिकाः।
अर्कः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरासुतः ॥

गुरोर्विवाहे गमने भृगुपुत्रस्य सुभावहाः ।
ज्ञाने साम्यस्य वै चन्द्रः सर्वकार्येषु शुभप्रदः ॥
युद्धे तु भूमिपुत्रस्य सेवयाँ भूपतेः रवेः ।
धनं च य तु मन्दस्य शुभा होरा प्रकीर्तिता ॥
यस्य ग्रहस्य वारे तु यत्कर्म्म मुनिभिः स्मृतम् ।
कालहोरा सुतस्य स्यत् तत्कर्म्म शुभप्रदम् ॥

टीका—जिस दिन जो वार हो उस वार को होरा २॥ घड़ी रहती है फिर छटे वार की होरा २॥ घड़ी जैसे रविवार से शुक्र की २॥ घड़ी, फिर २॥ घड़ी बुध की फिर चन्द्रमा की, फिर २॥ घड़ी शनि की, फिर २॥ घड़ी गुरु की, फिर २॥ घड़ी मंगल की, इस रीति से सब दिन की होरा जानो सोमवार से पहले चन्द्रमा की २॥ घड़ी दिन चढ़े तक होरा रहती है फिर छटे ग्रह की, फिर उससे छटे की, ऐसे हो दिन रात में २४ होरा सातों वार की होती है । जरूरी कार्य जिस वार में करना लिखा है । उस दिन वह वार न हो तो उसको होरा में कर ले । जौनसा वार हो २॥ घड़ी को पहले उसकी होरा होती है फिर छटे २ की होती है, गुरु की होरा में विवाह शुभ है, यात्रा में शुक्र की, ज्ञान कार्य में बुध की, अन्य सर्व कार्यों में चन्द्रमा की, युद्ध में मंगल की, राज सेवा में सूर्य की, धन संग्रह में शनि की होरा शुभ है ।

॥ इति जातक प्रकरणम् ॥

विवाह प्रकरणम्

द्वितीय भाग

अथ सगाई का मुहूर्त

धरणीदेवोऽथवा कन्यका सहोदरः शुभ दिने गीत वाद्यदिभिः संयुतः। वरंवृत्ति वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वन्हि पूर्वाये अर्चयेत् ॥

टीका—पुरोहित या ब्राह्मण या कन्या का छोटा भाई या बड़ा भाई वस्त्र, यज्ञोपवीत आदि लेकर शुभ दिन वर का वरण करे। रोहिणी, तीनों उतरा०, कृतिका, तीनों पूर्वा ये नक्षत्र और शुभ वार चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरु, होने चाहिएं। सगाई के पूर्व दोनों टेवे वर कन्या मिला लेने चाहएं जो नहीं मिलते हों तो विवाह सुझाने में टेवे न दें वर कन्या के नाम से सुझावे या जन्मनाम से सुझावे या दोनों नाम बोलते हों या दोनों जन्म के हों।

जन्मपत्र मिलान गुण मिलान

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकुटं च नाड़ी चेते गुणाधिकाः ॥

टीका—वर्ण, वश्य तारा, योनि, ग्रह मैत्री, भकूट, नाड़ी ये मिलाने चाहियें।

अथ विवाह सुझाना

दैवज्ञं पुज्येत्पूर्वं फलं ताम्बूलं गृह्यते।
विप्राय भेटकं दद्याद्विवाहे प्रश्नं कारयेत् ॥

टीका—कन्या का पिता या कन्या का भाई जब विवाह करना चाहे

तो पहले पंडित के पास जावें, नारियल, सुपारी, पान, फूल, चावल दक्षिणा पंडित को भेंट करे, तब प्रश्न करे तो वह विवाह शुभदायक होता है।

ऋगवेदोऽर्थ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
ब्रह्मवाक्यं सदा नित्यं हन्यतां तवशत्रुवः॥

टीका—चारों वेदों का यह सिद्धान्त है कि ब्राह्मण के आशीर्वाद से तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो।

विवाहे सर्व मांगलये यात्रायां गृहगोचरे।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥

टीका—विवाह, शुभ काम, यात्रा घर बनाने, प्रतिष्ठा, गोचर गहने और सभी शुभ काम में जन्म राशि प्रधान है।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशि प्रधानत्वं न जन्मराशिं न चितयेत्॥

टीका—देश, गांव घर के विषय में, युद्ध अथवा नौकरी और व्यापार के विषय में नाम राशि से देखे जन्म राशि से नहीं।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येव नामधिण्यं व नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्॥

टीका—वर का जन्म नक्षत्र हो तो कन्या का भी जन्म काले या दोनों का बोलता नाम हो। एक का जन्म का एक का बोलता हो तो अशुभ है।

जन्ममासे जन्मभे न च जन्मदिनेपि च।
ज्येष्ठेन ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत् क्वचित्।

टीका—जन्म मास, जन्म दिन जन्म नक्षत्र प्रथम गर्भ वाले की उत्पत्ति का ज्येष्ठ में वर्जित है।

ज्येष्ठा विचार देखना

न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पांणिपीडनम्।
द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत्॥

टीका—वर कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों तो ज्येष्ठ के महीने में

विवाह न करें और जो एक जेठा हो तो विवाह करने में कुछ दोष नहीं । ३ ज्येष्ठा नहीं मिलने चाहिये ।

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहज्ये च शुभप्रदः ॥

टीका—सिंह के बृहस्पति में विवाह न करें, मेष के सूर्य में सिंह का बृहस्पति हो तो विवाह करने में कोई दोष नही होता ।

विवाह के नक्षत्र देखना

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिमृगो मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदा ॥

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, मृगशिरा, मघा अनुराधा, हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के हैं ।

विवाह के मास देखना

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरन्यबल्लभा ॥

टीका—माघ के महीने में धनवती हो, फाल्गुन में सौभाग्यवती, बैशाख तथा ज्येष्ठ में विवाह करे तो पति को प्रिय हो ।

आषाढ़े कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥

टीका—आषाढ़ में कुल की वृद्धि और महीने में विवाह वर्जित है मार्गशिरा को भी कोई कोई आचार्य शुभ मानते हैं ।

विवाह में वर्जित नक्षत्र देखना

अमावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूर वाराश्च वर्जनियाः प्रयत्नतः ॥

टीका—अमावस्या, रिक्ता तिथि ४/९/१४ बारवेला, जन्म का नक्षत्र कर वार रवि शनि, मंगल गण्डान्त नक्षत्र विवाह में वर्जित हैं ।

विवाह वर्जित योग देखना

भद्रा कर्कटयोगं च तिथ्यन्तं यमघण्टकम् ।
दग्धां च तिथि च भातं च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥

टीका—भद्रा, कर्कट योग, तिथि के अन्त की २ घड़ी, यमघण्टक योग दग्धा तिथि, नक्षत्र के अन्त की ३ घड़ी, कुलिक योग विवा में वर्जित हैं।

मासान्तादि देखना

मासान्ते दिनमेकन्तु तिथ्यन्तं घटिकाद्वयम् ।
घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥

टीका—मसान्त संक्रांति के अन्त का एक दिन, तिथ्यन्त तिथि के अन्त की दो घड़ी, भांत नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी विवाह में वर्जित हैं।

मासान्ते म्रतते कन्या तिथ्यन्ते स्याद पुत्रिणी ।
नत्रत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥

टीका—मास के अन्त में कन्यादान से कन्या की मृत्यु तिथि के अन्त में अपुत्रिणी हो, नक्षत्र के अन्त में विवाह हो तो विधवा हो, भद्रा में विवाह हो तो वर कन्या की मृत्यु हो, अतः यत्न से त्यागें।

विवाह में किस २ प्रकार का बल देखना

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।
द्वयोर्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहे नान्यथा भवेत् ॥

टीका—वर को सूर्य का बल देखे, कन्या को बृहस्पति का बल देखे, वर कन्या दोनों को ही चन्द्रमा का बल देखे।

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ।

टीका—वर को राशि से सूर्य ४/८/१२ हो तो विवाह न करे जो करे वो वर की मृत्यु हो।

जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेपिऽत्रा ।
नवमे चे दिवानाथः पूजया पाणिपीडनम् ॥

टीका—वर की राशि से सूर्य १/२/५/७/६ हो तो पूजा का विवाह है। सूर्य का जप, दान, पूजादि से विवाह हो।

एकादशे तृतीये वा षष्ठे दशमेऽपि वा।
वरस्य शुभदीनित्यं विवाहे दिने नायकाः॥

टीका—जो वर को ११/३/६/१० सूर्य हो तो शुभदायक और कल्याण करने वाला होता है।

८	४	१२	सूर्य	अशुभ होता है।	
१	२	५	७	६	पूजा का होता है।
११	३	६	१०	शुभ होता है।	

गुरु बल देखना

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे च बृहस्पतौ।
पुजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः॥

टीका—कन्या की राशि से बृहस्पति ४/८/१२ हो तो अशुभ है यह योग प्राणाघात हैं, इसमें पूजा न करें।

षष्ठे जन्मानि देवेज्ये ततीये दशमेऽपि वा।
भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्याताः शुभकारकः॥

टीका—जो कन्या राशि से बृहस्पति ६/१/३/१० हो तो बहुत सी पूजा दान जप आदि करने से विवाह शुभ होता है।

एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा।
नवमे च सुराचार्ये कन्याया शुभकारकः॥

टीका—जो बृहस्पति ११/२/५/७/६ हो तो शुभदायक है।

उच्चादि गुरु विचार

स्वोच्चे गुरु स्वरित्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमेपिवा।
रिस्फाष्टतूर्ये गोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥

टीका - बृहस्पति उच्च हो, अपने घर का हो या वर्गोत्तम का हो या मित्र के घर का हो या नवांशक में हो तो ४।८।१२ इनमें दोष नहीं होता।

गुरु फल चक्रम

११	२	५	७	९	गुरु शुभ होता है।
६	१	३	१०	गुरु	पूजा का है।
४	८	१०	बृहस्पति		अशुभ होता है।

झषचक्र पकुलीरस्थो जीवो वाप्यशुभो वरः।
अतिशोभान्तथा दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥

टीका—मीन, धन कर्क का बृहस्पति अशुभ भी हो तो विवाह-यज्ञोपवीत में शुभ जाने।

चन्द्र बल विचार

आद्यश्चन्द्र श्रियं कुर्यात मनस्तोषं द्वितीयके।
तृतीये धन सम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥
पंचमे ज्ञान बृद्धिश्च षष्ठे सम्पतिरुत्तामा।
सप्तमे राज्य सम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥
नवमे धर्म लाभश्च, दशमे मानसेप्सितम्।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानि रेव च ॥

टीका—१ चन्द्रमा में धन लाभ, २ संतोष, ३ सम्पति प्राप्त, ४ कलह, ५ ज्ञान, ६ उत्तम सम्पत्ति, ७ राज्य सम्मान, ८ मृत्यु, ९ धर्म लाभ, १० इच्छा पूर्ति, ११ सर्वलाभ, १२ हानि होती है।

विवाह में कन्या की अवस्था

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत् कन्या अत उर्ध्वं रजस्वला ॥

टीका—आठ वर्ष तक गौरी, नौ वर्ष तक रोहिणी, दस वर्ष तक कन्या संज्ञा जानो, इस के उपरान्त रजस्वला मानो।

संप्राप्तैकादशे वर्षे कन्याया न विवाहिता।
मासे मासे पिता भ्राता तस्या पिबति शोणितम् ॥

टीका—जो ग्यारहवें वर्ष में कन्या का विवाह नहीं हो तो महीने महीने जो रजस्वला हो तो दोष के भागी पिता और बड़ा भाई होते हैं।

द्विदशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते।
पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्या लग्नं प्रदापयेत् ॥

टीका—ग्यारह वर्ष की कन्या हो तो बृहस्पति का बल न देखे और लग्न विचार कर पूजा दान करके विवाह कर दे।

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठ भ्राता तथैव च।
त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्टवा कन्यां रजस्वलाम् ॥

टीका—रजस्वला कन्या को माता, पिता बड़ा भाई देखें तो नरक के अधिकारी होते हैं।

गुर्विन्द्वर्कबला गौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी।
रवींदुबलजा कन्या प्रौढ़ा लग्नबला स्मृता ॥

टीका—गौरी को बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य तीनों का बल देखे रोहिणी को गुरु और चन्द्रमा का बल देखें कन्या को सूर्य और चन्द्रमा का बल देखे, प्रौढा का लग्न ही विचार करे।

गौरीं ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणीं ददत्।
कन्यां ददमृत्युलोके रौरवं तु रजस्वलाम् ॥

टीका—गौरी दान से पाताल में सुख पावे। रोहिणी दान से बैकुण्ठ लोक में सुख कन्या का दान मृत्युलोक में सुख प्राप्त हो और जो रजस्वला का दान से नरक में पड़े।

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमाः।
तेजो—दाता भवेत्सूर्यो भूमि दाता महीसुतः ॥
जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः।
चन्द्रे हीने गता लक्ष्मीः स्थानहानिः कुजं बिना ॥

टीका—बृहस्पति जीव, चंद्रमा धन, सूर्य तेज, मंगल भूमि के दाता हैं बृहस्पति हीन हो तो कन्या की मृत्यु सूर्यहीन हो तो वर की मृत्यु चंद्रमा हीन हो तो लक्ष्मी की हानि, जो मंगल हीन हो तो घर की हानि हो।

दश दोष देखना

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रा बुधपञ्चकम्।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रांतिसाम्यं निगद्यते॥
दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः।
एतान्दोषान् परित्यज्यं लग्नं संशोधयेद् बुधः॥

टीका—१ लत्ता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ जामित्र; बुध पंचक, ७ एकागल, ८ उपग्रह, ९ कान्तिसाम्य, १० दग्धा तिथि ये दस दोष बलवान् हैं इनसे बचाके लग्न साधनी चाहिए।

दश दोष मानना

लत्ता मालवके देशे पातञ्च कुरुजाँगले।
एकार्गलं च काशमीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥

टीका—लत्ता दोष मालवा देश में, पात दोष कुरुजांगल देश में एका-एकार्गल दोष काश्मीर में माना जाता है वेध दोष सब जगह माना जाता है।

यामित्रं चामरे देशे युतिदोषः कलिंगके।
उदग्रहे च कैलाशे दग्धा विद्रुम देशे के॥

टीका—यामित्र दोष अमर देश में, युति दोष कलिंग देश में, उपग्रह दोष कैलाश देश में दग्धा दोष विद्रुम देश में माना जाता है।

वेध, बुधपंचक दग्धा तिथि, कान्तिसाम्य; युति ये पांच दोष जरूर देखना चाहिए और दोष और २ देश में माने जाते हैं।

युति दोष देखना

मत्र ग्रहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत्।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम्॥

टीका—जिस नक्षत्र का चन्द्रमा हो उसी नक्षत्र में अन्य कोई ग्रह होय तो

युति दोष होता है परन्तु शुक्र के बिना संयुक्त हो तो शुभ, अन्यत्र अशुभ है।

युति दोष फलम्

रविणा संयुक्तो हानि भौमेन निधनं शशि।
करोति मूलनाशं च राहुकेतु शनिश्चरः॥

टीका—सूर्य चन्द्रमा के साथ हों तो हानि करे भौम मृत्यु राहु, केतु शनिश्चर हों तो मूल नाश करते हैं।

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चं वामित्रा राशिगः।
युतिदोषस्य च भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा॥

टीका—चन्द्रमा वर्गोत्तम हो अथवा उच्च का हो, वा मित्र राशि का हो तो युक्ति दोष का नाश करे और स्त्री पुरुष दोनों सुखी रहें।

वेध दोष देखना

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः।
विवाहे तत्र मासं तु न जीवित कदाचन्॥

टीका—जिस नक्षत्र का लग्न हो उसी नक्षत्र की रेखा से जो नक्षत्र विधा हो और उसी नक्षत्र पर सूर्य आदि कोई ग्रह हो तो उसको वेध कहते हैं। विवाह के एक महीने पीछे मृत्यु करे।

अश्विनी पूर्वफाल्गुण्या भरणी चानुराधया।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृतिका च विशाखया॥
मृगश्चात्तरषाढ़ेन पूर्वाषाढ़ा तथार्द्रया।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया॥
धनिष्ठया तथा श्लेषा मघाऽपि श्रवणेन च।
रेवत्युत्तरफाल्गुण्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात्।
स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात्॥
विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदः।

टीका—अश्विनी से और पूर्वाफाल्गुनी से एक रेखा। ऐसे जो दोनों

स्थान एक रेखा हों तो वेध होता है। इस प्रकार अट्ठाइस नक्षत्र का जानिये। वेध पंचशाला चक्र में समझ लें।

वेध चक्रस्य फलम्

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः॥ अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता। परपुरुषता राहोः केतो स्वच्छन्दचारिणी॥

टीका—जो सूर्य का वेध हो तो विधवा, मंगल का वेध हो तो कुलक्षणी हो, शुक्र का वेध हो तो वन्ध्या, गुरु का वेध हो तो सन्यासिनी, शनिश्चर चन्द्रमा का वेध हो तो दुखी, राहु का वेध लगे तो परपुरुष गामिनी, केतु का वेध लगे तो स्वच्छन्दचारिणी हो।

शनिराहुकुजा दित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः। विवाहिता च या सा कन्या विधवा भवेत्॥

टीका—शनि, राहु, भौम, सूर्य इनमें से कोई ग्रह विवाद समय में जन्म नक्षत्र पर हो तो कन्या विधवा हो।

अथ जामित्र दोष विचार

चतुर्दशं च नक्षत्रं जामित्रं लग्नभास्मृतम्। शुभयुक्तां तदिच्छन्तिपाप युक्तं च वर्जयेत्॥

टीका—जो लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है, जो सौम्य ग्रह हो तो शुभदायक है, पाप ग्रह हो तो वर्जित करे।

जामित्र फलम्

चन्द्रश्चाद्रिभृ गुर्जीवो जामित्रे शुभकारकाः। स्वर्भानुमंदरा जामित्रे न शुभप्रदाः॥

टीका—चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये ग्रह जन्म के नक्षत्र से चौदहवें हो तो शुभ। शनि, राहु, केतु, सूर्य भौम चौदहवें हों तो अशुभ जामित्र होता है।

चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे।
तत्र स्थिता ग्रह भूत व्याधिवैधव्यकारकाः ॥

टीका—चन्द्रमा से और विवाह लग्न की राशि से सातवें कोई ग्रह हो तो व्याधि और वैधव्य करे।

अथ मृत्यु पंचक देखना

धार्य्या तिथिर्मास दशाष्ट वेदां १५।१२।१०।८।४
संक्राँतितो यातादिनैश्च योज्याः ॥ ग्रहैर्विभक्ता यदि
पंचशेषा रोगस्तथाग्निनृपचौरमृत्युः ॥८६

टीका—१५ तिथि, १२ मास १० अष्ट, ८ वेद, ४ संक्रांति के जितने दिन गये हों उनको मिलाकर ६ का भाग दे जो बचे तो पंचक जानिये। १५ में रोग पंचक, १२ अग्नि, १० में राज्य, ८ में चोर और ४ में मृत्यु पंचक जानना चाहिये।

पंचक देखने की दूसरी रीति

१।१०।१६।१८ में मृत्यु पंचक होते हैं। संक्राँति के जितने दिन हों उनमें ४ और जोड़ दे, फिर उसमें ६ का भाग दे, ५ वचे तो मृत्यु पंचक जानिये। जैसे संक्रांति का एक दिन गया, उसमें ४ और जोड़े तो पांच हो गये तो मृत्यु पंचक जानिये, और दश अंश गये हों तो उनमें ४ और जोड़े तो १४ हुए उनमें नौ का भाग दिया तो ५ बचे तो मृत्यु पंचक जानो, जो १६ दिन गये ४ और जोड़े २३ हुए उनमें ६ का भाग दिया ५ बचे मृत्यु पंचक जानो। जो २८ अंश गए ४ और जोड़े ३२ हुए ६ का भाग दिया ५ वचे तो मृत्यु पंचक जानो, रोग पंचक देखना हो तो १५ जोड़कर १६ का भाग देकर ५ बचे तो रोग पंचक जानो। अग्नि पंचक देखना हो तो १० जोड़कर ६ का भाग दे। और पंचक देखना हो तो ८ जोड़कर नौ का भाग दे।

एके मृत्यु द्वयोर्वन्हि श्चतुर्थे राज पंचकम्।
षष्ठे चौर अष्टमे रोग वाणमवं त्रिचारयेत् ॥१॥

टीका—संक्रांति का एक अंश जाने पर मृत्यु बान होता है। दूसरे पर अग्नि। चौथे पर राज। छठे पर चोर। आठवें पर रोग होता है।

रोग	अग्नि	राजा	चोर	मृत्यु	५ बाण
सूर्य	मंगल	शनिश्चर	शुक्र	बुध	बार
रात्री	दिन	दिन	रात्री	सन्ध्या	समय
उपनयम यज्ञोपवीत	भवन निर्माण	राजसेवा	यात्रा	विवाह	वर्जित

पंचक वर्जित देखना

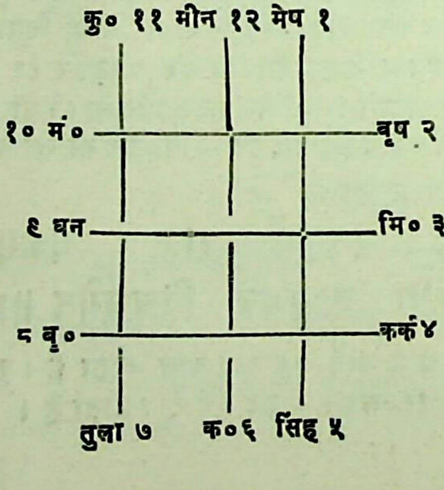
यद्यर्कवारे किल रोगपंचकं सोमे च राज्यं तिच्चिते च वन्हिः । सौरे च नृत्युर्धिषणे च चौरी विवाहकाले परिवर्जनीयः ।

टीका—रविवार को रोग पंचक, सोम को राज्य पंचक, मंगल को अग्नि पंचक, शनि को मृत्यु पंजक, भृगु को चोर पंचक, ये विवाह से वर्जित हैं।

रोगं चौरं त्यजेद्रात्रो दिवा राज्यग्निपंचकम् ।
उभयोः संध्ययोमृत्यु रन्यकाले न निन्दिता ॥

टीका--रोग, चार, पंचक, रात्रि को अशुभ हैं और राज्य, अग्नि, पंचक में दिन वर्जित है दोनों की सन्धि में पंचक निन्दित हैं।

क्रान्ति साम्य देखना



ऊर्ध्वास्तिस्त्रस्तिरस्त्रि- स्त्रा मध्ये मीनं लिखेद् बुधः । सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौ क्रांतिसाम्यं नि- गद्यते ॥ मीनः कन्य कया युक्तो मेषा सिंहे न संगतः ।

मकरेन वृषः क्रांतिश्चापोपि मिथुनेन च ॥
कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुंभयोः ।
क्रांतिसाम्ये कृतोद्वाहा न जीवित कदाचन ॥

टीका—क्रांतिसाम्य देखने की यह रीति है कि सूर्य चन्द्रमा पर रेखा पर हों तो उसे क्रान्तिसाम्य कहते हैं जैसे मोन राशि का सूर्य हो और कन्या का चन्द्रमा हो तो क्रान्तिमय होता है। मीन के सूर्य में जिस दिन कन्या का चन्द्रमा हो तो रोज क्रान्तिसाम्य होगा और कन्या के सूर्य में मीन का चन्द्रमा हो तो भी क्रान्तिसाम्य होगा। इसी प्रकार १२ राशियों का चक्र में समझें।

क्रान्तिसाम्य फलम्

क्रांतिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत् ।
कन्या वैधव्यतां याति ईशस्य दुहिता दि ॥

टीका—क्रान्तिसाम्य में विवाह हो तो शिव की कन्या हो तो भी विधवा हो अर्थात् क्रान्तिसाम्य में विवाह वर्जित है।

दग्धा तिथि देखना

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयो ।
मेष कर्कटयोः षष्ठी कन्या युग्मेषु चाष्टमी ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्ते तिथयो दग्धः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥
यः कश्चित्तिथयो दग्धा मुनिभिः कथितास्फुटाः ।
तिथिदग्धाँ कृष्णपक्षे शुक्ले चन्द्रेण रक्षति ॥

दग्धा तिथि चक्रम्

मीन के सूर्य में	वृष के सूर्य	मेष के सूर्य	कन्या के सूर्य	वृश्चिक	मकर के	सूर्य
धन के सूर्य में	कुम्भ के सूर्य	कर्क के सूर्य	मिथुन के सूर्य	सिंह के	तुला के	सूर्य
२	४	६	८	१०	१२	दग्धा तिथि

टीका—दग्धा तिथि कार्यों में वर्जित है। कुछ विद्वानों का मत है कि ये दग्धा तिथि कृष्णपक्ष में वर्जित है और शुक्ल पक्ष में शुभ है।

लग्न शुद्धि

केन्द्रे सप्तम हीने च द्विर्त्रिकोणे शुभाशुभम्।
धने शुभप्रदश्चन्द्रः पापाः षष्ठे च शोभना।
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याया फलप्रदा।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्यु वर—कन्ययोः॥

टीका—स्थान १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ में शुभ ग्रह हो तो श्रेष्ठ हैं। दूसरे स्थान चंद्रमा शुभ है। छटे स्थान पाप ग्रह शुभ है और ३।११ स्थान सब शुभ ग्रह होते हैं तथा सातवें स्थान सब ग्रह अशुभ होते हैं। शुक्ल पक्ष को पंचमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी पर्यन्त का चन्द्रमा श्रेष्ठ बली होता है कृष्ण पक्ष की छट से ३० अमावस तक का चन्द्रमा निर्बल होता है।

अथ ग्रहों का फल देखना

शनिः सूर्यश्च लग्नेस्ते चन्द्रो लग्नेष्टमे रिपौ।
कुजौ लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रे द्यूनेऽष्टमे रिपौ॥
गुरुमृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने सूर्य च सप्तमे।
बुधोऽष्टमे च यामित्रे विवाहे प्राणनाशकः।
क्रूरयोरंतरं लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत्।
वरं हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम्॥

टीका—शनि सूर्य लग्न से सातवें हों चन्द्रमा १।६।८ भौम १।८।७ शुक्र ७।८।६ बृहस्पति ८ राहु १।७।४ और बुध ८।७ ये ग्रह इन स्थानों में विवाह समय प्राण के नाशक हैं और क्रूर ग्रह के मध्य चन्द्रमा हो अथवा लग्न हो तो वर्जनीय हैं वर की शीघ्र ही मृत्यु का कारण है, चन्द्रमा कन्या की मृत्यु करता है।

लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्ठिकरा ग्रहाः।
तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः॥
चन्द्रो धने तृतीये च कुजः शष्ठे तृतीयके।
बुधेज्यौ ववषड्द्रित्रिः चतुः पंचदशे स्थितौ॥
शुक्रो द्वित्रिचतुः पंच धर्म कर्मतनुस्थित।
राहुर्दशष्टषट् पंचत्रिनवद्वादशे शुभः॥

टीका—लग्न से ग्यारहवें स्थान सब ग्रह शुभ हैं सूर्य और शनि ८।३ और चन्द्रमा २।३ भौम ३।६ बृहस्पति ६।६।२।३।४।५।१० शुक्र २।३।४।५।६। १० स्थानों में शुभ हैं। राहु केतु १०।८।६।५।६।१२ स्थानों में शुभदायक है १२वें स्थान में मार्गी ग्रह और दूसरे स्थान में वक्री हो तो कर्त्तरी दोष होता है। इसी प्रकार सब स्थानों पर जाने।

अथ गोधूलि देखना

यदा नास्तंगता भानुर्गोधूलिया पूरितं नभः॥
सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते॥

टीका—जब तक सूर्य अस्त न हो और गऊओं के खुर की धूल आकाश में पूरित हो तो, यह घड़ी सकल उत्तम कार्य में मंगल की दाता है।

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः।
गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषाः धूलिमुखाः स्मृता॥

टीका—ग्यारहवें दूसरे, तीसरे में चन्द्रमा होय तो उत्तम गोधूलि है अन्य स्थान में चन्द्रमा होने से धूलि मुख है।

कुलिकः क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशी।
तदा गोधूलिकस्त्याज्तः पंचदोषैश्च दूशितः॥

टीका—कुलिकयोग क्रांन्ति साम्य, लग्न में ६ और ८ चन्द्रमा हो तो गोधूलि लग्न में विवाह नहीं करना चाहिए लग्न ५ दोष से दूषित है। लग्न १०वे ८वे मंगल हो तो गोधूलि भंग हो जाता है इसमें वर को हानि होती है।

अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभोपि वा।
पश्यतोवा शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः॥

टीका—अंश का पति अर्थात नवांश का स्वामी अपने नवांश में हो, स्वामी का मित्र और शुभ ग्रह हो अथवा इनकी दृष्टि लग्न पर हो तो और दोषों को निष्फल करता है।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
मत्तमातंगयूथानां शतं हन्ति च केशरी॥

टीका—कुन्द्र स्थान १।४।७।१० स्थानों में बृहस्पति हो और सब अनिष्टकारक हो तो क्या कर सकते हैं। जैसे अकेले सिंह सैकड़ों हाथियों का समूह हन डारे ऐसे ही बृहस्पति सब दोषों को दूर कर देते हैं।

अथ त्रिबल विशेष मास फलम्

रविशशिविबुधेऽधे उच्चमे चाष्टवर्गे।
अधिकसुहृद्भेषु नूनमाहुर्मुनीद्राः॥
यदि रविवसुसस्थे तूर्यगेहः स्वरास्यात्।
हरति सकलदोषान् पाणिपीडे विशेषः॥

टीका—रवि गुरु चन्द्रमा का विशेष फल कहते हैं। सूर्य या गुरु चन्द्रमा उच्च के हो या अपनी राशि के हो या मित्रक्षेत्री हो तो १२।८।४ भी विवाह के विशेष सकल दोषों को हरते हैं।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांसे वर्गोत्तमे गुरुः।
रास्फाष्टतूर्यगोपीष्टां नीचारिस्थः शुभोप्यसत्॥

टीका—बृहस्पति उच्च का, अपनी राशि का मित्र की राशि या अपने नवांश का या वर्गोत्तमी हो तो १२।८।४ भी शुभदायक हैं। नीचे का शत्रु क्षेत्री हो तो शुभ भी अशुभ है।

अथ कन्यादान का लग्न देखना

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा रात्रौ च कन्या मिथुन कुलीरः । मृगस्तुलालीवधिरोपरान्हे संध्या सुकुब्जा घटधन्विमीनाः ॥

टीका—वृष, मेष, सिंह यह लग्न दिन में अन्धे हैं कन्या, मिथुन, कर्क यह रात्रि में अन्धे हैं। मकर, तुला, वृश्चिक अपरान्ह में बहरे हैं, धन, मीन, कुम्भ संध्या में कुबड़े हैं।

अथ लग्न फल देखना

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदा बधिरो लग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥

टीका—दिन में अन्धे लग्न में कन्यादान हो तो वर की हानि, रात्रि की लग्न में फेरे हों तो धन की हानि, बहरे लग्न में पाणिग्रहण हो तो दुःख हो, कुबेर लग्न में विवाह हो तो वंश विनाश करे।

अथ योग वर्जित लिख्यते

परिघार्द्धं व्यतीपातं वैधृति सकलं त्यज्येत् ।
विष्कुम्भे घटिकाः पच शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥
षट् गण्डे चातिगण्डे च नव व्याघातवज्रयोः ।
एते तु नवयोगाश्च वर्ज्या लग्ने सदा बुधैः ॥

टीका—ये नवयोग सिद्ध हैं। इनकी घड़ो विद्वानों ने वर्जित की हैं परिधि की ३० घड़ो और व्यतिपात, वैघृत सम्पूर्ण त्याग हैं। विष्कुम्भ की ५, शूल की ७, गंड अतिगण्ड को ६, व्याधाता को ९, वजू की ९ घड़ी शुभ काम में वर्जित हैं।

गोधूलि लग्न निर्णय

पिंडोभूतोदिनकृति हेमन्तर्तो स्यादर्धास्ते । तपन–

समये गोधूलिः। संपूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे लार्यादौ ॥

टीका—हेमन्त काल में जब सूर्य गोलाकार अस्त समय हो तब गोधूली लग्न होती है। तपन समय में ४ मास अर्धास्त सूर्य के समय वर्षा के ४ मास में सम्पूर्ण सूर्य के अस्त समय में गोधूलो जानो। सब कामों में शुभ है।

अथ योग फल देखना

व्यतीपाते भवेन्मृत्युर्गण्डान्ते मरणं ध्रुवम्।
अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गण्डके ॥
वैधव्यं वैधृती चैव विष्कुम्भे कामचारिणी।
वीर्यहीनोऽतिगण्डे च व्याधाते मृतवत्सका ॥
परिधे च भवेद्दासी मद्यमांसरता सदा।

टीका—व्यतिपात में विवाह करे तो वर की मृत्यु हो, और गण्डात शूल में करे तो दोनों कीमृत्यु हो, वज्र में करे तो आग लगे, गण्ड में करे तो रोग हो, वैधृत में विधवा हो, विष्कुम्भ में कामातुर हो, अतिगण्ड में धातुक्षय, व्याघात में मृतवत्सा, परिध में दासी हो और मांस मदिरा का सेवन करे, ये निषिद्ध योग हैं यह विवाह में वर्जित हैं।

कन्यादान में लग्न शुद्धि देखना

व्यये १२ शनिःखे १० ऽवनिजस्तृतीये ३ भृगुस्तनौ १ चन्द्रलखा न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्बौर्लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥

टीका—जिस लग्न में विवाह करना अभीष्ट हो उस लग्न से बारहवें स्थान में शनि, दसवें स्थान में मंगल तीसरे स्थान में शुक्र न हो। विवाह लग्न में चन्द्रमा और पाप ग्रहों का होना अशुभ है विवाह लग्नेश शुभ ग्रह और मंगल का आठवें भाग में होना अशुभ है। लग्न से सप्तम स्थान में

ग्रहों का न होना श्रेष्ठ है। सातवें स्थान में शुभ और पाप ग्रह अशुभ माने गये हैं।

नोट—विवाह पत्रिका में ब्राह्मण के यहां पंडित या मिश्र करके, क्षत्री के सिंह करके, वैश्य को लाला करके, शूद्र को चौधरी करके लिखे।

विवाह की पीली चिट्ठी लिखना

जननी जन्म सौख्यानां वर्धनी कुल सम्पदाम्।
पदवी पूर्व पुण्यानां लिख्यते पीत पत्रिका॥

स्वास्ति श्रीसर्वोंपमा योग्य सकलगुण निधान गंगाजल निर्मल यमुनाजल शीतल पवन पवित्र शुभचरित्र षट्कर्म सावधान शुभस्थान दिल्ली को श्रीमान लाला हेतराम व लाला हरसहाय जी व समस्त वाल गोपालन् को आगरा से एतानि योग लिखित लाला नैनसुखमल जी व समस्त बालगोलन् को राम राम वंचना। धत्र कुशलं तत्रास्तु। आगे वृत्तान्तं वाच्यं वर नाम चिरंजीव लाला हरीराम जी राशि कर्क सूर्यबल १० चन्द्रबल ११ कन्या, कन्या की राशि धन ६ गुरुवल ३ चन्द्रबल ६ अग्रे संवत् २०३१ बैशाख शुदी १३ गुरुवार को विवाह श्रेष्ठ है सो आप प्रमाण करना। शुभम्॥

जब चिट्ठी रह जाय लग्न लिखकर भेजें ५।७।६।१.।१५ दिन का शुभ वार शुभ तिथि चन्द्रमा देखकर लग्न लिखे।

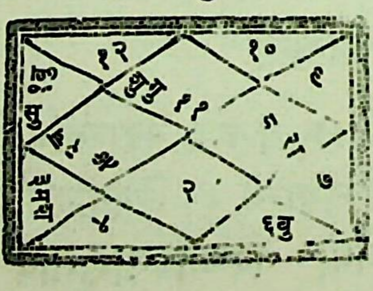
अथ लग्न लिखना

श्री गणेशाय नमः। ओ३म् यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति पर प्रधानं पुरुषं तथान्ये। विश्वोद्गतेः मारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।

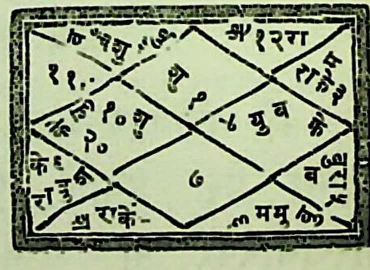
जननी जन्मसौख्यानां वर्धनी कुलसम्पदाम्। पदवी पूर्वं पुण्यानां लिख्यते लग्नपत्रिका ॥

अथ शुभ सम्वत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमा ॥ दित्यराज्ये सं० २०३१ शाके शालिवाहनस्य १८९६ मासाना मासोत्तमे मासे उत्तमे वैशाख मासे शुभे शुक्ल पक्षे शुभ तिथौ ३ तृतीया गुरुवासरे १२ घड़ी २८ पल रोहणीनाम नक्षत्रे ३८॥६ शोभननाम योगे ४४। ५४ गरनाम करणे० १२।२८ तत्र दिनमानं ३२।२१ रात्रिमानम् २७।३६ अहोरात्रयोएक्यन् ६०।०० तत्र मेषार्क गताँशाः १० शेषाशाः २० तत्रेष्टम् ५२।२० तत् समये कुम्भलग्नोदये एवं पंचांग-शुद्धौ वर नाम चिरंजीव हरीराम जी राशि कर्क सूर्यबल १० चन्द्र ३ कन्या की राशि ६ गुरुबल ३ चन्द्रबल ६ सूर्यबल चन्द्रबल गुरुबल त्रिबल सहितं लत्तादि दशदोषरहितं पाणिग्रहणं शुभम् मंगलं ददातु

॥ लग्न कुण्डली ॥



॥ लग्न कुण्डली ॥



अथ बान बैठाना

कोदण्डकण्ठीबृषकुम्भ पंच कन्याघटे मीनामेषे च सप्त ।
मृगालियुग्मे नवतल कर्कमन्यत्रतैलं पतिनाशनं च ॥

टीका—कोदण्ड धन कण्ठी अर्थात् सिंह वृष कुम्भ इनके ५ बान होते हैं। कन्या, तुला, मीन, मेष, इनके ७ बान होते हैं। मकर, बृश्चिक, मिथुन कर्क इनके ९ बान होते हैं और १३ बान नहीं होते। दिन का विचार कर कन्या की राशि से बान देख उससे दो बान वर के ज्यादा बढ़ा कर लिख दे जिस दिन बान करे वह दिन देख ले कौन से बार को बान करना अच्छा है।

तेल चढ़ाने के दिन

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुखं शनौ सुखम् ॥

टीका—रविवार को तेल चढ़ावे तो ताप, सोमवार को अच्छा, मंगल को कष्ट, बुध को धन लाभ, गुरु को धन हानि, शुक्र को दुःख शनि को सुख हो।

तेल दोष निवारण के उपाय

अर्के पुष्पं गुरौ दूर्वां भूमिपुत्रे रजस्तथा ।
भार्गवे गोमयं दद्यात् तैलाभ्यगो न दूषितः ॥

टीका—रविवार को तेल में फूल डाले, गुरु को दूर्वा, भौम को रज, शुक्र को गोबर से तेल का दोष दूर हो जाता है।

अथ कर्तरी दोष वर्जित

लग्नाच्चंद्राद् द्वयोर्द्विस्थः पापखेटो यदा भवेत् ।
कर्तरीवर्जनीयास्तु विवाहोपनयादिषु ॥
न कर्तरी यदा दोषः सौम्यः सूर्यादि जायते ।
शुभग्रहयुतो लग्नः क्रूरस्थो नास्ति कर्तरी ॥

टीका—चन्द्रमा से १२वें स्थान, दूसरे स्थान पाप ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। विवाह, यज्ञोपवीत में वर्जित है, इन स्थानों में सौम्य ग्रह हो तो दोष नहीं और क्रूर ग्रह हो तो भी दोषी नहीं माने।

अथ होलाष्टक देखना

शुक्लाष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्।
पूर्णिमावधि कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः॥
शतरूद्रा विपाशायामैरावत्याँ त्रिपुष्करे।
होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम्॥

टीका—फाल्गुन शुक्ला ८ से पूर्णमासी तक होलाष्टक होते हैं सो सत रुद्रा बिपाशा इरावती और त्रिपुष्कर नदी के तीर के देशों में विवाहादि और शुभ कार्यों में वर्जित है। अन्य देशों में नहीं है।

चन्द्रमा देखना

अर्केन्दुश्च वरे श्रेष्ठः कन्यायां न कदाचन।
वरस्य शुभदो नित्यं कन्यकाः पतिनाशनम्॥

टीका—विवाह में १२ चन्द्रमा वर को हों तो श्रेष्ठ हैं, कन्या को नहीं जो कन्या १२ चन्द्रमा हों तो पति का नाश हो।

सासू सुसरे का सुख

श्वश्रू सितोर्कः श्वशुरस्तनुर्जांमित्र यः स्याद्दयितो मनः शशि। एतद्बलं संप्रति भावयताँत्रिकस्तेषाँ सुख संप्रयदेद्विवाहतः।

टीका—शुक्र तो सासू और सूर्य सशुरा और लग्न शरीर और सप्त मेष भर्ता चन्द्रमा मन विवाह लग्न में जो ग्रह बलिष्ट होगा उसकी तरफ से सुख होगा जैसे शुक्र बलवान हो तो सासू को सुख रहे।

अथ गौना सुझाना

धातृयुग्मं हयोमैत्रं श्रुतिगुग्मं करत्रयम्।
पुनर्वसुद्वयंपूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम्॥

अथ गौना सुजाना

विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने ।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुलाधनुः ॥
भौमार्किवर्जिताः वारा गृह्यंते च द्विरागमे ।
षष्टी रिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिता ॥

रो०	मृ०	अश्व.	अनु०	श्र०	०	ये नक्षत्र गौने में शुभ हैं ।
ध०	ह०	चि०	स्वा०	पु०	०	ये नक्षत्र भी शुभ हैं ।
पुष्य	रे०	मू०	उ०३	तीनों	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं ।
माग०	वैशा०	फाल.	गुन	०	०	ये महीने शुभ हैं ।
१०	३	१२	२	७	६	ये लग्न शुभ हैं ।
६	१४	१४	६	२	३	ये तिथि त्याज्य हैं ।
मंगल	शनि०	०	०	०	०	ये वार वर्जित हैं ।

दोहा—इष्ट घड़ी छः गुनी करै, सूर्य अंश मिलाय ।
भाग तीस का देय के गई लग्न मिल जाय ॥

अर्थ—प्रथम इष्ट निकाल ले फिर इष्ट की घड़ी को ६ से गुणा करे जितने अंश गये हों वे मिलाकर ३० का भाग दे जितना आवे उसे जिस राशि का सूर्य हो उससे गिन ले जो लग्न आवे वह बीत गया जानना चाहिए ।

अथ मुहूर्त प्रकरण

तृतीय भाग

चन्द्रमा वास फलम्

अद्यः चन्द्रः श्रियं कुर्यात् मनस्तोष द्वितीयके। तृतीय धन सम्पत्ति चतुर्थे कलहागमः ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धि च षष्ठ सम्पत्तिरुत्तमाम्। सप्तमे राज सम्मानं मरणम् चाष्टमस्तथा। नवमो धर्मलाभं च दशमो मानसेप्सितम् एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानि मेव च ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
			कलहागमः	ज्ञान वृद्धि	उत्तम सम्पत्ति	राज सम्मान	मृत्यु भय	धर्म लाभ	मनोवांछित फल	सर्व लाभ	हानि करते हैं।

टीका -- अब कन्या और वर दोनों को चन्द्रबल कहा है। सो इस चक्र में ज्ञात कर लें।

चन्द्रमा मिलाना

कार्तिकक्काद् द्विगुणा मासा गताश्च तिथि संयुताः। सप्तविंशतिभिभक्ता विनता एकसंयुताः ॥

टीका—जिस दिन चन्द्रमा देखना हो आज किसका चन्द्रमा है तो कार्तिक के महीने से उस महीने तक गि.ने, जिस महीने में चन्द्रमा देखना है

जितने महीने गये हों उनका दुगना करे और पड़वा से गिन के एक तिथि उस रोज को जोड़े जिस रोज का चन्द्रमा देखे। हर महीने एक तिथि जोड़ के २७ का भाग दे बाकी जो अंक शेष बचे उसमें एक और मिलावे फिर अश्विनी से गिने गिनती से जो अंक आवे उसी नक्षत्र में चन्द्रमा माने।

जन्म का चन्द्रमा देखना

जन्मर्क्षस्थे शशांके तु पंच कर्माणि वर्जयेत्।
यात्रा युद्धं गृहारम्भे विवाहे चौरकर्मणि॥

टीका—जन्म के चन्द्रमा यात्रा, युद्ध, विवाह, हजामत, नये घर में प्रवेश करना वर्जित है।

अथ चन्द्रमा वास फलम्

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये। मिथुने तुलाकुम्भ सुपाश्चि मायां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्॥

अर्थ—१।५।९ के चन्द्रमा का पूर्व में, २।६।१० का दक्षिण में, ३।७।११ का पश्चिम में, ४।८।१२ का उत्तर दिशा में चन्द्रमा रहता है।

सन्मुखे अर्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे च धनक्षयत्।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत्॥

टीका—सन्मुख के चन्द्रमा में लाभ हो, पीठ पीछे में धन की हानि, दहिने चन्द्रमा सुख सम्पत्ति, बांये चन्द्रमा मृत्यु कारक होते हैं।

तीनों लोकों में चन्द्रमा वासफलम्

तिथिश्च त्रिगुणीकृत्य एकं च परमे लयेत्।
शिवनेत्रैर्हरेद्भागं शेषं चन्द्रं विधीयते॥

टीका—तिथियों को तिगुना करके उसमें एक और मिलावे शिव नेत्र जो तीन हैं उनका भाग दे फिर चंद्रमा वास देखें।

एकस्मिन् वसते स्वर्गे युग्मे पातालमेव च।
शून्ये हि मृत्युलोके तु चन्द्रवासः प्रकीर्तितः॥

टीका—एक बचे तो स्वर्ग में वास जानें, दो बचे तो पाताल में, शून्य बचे तो मृत्युलोक में।

पाताले चैव चन्द्रे च तंच कर्माणि वर्जयेत्।
तड़ागकूपवारि नास्ति अन्न नास्ति च मेदनी॥
यात्रायां कुशलं नास्ति पठने नास्ति अक्षरः।

टीका—पाताल में चंद्रमा का वास हो तो तालाब का बनाना, कुआ खोदने में जल नहीं हो, खेती लगाने में अन्न नहीं, यात्रा करने में कुशल नहीं और पढ़ने में अक्षर नहीं आवे।

यात्राकार्यम् प्रवेशे च प्रहरम्भे चकार्येत्।
कूपादौ तु विशेषेण सर्वकार्येषु शिक्षयेत्॥

टीका— यात्रा में, मकान बनाने में, कूप बावड़ी खोदने में, बाग लगाने में और जितने शुभ काम में चंद्रमा का बल देखे।

चन्द्रमा रंग वाहन देखना

मेषे वृश्चिके सिंहे रक्तकुँजरवाहनम्।
मिथुने युग्मे धनौ चैव पीतं तुरंग भवेत्॥
वृषे तुले कर्कटे च वाहनं वृषभस्मृतम्।
मकरे कुम्भे कन्यायां कृष्णं महिषं वाहनम्॥

चन्द्रमा रंग वाहन चक्रम्

मेष	वृश्चिक	सिंह	लाल रंग	वाहन हाथी
मिथुन	मीन	धन	पीला रंग	घोड़ा वाहन
वृष	तुला	कर्क	श्वेत रंग	बैल वाहन
मकर	कुम्भ	कन्या	काला रंग	भैंसा वाहन

घात चन्द्रमा देखना

मेषे आदि वृषे पंच मिथुने नवमस्तथा ।
कर्के ह्वौरसः सिंह कन्यायां दश वर्जिता: ॥
तुला त्रीणि अलौ सप्त धन वेदा मृगे वसुः ।
कुम्भे रुद्रोरविर्मीने घात चन्द्रः प्रकीर्तितः ॥

अथ घात चन्द्र चक्रम्

चन्द्र०	मे.	वृ०	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धन	म०	कु०	मीन
घात	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२

घात चन्द्रमा वर्जित

प्रयाणकाले युद्धे च कृषो वाणिज्यसंग्रहे ।
वादे चैव ग्रहारम्भे वर्जयैत घातचन्द्रकम् ॥

टीका—यात्रा, युद्ध, खेती, वाणिज्य, घर बनाने में घात चंद्रमा वर्जित है ।

घात चन्द्रमा फल

रोगे मृत्यु रणे भगो यात्रा काले च बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी घातचन्द्रफलं स्मृतम् ॥

टीका—घात चंद्रमा में बीमार हो तो मृत्यु हो, युद्ध में भंग हो यात्रा में बन्धन हो, विवाह में विधवा घात चंद्रमा का फल है ।

सन्मुख चन्द्रमा देखना

करणभगणदोषं वार संक्रांतिदोषम् ।
कुतिथि कुलिकदोषं यामयामार्द्ध दोषम् ॥
कुजशनिरविदोष राहूकेत्वादि दोषम् ।
हरित सकलदोषं चन्द्रमा सन्मुखस्थः ॥

टीका—करण नक्षत्र, वार संक्रान्ति, योग यामार्द्ध मंगल, शनि, राहु, रवि आदि दोषों को सम्मुख चंद्रमा दूर करता है।

पुष्य नक्षत्र फलम्

न योगीयोगं न च लग्नीलग्नम् न पारिका चन्द्र बलं गुरुश्च। न योगिनी राहुनबलिष्ठकालः एतानि विघ्नानि हरंति पुष्यः॥

टीका—योगिनी, चंद्रमा, तारा, गुरुबल और चंद्रमा भी अच्छा न हों, भद्रा, राहु ये भी अच्छे न हों परन्तु पुष्य नक्षत्र हो तो सब दोषों को दूर करता है।

सिंहो यथा सर्वचतुष्पादानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनां। चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथचसेऽपि सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये॥

टीका—सिंह चौपायों में बलवान होता है वैसे ही नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र बलवान है। चंद्रमा भी विरोधी हो और गोचर भी विरुद्ध हो तो पुष्य नक्षत्र में कार्य बिगड़ता। पुष्य नक्षत्र का किया काम सिद्ध होता है।

समस्तकर्मोचित्कालपुष्यो दुष्यो विवहे मद मूर्छितत्वात्। सहसृपुत्रप्रसवे न तस्मादिहापि मुक्तो भुवि लोकसंघैः॥

टीका—सब कार्यों में पुष्य नक्षत्र शुभ है परन्तु विवाह में अशुभ है क्योंकि ब्रह्मा ने अपनी पुत्री का विवाह पुष्य नक्षत्र में ही किया था सो पुत्री को देखकर वीर्य स्खलित हो गया इससे ब्रह्मा ने श्राप दे दिया। ये वार्ता वहां की है जहां साठ हजार बाल ऋषि पैदा हुए थे।

सिद्ध योग देखना

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगः प्रकीर्तितः॥

सिद्ध योग चक्रम्

वार	शुक्र	शुक्र	शनि	भोम	गुरु
सिद्ध तिथि	१—६—११	२—७—१२	४—९—१४	३—८—१३	५—१०—१५
योग	नन्दा	भद्रा	रिक्ता	जया	पूर्ण

मृत्यु योग

नन्दा सूर्ये मंगले च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

मृत्यु योग चक्रम

वार	र० म०	च० शु०	बु०	बृ०	श०
तिथि	नन्दा १—६—११	भद्रा २—७—१२	जया ३—८—१३	रिक्ता ४—१४—९	पूर्ण ५—१०—१५

पंचक देखना

धनिष्ठा पंचके त्याज्यं तृणं काष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा ग्रहीणां छादनं तथा ॥

टीका— धनिष्ठा आध को आदि लेकर, धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये पांच नक्षत्र पंचक के हैं इनमें तृण काष्ठ आदि संग्रह । दक्षिण को यात्रा, घर नहीं छावना, छत गेरना निषेध चाहिये ।

शुक्र अस्त के डूबने का फल देखना

वापीकूपतड़ागयज्ञमनं चौरं प्रतिष्ठाव्रतम् ।
विद्यामन्दिर कर्णवेधन महादानं गुरोः सेवनम् ॥

तीर्थस्नानविवाहवेदहवन-मन्त्रोपदेशा शुभः ।
दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावड़ी, कुआं, तालाव, बाग, यज्ञ, मकान गमन क्षोर, देवालय, मकान की प्रतिष्ठा, कान विंधवाना महादान, सुवर्ण का दान और गुरु सेवा, तीर्थ यात्रा, विवाह, देव हवन, नया व्रत, मंदिर बनाना, मुण्डन, जनेऊ, विद्यारम्भ और जो शुभ कार्य हैं सो शुक्र के और बृहस्पति के अस्त में नहीं करने चाहिएं।

शुक्र दोष परिहार निवारण

एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
विवाहे तीर्थयात्रायां शुक्रदोषो न विद्यते ॥

टीका—गांव के गांव में या शहर के शहर में दुर्भिक्ष में, राजविग्रह में, विवाह में, तीर्थयात्रा में, सम्मुख शुक्र का दोष नहीं मानना चाहिए।

पितृगृहे चेत्कुचेपुष्पसंभवस्त्रीणां न दोषः प्रति शुक्रसम्भवः । भृग्वंगिरोवत्सवशिष्ठ कश्यपात्रीणां भरद्वाज मुनेः कुले तथा ॥

टीका—जो पिता के घर स्त्री को कुच पुष्प अर्थात् रजस्वला हो तो शुक्र के अस्त व शुक्र के सम्मुख आने का दोष नहीं है जो स्त्री इन गोत्रों की हैं भृगु, अंगिरा, वत्स वशिष्ठ, कश्यप अत्रि, भारद्वाज इन ऋषियों के गोत्र वाली को भी आने जाने का दोष नहीं है।

चीज बेचने खरीदने का मुहूर्त

पूर्वा विशाखा भरणीषु कृतिका श्लेषासु व विक्रयणं शुवे दिने । चित्रांतिमः स्वातिशताशिववासवे श्रुतौ च वस्तुक्रयणं वरं भवेत् ॥

टीका—तीनों पूर्वा, विशाखा, भरणी कृतिका तथा शुभ दिन, शुक्र, गुरु, चंद्र, बुध इन वारों में वस्तु बेचना। चित्रा, रेवती, स्वाति, शतभिषा, अश्विनी, धनिष्ठा, श्रवण व नक्षत्रों में—बृहस्पति, शुक्र बुध वारों में खरीदना शुभ है।

अथ चन्द्र ग्रहण देखना

भानोः पंचदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।
पौर्णमास्याँ निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा १५वें नक्षत्र पर हो पूर्णमासी को चंद्र ग्रहण होता है और केतु चंद्रमा एक राशि पर हो तो चंद्र ग्रहण होता है ।

सूर्य ग्रहण देखना

माघो न ग्रस्तनक्षत्रात् षोडशं यदि सूर्यभम् ।
अमावस्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—मावस के दिन सूर्य चंद्रमा एक राशि पर हों और मावस के दिन सूर्य नक्षत्र और दिन नक्षत्र एक हों तो पड़वा की सन्धि में सूर्य ग्रहण होता है । सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिने उसमें से ११ निकाल दे शेष १६ नक्षत्र बचे तो निश्चित ही सूर्यग्रहण होता है ।

दोहा—चंद्र से रवि सातवें, रवि राहु एकन्त ।
पूनों में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्त ।।
रवि से राहु सातवें, शशि रवि हो एकन्त ।
मावस से पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़ंत ।।

ग्रहण का सूतक देखना

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयांत् पूर्व याम चतुष्टयम् ।
चन्द्रग्रहे तुय्यामस्त्रीन् बालवृद्धाऽतुरैर्विना ॥१

टीका—सूर्य ग्रहण से चार पहर पहिले और चंद्र ग्रहण से तीन पहर पहले सूतक लग जाता है । उस समय बालक वृद्ध और रोगियों के अतिरिक्त और को भोजन नहीं करना चाहिये ।

शुभ कर्मों में सूतक देखना

एकविंशति यज्ञेषु विवाहे दस वासरान् ।
श्राद्धे पाक नरिक्रया न दोषो मनुरब्रवीम् ॥

टीका—यज्ञ में २१ दिन पहले, विवाह में दस दिन और श्राद्ध में पकवान तैयार हो जाने पर कोई दोष नहीं है, परन्तु परिवार के लोग अलग रहें।

राशि गहता ग्रहण

ग्रासस्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदः सुनित्यं । त्रिकोणगो मध्यफलश्चन्द्रभात्प्रोक्ताः सुनिष्टश्च बुधैरुतु शेषाः ॥

टीका—जिस राशि पर सूर्य हो उससे अपनी राशि तक गिने जो ३, ८, ४, ११, उत्तम ५, ९, मध्यम १२, ७, १०, १, २, ६, ये अधम जैसी राशि हो वैसा फल जानो, ग्रहण होने के दिन से ३ दिन पहले के और ३ दिन पीछे के शुक्र डूबने के भी ३ दिन पहले के उदय से ३ दिन पीछे के सब कार्य वर्जित हैं।

चांद का निकलना छुपना

तिथि गुणितं रजनी परिमानं यम रहित सित कृष्ण विमिश्रम् । वाण शशांके विभाजित लब्धं प्रति दिवस चन्द्रोदयमस्तम् ।

टीका—जिस तिथि का चंद्रमा को निकलना व छिपना देखना हो उस तिथि को जितनी रात्रि हो उसे उसी तिथि के अंकों से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसमें कृष्ण पक्ष में २ जमा कर दे और शुक्ल पक्ष में २ घटादे, फिर उसे १५ से भाग दे जो लब्धि मिले कृष्ण पक्ष में उतनी रात्रि गये छिपेगा।

द्विपंचमे नवमे शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्रो हि उच्यते ।
अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥

टीका—किसी २ आचार्य का भी मत है कि २, ५, ९ शुक्ल पक्ष के चंद्रमा उत्तम हैं। ४, ८, १२ कृष्णपक्ष के चंद्रमा उत्तम हैं।

औषधि करने का मुहूर्त

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।

मैत्रे च मूले च शस्तंभेषज्कर्म प्रवदति संतः ॥

टीका—रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, ह चि, स्वा, श्र, घ श, ऽनु मू, मृ, इन नक्षत्रों में दवा करने से रोग दूर होता है।

घात प्रकार

घाततिथिर्घातवारं घातनक्षत्रलग्नकम्।
यात्रायां वर्जयेत् प्राज्ञैरन्यकर्म सुशोभितं॥

टीका—घात तिथि, घात बार, नक्षत्र घात, लग्न घात चंद्रमा इनको यात्रा में और शुभ कामों में वर्जित कर दे।

यात्रा मुहूर्त

यात्रायां दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः शुभो।
प्रष्ठतो द्वयमाख्यातम् चन्द्रमाः संमुखे शुभः॥

टीका—दाहिनी तरफ राहु योगिनी, बाँए ओर भद्रा, पीठ पीछे को, चंद्रमा सम्मुख शुभप्रद हैं।

सर्वदिग्गममे हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः।
सर्वसिद्धकरः पुष्यो विद्यायां च गुरूर्यथा॥

टीका—सब दिशाओं की यात्रा को नक्षत्र कहते हैं। ह०, रे०, अ०, श्र, मृ, पुष्य नक्षत्र सर्व सुख के देने वाले हैं और पुष्य अधिक शुभ है जैसे कि विद्या विषय में बृहस्पति शुभ है।

अथ हवन करने का मुहूर्त

सैका तिथिर्वारियुता कृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भूवि वन्हिवासः सौख्याय होमः शशियुग्मशेषे प्राणार्थ-नाशौ दिवि भूतले च।

टीका—तिथि वार को जोड़े एक और मिलावे और चार का भाग दे। ३ या शून्य बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में होता है सुख देने वाला है और १।२ बचे तो अग्नि का वास पाताल में है, प्राण और धन का नाशक है।

अथ ग्रह के मुख में आहुति जाना

तरणिविद्भृगु भास्करि चन्द्रमाः कुजगुरे ज्यविधुन्तुदकेतवः रविभतोदिन भंगणयेत्तथा प्रतिखगं तृतीयं तृतीय न्यरेत्

टीका—सूर्य के नक्षत्र से हवन दिन के नक्षत्र तक गिने। तीन-तीन नक्षत्र पर एक-एक ग्रह को बांटे जो शुभ ग्रह के मुख में आहुति जाय तो शुभ और पाप ग्रह के मुख में जाय तो अशुभ जानना। ३ नक्षत्र सूर्य के, ३ बुध के, ३ शुक्र के, ३ शनि के, चंद्रमा के ३, गुरु के ३, राहु तथा ३ केतू के हैं।

योगिनी देखना

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋतकोणगामिनी।
चतुर्दश्यां च षष्ठयां च पश्चिमायां च योगिनी।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती॥
दशम्याँ च द्वितीयायामुत्तरस्याँ शिवा भवेत्।
इशान्याँ दिशि चाष्टम्या योगिनी समुदाहृता॥

टीका—पड़वा और नवमी को योगिनी पूर्व में अग्नि कोण में ३।११ दक्षिण में ५।१३ नैऋत १२।४ पश्चिम में १४।६ वायव्य में १५।७ उत्तर में १०।२ ईशान में ३०।८ योगिनी वास रहता है।

योगिनी फल

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाँछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री न सन्मुखे मरणप्रदा।
मासस्य प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितीया कामकारिणी।

आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ।
पञ्चमी च श्रियायुक्ता षष्टी कलहकारिणी ॥
भक्षपान समायुक्ता सप्तमी सुखदा सदा ।
अष्टमी व्याधिदा नित्य नवमी मृत्युदा स्मृता ॥
दशमी भूरिलाभा स्याच्चैकादशी च हेमदा ।
द्वादशी प्राणसंदेहो सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥
पौर्णिमासाममायाँ च प्रस्थानं नैव कारयेत् ।
तिथि क्षये च मासान्ते ग्रहणान्टे दिनत्रयम् ॥

टीका—यात्रा में बाँये योगिनी सुखदायक है पीछे को मनोकामना देने वाली है । दाहिने हानिकारक है सन्मुख की मृत्यु करती है । महीने के शुरू की पड़वा श्रेष्ठ है । २ काम काज में उत्तम है । आरोग्यप्रद । ४ क्लेश वाली । ५ लक्ष्मीप्रद । ६ कलहप्रिय । ७ भोजनप्रद । ८ व्याधिप्रद । ९ मृत्यु प्रद । १० लाभप्रद । ११ स्वर्गप्रद । १२ प्राण सन्देह । १३ सर्वसिद्धप्रद । १४ अवश्य त्वाज्य है । १५।३० और तिथि घटने के दिन मासान्त में कहीं बाहर गांव न जावे गहणान्तर अन्त के तीन दिन त्याग करे ।

काल विचार

आदित्य उत्तरे कालं सोमे वायव्यमेव च ।
भौमे च पश्चिमे कालं बुधे नैऋतमेव च ॥
गुरुश्च दक्षिणे कालं शुक्रो हानिस्तथव च ।
शनौ पूर्वे तथा कालं एवं कालाः प्रकीर्तिताः ॥

काल-चक्र विचार

रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैऋत	दक्षिण	अग्नि	पूर्व

काल का वास दिशा में रहता है उस दिशा में न जाय ।

यात्रा वार फलम्

ताम्बूलं रविवारे च सौमे ओदनमेव च ।
भौमे धात्रिफलं भक्ष्यं बुधे मिष्टान्न भोजनम् ॥
गुरौ तु दधिसंयुक्तं शुक्रे तु तीक्ष्णमेव च ।
आमिषं शनिवारे तु कृत्वा यात्रा व्रजेन्नरः ॥

रविवार	चन्द्रवार	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनिवार
पान	भात चावल	आंवला	मीठा	दही	चरपरा	उड़द

जिस वार में यात्रा को जाय यदि यह चीज खाकर जाय तो शुभ है।

दिशा शूल देखना

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशां गुरौ ।
सूर्य शुक्रो पश्चिमाञ्च बुधे भौमे तथोत्तरे ॥

टीका—शनिश्चर को और सोमवार को पूर्व में दिशाशूल जानो बृहस्पति को दक्षिण में। रवि और शुक्र को पश्चिम में बुध और मंगल को उत्तर में दिशाशूल जानिये। यात्रा समय से त्यागना चाहिये।

दिशाशूल-परिहार

सूर्ये वारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सौमे पयस्तथा ।
गुड़मंगयवारे च बुधवारे तिलानपि ॥
गुरुवारे दधिज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान् भुक्त्वा शनिवारे शूलदोषोपशांतये ॥

टीका—रविवार को घी पीकर जाय। चन्द्र को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दही, शुक्र को जौ, शनिश्चर को उड़द खाकर यात्रा करे तो दिशाशूल का दोष शांत होता है।

अथ राहु विचार

रविवारे च नैर्ऋत्यां सोमे उत्तरमेव च ।
आग्नेयाँ मंगल चैव बुधे पश्चिमेव च ॥
गुरौ ईशानकं प्रोक्तं शुक्रे दक्षिणमेव च ।
शनौ वायव्यकोणेषु एवं राहुः प्रकीर्तितः ॥

रविवार	चन्द्रवार	मंगल	बुधवार	बृहस्पति	शुक्रवार	शनिवार
नैर्ऋत	उत्तर	अग्नि	पश्चिम	ईशान	दक्षिण	वायव्य

अथ रवि विचार

यामे युग्मे च रात्रौ च यामे पूर्वादिगोरिवीः ।
यात्रास्मिन्दक्षिणे वामे प्रवेश पृष्ठके द्वयम् ॥

टीका—पहर रात्रि रहे पहर दिन चढ़े तक सूर्यनारायण पूर्व में। फिर दोपहर दक्षिण में। फिर एक एक पहर दिन रहे से एक पहर रात्रि गये तक पश्चिम में फिर दोपहर गये उत्तर में। यात्रा दाहिने बांये शुभ है। गृह प्रवेश में सम्मुख और पीठ पीछे शुभ है।

अथ गर्भाधान मुहूर्त

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभके ।
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥

टीका—त्रिकोण ५।९ केन्द्र १।४।७।१० इन स्थानों में सौम्य ग्रह हो और ३।६।११ इनमें पाप ग्रह हो तो ऐसे लग्न में और रजो-धर्म से अर्थात् ६।८।१०।१२।१४।१६ युग्मरात्रि में पुत्र की इच्छा से स्त्री प्रसंग करे।

नाम धरने का मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयेहस्तत्रये मैत्र द्वये मृगे ।

मूलोत्तराधनिष्ठः स्युः द्वादशैकादशे दिने ॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयोः ।
भानौ गुरौ स्थिरे लग्ने बालनामकृतं शुभम् ॥

टीका—पुनर्वसु पुष्य, हस्त चित्रा, स्वाति अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिर मूल, उत्तरा, तीनों धनिष्ठा; ये नक्षत्र और ११।१२ दिन बुध चंद्रमा रवि गुरु इन वारों में और २।५।८।११ इन लग्नों में बालक का नाम रखे।

प्रसूती स्थान वर्जित मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मूलामाद्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥
सोमाः शुक्रो बुधो नारीप्रसूतिस्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथित्त्रयम् ॥

टीका—पुनर्वस, पुष्य चि, वि, भ, कृ, पु, आ, म, श्र ये नक्षत्र प्रसूति स्नान में वर्जित हैं। सोम, शुक्र, बुध ये वार वर्जित हैं। १।५।६।६।३० ये तिथि वर्जित हैं। इनमें प्रसूति स्नान करे।

शुभ प्रसूति स्थान

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वात्यनुराधयोः ।
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठायाँ मृगशीर्षके ॥
एतान्युक्तानि वैभानि प्रसूतिस्नानकोविदैः ।
वारे भौमार्कयोः जीवे स्नानं शुक्तं सदैव हि ॥

टीका—रोहणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल स्वाति, अनुराधा धनिष्ठा, तीनों पूर्वा ज्ये० मूल, ये चौदह नक्षत्र और मंगल, गुरु, रवि, ये वार प्रसूति स्नान के लिए शुभ हैं।

कुआ पूजने का मुहूर्त

मूलादितो द्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।

जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥

टीका—मूल, पूर्वाषाढ, श्रावण मृगशिरा हस्त ये नक्षत्र शुभ हैं शुक्र, शनि, रवि, भौमवार, त्याग के हैं प्रसूति का कूप जलाशय का पूजन उत्तम है शुभ तिथि होनी चाहिए।

स्त्री नवीन वस्त्रधारणम्

हस्तादिपंचकेऽश्विन्याँ धनिष्ठायां च रेवती।
गुरौ शुक्रेबुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥

टीका—हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा रेवती, गुरु, शुक्र, बुध वारों में स्त्रियों को नये कपड़े पहनने चाहिए।

पुरुष नवीन वस्त्र धारणम्

लग्ने मीने च कन्यायाँ मिथुने च वृषः शुभः।
पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥

टीका—मीन, कन्या, मिथुन, वृष इन लग्नों में और रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में पुरुष नवीन वस्त्र पहने।

नवान्न भोजन व वस्त्र का मुहूर्त

नवान्नभोजनं गाह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः।
वाराधिकौ सूर्यभौमो नक्षत्रं श्रवणो मृगः ॥

टीका—नवीन अन्न का भोजन, नवीन वस्त्र धारण को मंगल रविवार और श्रवण मृगशिरा नक्षत्र उत्तम हैं।

अन्नप्राशन मुहूर्त

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणो यमः।
नक्षत्राणि परित्यज्य वारे भौमार्कनन्दनौ ॥
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्वनन्दास्तु वर्जिताः।
लग्नेषु च झषो ग्राह्योवृषः कन्या च मन्मथः ॥
शुक्ले पक्षे शुभे योगे संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः।

मासे सृष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियोमासि च पंचमे ॥

टीका— बालक के अन्नप्राशन नक्षत्र वर्जित है तीनों पूर्वाश्लेषा, आर्द्रा शतभिषा भरणी रेवती ये नक्षत्र और भौम शनि ये वार १२।७।४।९।१४।३०।१।६।११ ये तिथि सब वर्जित हैं और मीन, वृष, मिथुन, कन्या ये लग्न शुभ हैं और शुक्ल पक्ष विषय उत्तम शुभ योग में कीजे और शुभ चन्द्रमा हो छटा और आठवां मास पुत्र के अन्नप्राशन में श्रेष्ठ हैं और कन्या को पांचवे मास में शुभ है।

अथ चूड़ाकर्म मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम् ।
हस्तत्रय च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥
लग्नं गोस्त्रीधनुः कुम्भौ मकरौ मन्मथस्तथा ।
सौम्यवारे शुभे योग चूड़ाकर्म स्मृतं बुधैः ॥

टीका— पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा हस्त चित्रा, स्वाति ये नक्षत्र और शुक्ल पक्ष उत्तरायण सूर्य और वृष, कर्क कुम्भ, धन, मकर, मीन ये लग्न चन्द्र बुध, शुक्रये वार शुभ हैं जन्म मास और रिक्त तिथि ये चूड़ाकर्म और भूषण में वर्जित हैं।

अथ मुन्डन मुहूर्त

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्य मृगपंचमे ।
मूले पोष्णे च नक्षत्रे बुधाऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥

टीका—हस्त से तीन ह० चि० स्वा०, श्र० ध० पू० तीनों मृगशिर आ० पुन० पुष्य श्ले० मू० रे० नक्षत्र और रवि बुध शुक्र गुरु ये वार हैं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

देवोत्थाने मीने चापे लग्ने वर्षे च पंचमे ।
विद्यारम्भात्र वर्ज्यश्च षष्ठ्यनध्यायरिक्ताकाः ॥
रिक्तायां च अमावस्यां प्रतिपच्च विवर्येत् ।
बुधेन्दुवासरे मूर्खः शनिभौमौ मृतिपदः ॥

विद्यारम्भे गुरु श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ।
बुधे सोमे च विद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत् ॥

टीका—देवोत्थान कहिये कार्तिक शुक्ला ११ से आषाढ़ शुक्ला १२ तक और मीन, धन, ये लग्न पांचवे वर्ष में विद्या पढ़ाना आरम्भ करना चाहिये। ६ अमावस्या १।९।३।१४ ये तिथि वर्जित हैं। बुध सोम में विद्या आरम्भ करे मूर्ख हो गुरुवार श्रेष्ठ है शुक्र रवि मध्यम हैं. बुध सोम में विद्या को करे हैं शनि भौम सर्वत्र त्याज्य हैं। ह० चि० स्वा० श्र० ध० तीनों पूर्वा, अ० मृ० आ० पु० पु० अश्ले० मू० रे० ये नक्षत्र शुभ हैं।

अथ यज्ञोपवीत मुहूर्त

पूर्वापाढाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये।
ज्येष्ठा भगे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥
द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यां दशमीत्रये।
सूर्ये शुक्रे ग्रहो चन्द्रे बुधे पक्षे तथासिते ॥
लग्ने वृष धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
वृतबन्धे शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रिविशापते ॥
पापौ भौमाशनी केतुः क्रूरराहुरवी त्यजेत्।
सोम्यसोमौ बुधश्चैव गुरु शुक्रौ तथा शुभौ ॥

टीका—पूर्वापाढ अ० ह० स्वा० श्र० शत ज्ये० पूर्वा फा० मृ० पुष्य रे० उत्तरायण सूर्य,२।३।५।१०।११।१२।१३ ये तिथि रवि शु० गु० बुध सोमवार शुक्लपक्ष और वृष, धन, सिंह, कन्या मिथुन ये लग्न और भौम शनि केतु राहु ये ६।८।१२ हों बुध, चन्द्र शुक्र, गुरु ये शुभ स्थान में हों। इन शुभ योगों में जनेऊ ले। तीनों वर्ण के जुदे जुदे भेद कहे हैं।

ब्राह्मण को गर्भ से पांचवे में या ८ वें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये क्षत्रिय को छठे व ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य को आठवें व बारहवें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। अगर किसी कारण से यह समय व्यतीत हो जाय तो फिर १६ वर्ष में ब्राह्मण को और २२ वर्ष में क्षत्रिय

को २४ वर्ष में वैश्य को यज्ञोपवीत लेना लिखा है वर्षों के बीत जाने पर गायत्री का अधिकारी नहीं रहता है।

कर्ण छेदन मुहूर्त

श्रुतित्रिये द्वितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे।
भगे विधि युगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे॥
द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षे च युगलं त्यजेत्॥

टीका - श्र० ध० श० पुष्य पु० अनु० ह० तीनों उत्तरा पूर्वा फाल्गुनी रो० मृ० मू० रे० अ० नक्षत्र और सौम्यवार च० बु० गु० शु० ये वार शुभ हैं और मिथुन धन, कन्या मीन, कुम्भ ये लग्न शुभ हैं बैशाख फाल्गुन मृगशिर माघ ज्येष्ठा आषाढ शुभ हैं और १।३।५।७ ये वर्ष शुभ चैत्र पौष आषाढ शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक और सम वर्ष २।४।६।८ त्याज्य हैं। जन्म से १२ वें दिन अथवा ६, ७, ८, महीने विषय वर्ष अति शुभ हैं।

नींव धरने का मुहूर्त

पूर्वाषाढादितीद्वय विधियुग्मे करत्रयम्।
उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रये मूले च रेवती॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहकन्याघटोवृषः।
मिथुनोमकरो ग्राह्यो वास्तु कर्मणि कोविदैः॥
श्रावणश्चैव वैशाखः कार्तिकफाल्गुनस्तथा।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गन्डके।
विष्कुम्भे परिघौ वज्रौ वारे भौमे च भास्करे॥

टीका—पूर्वाषाढ, पुनर्वसु, पुष्य मृगशिर, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा उत्तर फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, ये नक्षत्र सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन, मकर ये लग्न, चन्द्र, बुध, गुरु ये

वार, श्रवण, वैशाख, कार्तिक फाल्गुन, मार्गशीर्ष शुभ हैं। वज्र व्याघात शुक्ल, व्यतिपात, गंड, विष्कुम्भ, परिध ये योग और मंगल, रवि ये वार त्यागकर घर की नींव रखे और बाग लगायें।

वापी कूप देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

आर्द्रा शतभिषाऽश्लेषा विशाखा भरणी द्वयम् ।
त्याज्या च द्वादशीरिक्ता षष्ठीचेंदुक्षयोऽष्टमी ॥
प्रतिपच्चतिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥

टीका—वावड़ी, कुआं, तालाव, देवता इनकी प्रतिष्ठा आर्दा, शतभिषा विशाखा, भरणी, कृतिका, ये नक्षत्र ।१२।३०।८।६।४।६।१४ ये तिथि और शनि मंगल ये वार छोड़दे शेष शुभ हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ ये लग्न शुभ हैं उत्तरायण सूर्य हो और चन्द्रमा बली हो रवि चन्द्र बुध गुरु शुक्रवार भी शुभ हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त

विशाखा भरणी हेयोऽश्लेषाख्या च मघा तथा ।
अमावस्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ॥
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
आश्विने च स्थिरे लग्ने ग्राह्यः पक्षो बुधैः स्मृत ॥

टीका—विशाखा, भरणो, अश्लेषा, मघा, ये नक्षत्र ३०।४।६।१५ ये तिथि भौम, रवि ये वार, गृह प्रवेश विषय है वर्जित हैं। वैशाख और श्रावण फाल्गुन, आश्विन ये महा वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ ये स्थिर लग्न और शुक्ल पक्ष चन्द्रमा शुक्र गुरु, बुध, शनि ये वार इनमें गृह प्रवेश उत्तम है।

अथ क्षौर कर्म मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मे करत्रयम् ।
रेवतीद्वितीयं ज्येष्ठा मृगशीर्ष च गृह्यते ॥

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कृतिका वारा भानुर्भौमशनैश्चराः ॥
रिक्ताषष्ठ्यष्ठमी हेया क्षौरे चन्द्रक्षयान्निशि ।
संध्याविष्टश्च गंडांते भोजनाते च गोगृहे ॥

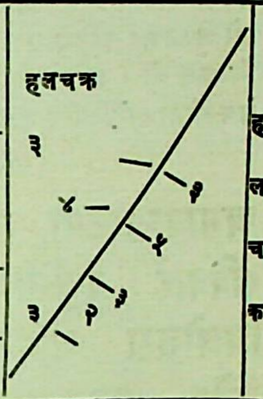
टीका—पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वास्ति, रेवती अश्विनी, ज्येष्ठा, मृगशिर ये नक्षत्र शुभ हैं और बाकी प्राणहर्ता हैं, तिन्हें त्याग के मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा कृतिका और भौम शनि रवि, ये वार ४, ६, ८, १४, ३० ये तिथि और संध्या के समय और गांत नाम मूल आदि नक्षत्र और भद्रा में भोजन करके और गोशाला में भी क्षौर कर्म न करे ।

अथ हल चलाने का मुहूर्त

अनुराधा चतुष्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वाति श्रुतिर्विधिद्वन्द्वे रेवत्यामुतरात्रयम् ॥
गोस्त्री झषे हलंकार्यम् हेयाः सूर्यः शनिः कुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्यय पूर्वं च ॥
त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंच त्रिभिः पंच त्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिमभं यावद्धानिवृद्धिर्हले क्रमात् ॥

टीका—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ, मघा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरः, रेवती तीनों उत्तरा ये नक्षत्र हल चलाने को शुभ हैं । वृष, कन्या, मीन ये लग्न लीजे और रवि शनि मंगल यह वार ६।४।१४।६।१२।२।१५।३० यह तिथि व्यतीपात योग त्याज्य है और सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनिए सो इस क्रम से हल चक्र में समझ लीजिए प्रथम तीनों में हानि फिर दूसरे तीन में वृद्धि फिर हानि इस प्रकार से हल चक्र में समझ लीजिए ।

अनु०	ज्ये०	मू०	पू०	म०	पु०	पु०	ह०
स्वा०	श्र०	रो०	मृ०	उ०	रे०	नक्षत्र	शुभ
२	६	१२	लग्न	उत्तम	च०	बुध	बृ०
शु०	वार	१३	५	७।८	१०११	१२	ति०
३	३	३	५	३	५	३	२
हा०	बृ०	हा०	बृ०	हा०	बृ०	हा०	बृ०



सब चीजों का मुहूर्त

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्ठभाजितम् ॥
आदि शून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांके विजयी भवेत् ॥

टीका—तिथि वार नक्षत्र और नाम के अक्षर सबको जोड़े फिर उनको दुगुने करके ६ का भाग दे फिर तिगुना करके ७ का भाग दे फिर उनको चौगुना करके ८ का भाग दीजिए जो प्रथम जगह में शून्य आवे तो हानि हो । मध्य में शून्य हो तो शत्रु भय, अन्त में शून्य हो तो शत्रु हो और जो तीनों में शेष अंक बचे तो विजय होय ।

अथ स्वर विचार देखना

शशिप्रवाहे गमनादिस्तं सूर्यप्रवाहे न हि किंचनापि ।
प्रष्टुर्जः स्याद्बहुमानभागेरिक्ते चभागेविफलसमस्तम् ।
दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सम्मेखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं शोधयेच्चास्तगः शुभम् ॥

टीका—जो चन्द्र स्वर कहिये बायां चले तो यात्रा कीजे और सूर्य स्वर कहिए दाहिने चले तो अशुभ है और गणित कहिये बताने वाले का

प्रच्छक कहिए पूछने वाले का एक स्वर चलता होय तो सब काम सिद्ध हों जो शुम्मणा कहिये एक का सीधा और दूसरे का उल्टा चले तो सब काम निष्फल हों। दक्षिण से यात्रा में जो शुक्र दाहिने हो तो दुख हो तो सन्मुख नेत्र पीड़ा करे, और बांये पड़ें तो शुभ है।

अथ पशु विक्रय मुहूर्त

अमावस्यष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी।
रविवारें वर्जनीयः पशूनां च विनिर्गमः॥
चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणेपि विवर्जितः।
एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत्॥

टीका—३०।८।१५।१४ ये तिथि, रविवार और तीनों उत्तरा श्र० चि० रो० ये नक्षत्र पशु के देने में वर्जित हैं। इनसे अन्य में दीजिये।

पशु बेचने व खरीदने का मुहूर्त

पुष्यं भाद्रपदायुग्मं मैत्रं श्रवणमश्विनः।
हस्तोत्तरामृगस्वातिस्तथा श्लेषा च रेवती॥
ग्राहयाणीभानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः।
चन्द्रभार्गवजींवे च वारे शकुनमत्तमम्॥

टीका—पुष्य, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद अनुराधा, श्रवण अश्विनी हस्त, उत्तरा तीनों, मृगशिर, स्वाति श्लेषा, रेवती ये नक्षत्र खरीदने, बेचने में शुभ हैं और चन्द्रमा शुक्र, गुरु ये वार और शुभ शकुन देखिये तब गाय भैंस, घोड़ादि और पशु लीजिए और बेचिए।

मन्त्र उपदेश करने का मुहूर्त

मन्त्रस्वकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम्।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम्।
आषाढ़े बन्धुनाशः स्यात् श्रावणे नु शुभावहम्।
प्रज्ञानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने॥

टीका—अब मंत्र दीक्षा लेने का शुभाशुभ कहते हैं। जो चैत्र मास में दीक्षा लेवे तो बहुत दुःख पावे बैशाख में लेवे तो रत्न लाभ, ज्येष्ठ में लेवे तो मृत्यु हो आषाढ़ में भाई का नाश, श्रावण में लेवे तो शुभ हो, भाद्रपद में लेवे तो सन्तान का नाश और आश्विन मास में मंत्र दीक्षा लेवे तो अनन्त सुख को प्राप्त हो।

कार्तिके वृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदः।
पौषे तज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनम्॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम्।
दीक्षाकर्मफलं मासे श्वेतेषु च शुभाशुभः॥

टीका—कार्तिक मास में मन्त्र दीक्षा ले तो धन की वृद्धि हो, मार्गशीर्ष में लेवे तो शुभ हो, पौष में ज्ञान हानि हो, माघ में ज्ञान की वृद्धि हो, फाल्गुन में मंत्र लेवे तो सौभाग्य और वंश बढ़े।

गांव में या नगर में रहने का मुहूर्त

ग्रामनाम्नो भवेद्दत्तं तदाद्याः सप्त मस्तके।
पृष्ठे सप्त हृदे सप्त पादयोः सप्त तारकाः॥
मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम्॥

टीका—जिस गांव में या शहर में बसना चाहे उस गांव के नाम के अक्षर से नक्षत्र कर लीजे। जो नक्षत्र गांव का पावे उसके पहले प्रथम नक्षत्र पर्यन्त अट्ठाइस जानिए उसमें से गांव का नक्षत्र आदि लेके सात नक्षत्र गांव के माथे पर दीजे और सात पीठ पर, ७ हृदय पर, ७ पांवों पर, तब अपने नक्षत्र से देखिए, जो माथे पर पड़े तो वंश में धनी हो, सम्मान पावे। पीठ पर हानि, हृदय पर सुख, पांवों पर गिरे तो पर्यटन पावे।

अथ रोगी स्नान मुहूर्त

लग्न घरे सूर्य कुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले

च हीने केन्द्रत्रिकोणायमते च पापे स्नानं हितं रोग-विमुक्तिकानाम् ।

टीका—१।४।७।१० ये लग्न रवि, मंगल, बृहस्पति ये वार हों और रिक्ता ४।९।१४ तिथि और चन्द्रमा बल हीन हो और १।४।७।१० ये केन्द्र स्थान हैं । इसमें और त्रिकोण ९।५ और ११ वें पाप ग्रह हो तो रोगी को रोग के जाने पर स्नान करावे ।

मघोत्तराब्रह्म भुजंग पौष्णैः पुनर्वसुस्वाति विहीन भेषु । रिक्ताभिः हीने हिमागो च शुक्रे बुधे वारे स्नानमरोगजन्तोः ।

टीका मघा उत्तरा तीनों रोहिणी, श्लेषा, रेवती, पुनर्वसु स्वाति, इनका त्याग करना रिक्त तिथि ४।९।१५ इनको त्यागकर, चन्द्रमा, शुक्र बुध, ये वार त्याग करना और नक्षत्रों और में वारों में रोगी स्नान करें । बाद में यथाशक्ति ब्रह्म भोज करें ।

यात्रा का मुहूर्त

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ।
अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यम् जनार्दनः ॥

टीका—गर्ग मुनि का तो वाक्य है कि ५ घड़ी रात रहे यात्रा करें और बृहस्पति जी का वाक्य है कि सुगन देख के यात्रा करें अंगिरा ऋषि का वाक्य है कि जब मन में आनंद हो तभी यात्रा करें और जनार्दन का यह वाक्य है कि ब्राह्मण की आज्ञा लेके यात्रा करें तो शुभ है ।

प्रस्थान करना

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिके तथा सर्व स्वर्णधान्यवरादिकम् ॥

टीका—ब्राह्मण को तो जनेऊ धारना चाहिए, क्षत्री को शस्त्र, वैश्य को मीठा, शूद्र को फल और जातियों को अन्न या सोना, प्रस्थान उसे कहते हैं कि यात्रा करने के दिन नहीं जाना हो तो पहले दिन कुछ चीज दूसरे के यहां धर दे ।

यात्रा के समय शकुन देखना

इन्धनं च तथांगारं गुडं सर्पिस्तथाऽशुभम् ।
अभक्तो मलिनोमन्दः तथा नग्नश्च ब्राह्मणः ॥

टीका—यात्रा में घर से निकलते ही लड़की, अग्नि, गुड़, घी, नग्न तेल, फकीर, हीजड़ा, छींक, ब्राह्मण खाली माथे, बैल, ईंट पत्थर, भुस, कपास, घास ये अशुभ हैं।

अच्छे शकुन देखना

श्रुतिविप्रनिनादश्च नद्यावर्तः सकौतुकः ।
सुभगा स्त्री शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥

टीका—वेद पढ़ते ब्राह्मण, गाना गाती या नाचती वैश्या, गौ, हाथी, धींवर, भरा हुआ जल का घड़ा या मशक भरी हुई, भंगी मरा हुआ, बाजा घण्टा बजता हुआ, फल और हार, माली, मोतियों की या फूलों की माला पहरे कन्या, स्त्री सुहागन गोद भरी हुई, ये शकुन शुभदायक हैं।

अनुराधात्रयं हस्तो मृगाश्वो दितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निद्यार्द्राः भरणीद्वयम् ॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥
लग्नं कन्या मन्मथश्यच मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥

टीका—अनुराधा, ज्येष्ठा मूल, हस्त, मृगशिर, अश्विनी, पुष्य पुनर्वसु रेवती, आर्द्रा, भरणी, कृतिका मघा, उत्तरा, तीनों विशाखा, श्लेषा, ये शुभ हैं। शेष नक्षत्र मध्यम हैं ६।४।६।१२।१४।३०।१५ ये तिथि और व्यतीपात योग वर्जित हैं। कन्या, मिथुन, तुला, मकर ये लग्न शुभ हैं। चन्द्रबल, शकुन से यात्रा करें।

नित्य दशा देखना

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेष दिनदशोच्यपे ॥
रविश्चन्द्रो भौमराहु गुरुमन्दज्ञके हितौ ।
क्रमेण सादिशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि ॥

टीका—तिथि वार, नक्षत्र, नाम के अक्षर सब इकट्ठा करके ६ से भाग दे। १ बचे तो सूर्य की २ बचे तो चन्द्रमा, ३ रहे तो भौम की ४ रहे तो राहु की। ५ बचे तो गुरु की ६ बचे तो शनि की। ७ बचे तो बुध की। ८ बचे तो केतु की शून्य बचे तो शुक्र की फल वर्ष की मुग्धा के समान है।

जन्म तारा चतुर्गुण्या तिथि वारसमन्वितम्।
अष्टभिस्तु हरद्भागं मेषांके च दशा स्मृता॥
रविचन्द्रकुजज्ञाश्च गुरुशुक्रशनिः क्रमात्॥
शून्यशेषे यदा जातो राहोरपि दशा स्मृता॥

टीका—जन्म नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिने फिर चौगुना कर तिथि वार मिलावे आठ का भाग दे जो १ बचे तो रवि २ से चन्द्रमा, ३ तो भौम, ४ तो बुध, ५ तो गुरु ६ तो शुक्र, ७ तो शनि शून्य राहु और केतु की दशा जाननी चाहिए।

चौखट का मुहूर्त

सूर्यर्क्षाद्युगभैः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोणभैः।
नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत्॥
देहल्यां गुणभैः मृतगृहपतेर्मध्यस्थितैः वेदभै।
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधियाद्वारं विधेय शुभम्॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से ४ तो सिर के हैं उसमें चौखट लगावे तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो और उससे अगले आठ कोण के हैं ये ऊजड़ करे, फिर अगले आठ शाखाओं के सुखकारी हैं अगले ३ देहली के मृत्यु कारक हैं। अगले ४ मध्य के सौख्य कारक हैं।

घर का दरवाजा लगाने का मुहूर्त

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरे।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वैश्मनः॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापे यदा रविः।
गृह द्वारं तदा कुर्यादुत्तरं चापि दक्षिणम्॥
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान्।
कर्तव्यं वै तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात्॥

टीका—कर्क, सिंह, मकर, कुम्भ के सूर्य में घर बनावे तो घर का द्वार

पूर्व-पश्चिम में शुभ है। मेष, वृष, वृश्चिक तुला इनके सूर्य में उत्तर-दक्षिण घरका दरवाजा शुभ है धन, मिथुन, कर्क, मीन सूर्य में घर निर्माण अशुभ है।

भवेत्पुष्णी मैत्रपुष्ये च शुक्रा-करे हस्त चित्रा नले चदिते च गुरौ शुक्र चन्द्राऽर्क सौम्येषु बारे तिथौ नन्द पूर्णा जया द्वार शाखा।

टीका—रेवती, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा स्वाति, पुनर्वसु ये नक्षत्र गु०, शु०, चन्द्र, शनि ये वार १।३।११।३।१३।८।५।१०।१५ तिथि १।३।५।८।६।१२।११ ये लग्न द्वार शुभ हैं।

कुंआं खोदने का मुहुर्त

हस्तस्तिस्त्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि। प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाति धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा, मघा, उत्तरा, तीनों रोहिणी ये नक्षत्र और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये वार २।३।५।७।१०।१३ १५ तिथियों में कुआं बनाना व खोदना शुभ है।

पुनः द्वितीय क्रम देखना

कूपचक्र प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयायखे।
रोहण्यादि लिखेच्चक्र यावन्तिष्ठति चन्द्रमाः।
एकमध्ये द्वयं पूर्वे तृतीयेऽग्निमेव च।
यान्ये बांगसंज्ञयश्च नैऋते षष्ठमेव च॥
पश्चिमे युग्मवायुश्च उत्तरे त्रयईरितः।
ईशाने त्रयो दातव्या वृद्धं रक्षादनुक्रमात्॥
मध्यमेशीघ्रजलं स्वादु पूर्वो भूमौ च खण्डतम्।
आग्नेयां च जलं प्रोक्तं याम्ये च निर्जलं भवेत्॥
नैऋत्याँ च जलं प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च।
वायव्ये चैव पाषाणं उत्तरे च समुद्भवेत्॥
ईशाने मनसा शुद्धि पापी कूपस्य लक्षणम्।

भ्रुवे करजलं मैत्रे वासवे पितभेष कृष्णे ॥
रविमदने द्वितीया पंचमी सप्तमीषु च ।
घटवृष हरिलग्ने जीव शुक्रार्की वारे ॥
मुनिश्वर कथितोयं कूपकारम्भ सिद्धः ॥

३ ईशान सुन्दर जल	२ पूर्व में जल नहीं आवे	३ अग्न जल हो
३ उत्तर सुन्दर जल	१ मध्य मीठा शीघ्र जल	५ दक्षिण में जल न आवे
२ वायव्य पत्थर निकल	२ पश्चिम रेखा खारी जल	६ नैऋत जल

टीका -रोहिणी १ मध्य में, २ पूर्व में, ३ अग्नि में, ५ दक्षिण में, ६ नैऋत में, २ पश्चिम में, २ वायव्य में, ३ उत्तर में, ३ ईशान में रखे। रोहिणी से दिन नक्षत्र तक जो संख्या आवे उसके अनुसार चक्र देखकर फल कहें ।

बाग लगाने की प्रतिष्ठा का मुहूर्त

गोसिंहालिंग तेषु सोत्तरगते भानो बुधादित्रय ।
चन्द्रार्के च शुभां बुधे अमी दयारामप्रतिष्ठाकार्याः ।

टीका—वृष, सिंह, वृश्चिक राशि के सूर्य उत्तरायण । बुध, गुरु, रवि, सोम ये वार शुभ हैं। श्लेषा, भरणी, कृतिका, शतभिषा, विशाखा ये नक्षत्र अमावस्या ४।१४।६।८।९।१२ ये तिथि अशुभ हैं।

सगाई में लड़की के सिर में डोरे गेरना

विश्वस्वातिवैष्णव पूर्वात्रय मैत्रै वस्वाग्नेयैर्वाकर
पीड़ीचितत्र्चैः । वस्त्रालंकारादिसमेतः फलपुष्पैः
सन्तोष्यादौस्यादनुकन्यावरणं सत् ॥

टीका—उत्तराषाढ़, स्वाति, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृतिका विवाह नक्षत्र इतने नक्षत्रों में चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुध इन वारों में कन्या के सिर में डोरा, नवीन वस्त्र, चीज पहरावे ।

अथ कष्ट योग देखना

शतभिषाकरआर्द्रा स्वातिमूलत्रि पूर्वा । भरणी

सहितपुष्यो भौमंदार्कवाराः। प्रथमदिन चतुर्थी द्वादशी षष्ठीभूना। हरिहरनिधि रक्षा रोगिणां काल मृत्युः ॥

टीका—शतभिषा, स्वाति, आर्द्रा, मूल पूर्वा तीनों भरणी, पुष्य के नक्षत्र हों और भौम, शनिवार, रविवार ये वार और १, ४, १२, ६, ३०, ये तिथि ऐसे योग में कोई बीमार हो तो विष्णु भी रक्षा करे तो नहीं बचे।

अथ ज्वालामुखी योग देखना

पड़वा मूल पंचमी भरणी आठें कृतिका।
नवमे रोहिणी दशमी श्लेषा ज्वालामुखी ॥
जन्मै तो जीवे नहीं, बसै तो ऊजड़ होय।
कामनी पहरे चूड़ियां निश्चय विधवा होय ॥
कुए नीर झांके नहीं। खाट पड़ो न उठन्त।
जोतिषी जो जाने नहीं, ज्योतिष कहता ग्रन्थ ॥

टीका—पड़वा को मूल, पंचमी को भरणी, आठें को कृतिका, नौमीं को रोहिणी, दशमी को श्लेषा, ये अग्निमुखी हैं। जो इसमें जन्म ले तो जीवे नहीं घर में बसे तो ऊजड़ होय और स्त्री चूड़ी पहने तो विधवा होय, इसमें कुआ झांके तो बीमार होकर खाट में पड़े तो उठे नहीं, ये ज्योतिष कहती है।

सूतक निर्णय देखना

महिष्योऽजास्तथा गावो ब्राह्मण्यादिस्त्रियस्तथा।
दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिस्थं च नवोदकम् ॥१॥

टीका—भैंस, बकरी, गाय दूध के पशु और ब्राह्मणी आदि स्त्रियां बच्चा होने पर, भूमि मेघ का जल ये दस रात्री में शुद्ध होते हैं।

माता पिता की शुद्धि

दशाहच्छुध्यते माता अवगाह्य पिता शचिः ॥२॥

टीका—माता तो दश दिन में शुद्ध होती है। और पिता स्नान करने से शुद्ध हो जाता है।

मृतक पातक निर्णय देखना

यदा तदा भवेद्दाहः सूतकं मृतपूर्वकम्।

टीका—पातक मृत्यु के ही दिन से मानना चाहिए और व्याह भी उसी तिथि में न होना चाहिए जिसमें मृत्यु हो।

मरने का पातक देखना

सर्वेषं च दशाहं स्यात् सूतकीनां च संत्यजेत्।
चतुर्थे दशरात्र स्यात् षट् रात्रिश्य पंचमे।
षष्ठे तु चतुरो ज्ञेया सप्तमें च दिनत्रयम्।
अष्टमे दिकमेकन्तु नवमे प्रहरद्वयम्।
दशमे स्नानमात्रेण एवं गोत्र प्रसूतकम्॥

टीका—मरण में सभी का दस दिन का सूतक होता है इस वास्ते सूतकियों का त्याग करे। चौथी पीढ़ी हो वो १० दिन तक सूतक माने और पांचवीं में ६ दिन का छटी में ४ दिन का, सातवीं में ३ दिन का, आठवीं में एक दिन का, नवीं में दोपहर का, दशमी में स्नान करने से हो शुद्ध ही जाते हैं ये गोत्र के सूतक हैं।

त्रिपुष्कर योग वर्जित

यमलादि त्रिपुष्कर मूलमघावसुवासवपंचक पंचयुता।
भरणीनहींकीजे प्रेतक्रिया त्त्यजातकुटुम्बस्वयंत्रिया।

टीका—नमलादि त्रिपुष्कर ये लोग मूल, मघा, घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती, भरणी इनमें प्रेत की क्रिया नहीं करे और जो करे तो कुटुम्ब वालों में या अपने घर में दुःख प्राप्त हो।

त्रिपुष्कर योग देखना

भद्रातिथौ रवि भूतनथार्कवरे द्वादशार्थमाज। त्तरणा-
दिति वन्हि विश्वे त्रैपुष्करौ भवति मृत्यु च विनाशवृद्धो
त्रेगुणयदो द्विगुणकृद्धसुतस्थचान्द्रः।

टीका—भद्रा तिथि में से कोई सी तिथि हो और शनि या मंगल या रविवार इन वारों में से वार होय और विशाखा उत्तरा फाल्गुनी पूर्वा-भाद्रपद हो ऐसे योग को त्रिपुष्कर कहते हैं। इसमें मृत्यु हानि होवे तो तीन होय और वृद्धि जन्म भी तीन ही होय और ये ही तिथि और ये ही वार और घनिष्ठा चित्रा, मृगशिरा, ये नक्षत्र होय ता ऐसे योग को द्विपुष्कर योग कहते हैं और इनमें हानि वृद्धि जन्म दोनों होते हैं।

नींव धरने में शेषनाग का मुखविचार

सिंह कन्ये तुलायां भुजंग पतिमुखं शम्भे कोणेऽग्नि-खाते, वायव्ये शेषवक्रे अलिधन मकरे ईश खातं वदन्ति । कुम्भे मीने च मेषे नैऋति दिशि मुखं खातं वायव्य कोणे उदभे मिथुने कुलीरे अग्निदिशि मुख राक्षसी कोणखातम् ॥

टीका—सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में शेषनाग का मुख ईशान में अग्नि दिशा में खो देओर चिने वृश्चिक धन, मकर, के सूर्य में शेष का मुख नैऋत वायव्य में, चिने, वृष मिथुन कर्क के सूर्य में मेष का मुख अग्नि में नैऋत में चिने ।

शेषनाग फल देखना

ऐन्द्रयाँ सिरो भाद्रपदः त्रिमासे । याम्याँ शिरो मार्गशिरस्त्रयं च ॥ फाल्गुन्य मासाद् दिशि पश्चिमीयाम् । ज्येठात् त्रिमासे च तिथोत्तरेषु ॥

टीका - भाद्रपद अश्विनी, कार्तिक महीने शेषनाग का शिर पूर्व दिशा में मार्गशीर्ष, पौष माघ दक्षिण में फाल्गुन चैत्र बैसाख पश्चिम में और ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण में मुख उत्तर दिशा में रहता है ।

शिरः खनेत् मातृपित्रोश्च हन्ता खनेत् पृष्ठं भय रोग पीड़ा । पुच्छं खनेच्च त्रिषु गोत्रहानिः स्त्री पुत्र लाभा धनं वामकुक्षौ ॥

टीका—यदि शेषनाग के शिर पर खुदवावे तो माता पिता की हानि होय और पीठ पर खुदवावे तो भय रोग और पूछ पर खुदवावे तो तीन गोत्र की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवावे तो स्त्री पुत्र धन आदि का लाभ हो ।

पृथ्वी का सोना देखना

प्रद्योतनात् पञ्चनखांक सूर्यो नवेन्दुः षड्विशा-मितानि भानि । सुप्ता मही नैव गृह विधेयं तड़ाग-वापी खननं न शस्तम् ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से ५ वे २० वे ६।१२।१६।२६ इन पर पृथ्वी सोयी है। सोती हुई पृथ्वी पर तालाब, बावड़ी, कुआं, हवेली इत्यादि को नहीं खोदे।

तिथि निर्णय

यां तिथि समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।
सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्यनकर्मसु॥

टीका—जिस तिथि में सूर्य उदय होता है वह तिथि दान के करने में और विद्या के पढ़ने में सारे दिन मानी जाती है।

व्रत निर्णय

शिवं वा शिवदुर्गा च दीपिकां वहुताशनीम्।
जन्माष्ठमी चन्द्राषष्ठी पूजयेत् प्रथमे दले॥

टीका—शिवजी और दुर्गा का व्रत दिवाली और होली जन्माष्टमी चन्दनषष्टमी सत्यनारायण आदि व्रत तिथि के प्रथम भाग में करे।

एकादशी यदा नष्टा परतो द्वादशी भवेत्।
उपोष्या दशमी विद्धा मुनिरुद्दालकोऽब्रवीत्॥

टीका—यदि एकादशी की हानि हो तो द्वादसी छोड़ के दशमी मेघा एकादशी में व्रत करे।

नवमी पलमे कन्तु दशम्याश्च तिथिक्षयः।
तदा एकादशी त्याज्या द्वादश्यां व्रतमाचरेत्॥२॥

टीका—नवमी १ पल हो दशमी का क्षय नाम बिलकुल नहीं हो, तो उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी व्रत करे।

हरिवासर देखना

आभाका सित पक्षे तु मैत्र श्रवण रेवती।
संगमे नैव भोक्तव्यं-द्वादशी द्वादशाहरेत्॥

टीका—जो एकादशी व्रत किया होवे और अगले दिन द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र हो और महीना आषाढ़ का होवे और भाद्रपद में द्वादशी को श्रवण होवे और कार्तिक में द्वादशी को रेवती और चांदनी रात हो तो जो इनमें भोजन करे तो बारह वर्ष किये हुए एकादशी व्रत नष्ट हो।

मैत्रस्य प्रथमे पादे श्रवणे च द्वितीयके।

रेवती अंतपादेषु भोजनं च विवर्जयेत्।

टीका—अनुराधा के प्रथम श्रवण के दूसरे में, रेवती के चौथे चरण में नहीं करना चाहिए।

सर्व प्रतिष्ठा मुहूर्त देखना

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांक शुक्रे दृश्ये मृदुक्षिप्रचर ध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणेवा

टीका—कुआँ आदि सर्व प्रतिष्ठा में उत्तरायण सूर्य, गुरु, चन्द्र, शुक्र उदय हो और मृ० रे० चि० अनु० ह० अश्वि० पुष्य, अभि, स्वाति, पुन श्र० ध० श० रो० तीनों उत्तरा और शुक्ल पक्ष हो जिस देवता की प्रतिष्ठा करावे उसी का नक्षत्र मुहूर्त में ले।

रिक्तारवर्जे दिवसे शुभस्ताः शशांकपापैस्त्रिभवांग संस्थैः। व्यंत्याष्टगैः सत्खचरैमृगेंद्रे सूर्योघटे कौथुनतो च विष्णुः ॥२॥

टीका—४।६।१४ और मंगलवार को त्याग लग्न शुद्धि चन्द्रमा सूर्य भौम, शनि, राहु, केतु ये ग्रह ३।६।११ स्थान होवे और शुभ ग्रह बुध गुरु शुक्र १२।७ छोड़कर १।२।४।५।७।६।१० में होवे तो प्रतिष्ठा करे। सिंह लग्न में सूर्य की। कुम्भ में विष्णु की स्थापना करे।

शिवो नृयुग्मे द्वितयो च दैव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरक्षे। पुष्ये ग्रहा विघ्नयक्ष सर्पभूता दयोत्ये श्रवणे जिनश्च ॥३॥

टीका—मिथुन लग्न में शिवजी की ३, ६, ६, १२ लग्नों में दुर्गाकी और २, ५, ८ ११ लग्नों में क्षुद्रा देवी चौंसठ योगिनी और पुष्य में नवग्रहों की सूर्य की हस्त में गणेश जी और यक्ष शेष और भूतादि देवताओं की स्थापना करे।

बिटौड़ा का मुहूर्त देखना

सूर्य चाद्र लभैरधस्थ लगतैः पाकोरसैः संयुक्तः। शीर्षेयुग्ममिते शपस्य दहनं मध्ये युगे सर्प भीः ॥१॥ प्रगाशादि सुवेद मेश्च सुहृदः स्यात्संगमो रोगभीः स्वाथादेःकरणं सुखं च गदितं काष्ठादि संस्थापने

टीका—सूर्य के नक्षत्र से अगले ६ नक्षत्रों में बिटौड़ा रक्खे तो उत्तम पाक बने, अगले दो नक्षत्रों में धरे तो उन उपलों से मुर्दा फुंके, उनसे अगले चार नक्षत्रों में सर्प का भय, उनसे अगले चार नक्षत्रों में मित्र का भोजन, उनसे अगले आठ में रोगी के लिए काढ़ पकें, उनसे अगले चार नक्षत्रों में शुभप्रद है।

पुत्र गोद लेने का मुहूर्त

हस्तादि पंचक भिषग्वसु पुष्य भेषु सूर्यक्षमाज गुरु भार्गव वासरेषु। रिक्ता विवर्जित तिथिष्वलि कुम्भ लग्ने सिंहे वृषे अवति दत्त परिग्रहोयम्।

टीका—हस्त से पांच हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र ये वार ४,९,१४ छोड़ के बाकी तिथियों में वृश्चिक, कुम्भ, सिंह, वृष इन लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ है।

पशु ब्याने वर्जित मास

माघे बुधे च महिषी श्रावणे पड़वा दिवा।
सिंहे गांवः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका॥

टीका—माघ के महीने में बुध के दिन भैंस, श्रावण में प्रतिपदा को घोड़ी, सिंह के सूर्य में गौ ब्यावे तो स्वामी को मृत्यु दायक होता है शांति करे।

वधू प्रवेश मुहूर्त

ध्रुवः क्षिप्र मृदुः श्रोत्र वसु मूल मघानिले।
वधूः प्रवेशो सन्नेष्ठो रिक्तारार्के बुधेपरे॥

टीका—तीनों उत्तरा, रोहणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि०, मृ०, रे०, चित्रा, धनु, श्र० ध० मू०, मघा स्वा० नक्षत्र में ३, ९, १४ ये तिथि मंगल, रवि, बुधवार को छोड़कर नव वधू का घर में प्रवेश करें।

बाग लगाने का मुहूर्त

लतागुल्मवृक्षारोपो हस्त पुष्याश्विनी ध्रुवैः।
विशाखा मृदु मूला हि वारुणैश्च प्रशस्यते॥
गुरौ केन्द्रे विपापेखे विधौ वारि विधूदये।
शुभे युक्ते क्षिते वन्धौ सद्वारे शुभोदये॥

टीका—पेड़, बेल, गुच्छे इनके लगाने में हस्त, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्लेषा, शतभिषा ये नक्षत्र और वृष, कर्क, कन्या, तुला, इन ये लग्न केन्द्र १, ४, ७, १० में गुरु, और लग्न में या १०वें चन्द्रमा २।५।१०।१३ तिथि च० बु० गु० शु० ये वार शुभ हैं केन्द्र में पाप ग्रह न हो और ४ स्थान शुभ ग्रहों से युक्त हों इनमें बाग लगावे और जब पेड़ बोवे ये मन्त्र पढ़े—

वसुधेति च शीतेति पुन्यदेति धरेति च।
नमस्ते शुभगे देवी द्रूमोयं वृद्धामिति ॥

माघ ज्येष्ठ अमावस्या फलम्

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयोः।
अमावस्या तदा पृथ्वी रुण्डा मुण्डा च जायते ॥

टीका—माघ, ज्येष्ठ की अमावस्या को जो रविवार पड़े तो शीश कट कटकर पृथ्वी पर पड़ें।

तेरह तिथि फलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथियश्च त्रयोदश।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥

टीका—जो एक पक्ष में १३ तिथि हों तो मनुष्य का, घोड़ों का और हाथियों का नाश हो। त्रयोदश तिथि का पक्ष तीनों योनि को निषिद्ध है।

मुख्य द्वार का मुहूर्त

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरः।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनाम् ॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम्।
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान्।
न कर्त्तव्य तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥

टीका—कर्क, कुम्भ, सिंह, मकर के सूर्य में घर बनावे तो घर का दरवाजा पूर्व पश्चिम मेष, वृष, बृश्चिक और तुला के ये सूर्य में उत्तर दक्षिण को घर का द्वार शुभ है। धन, मिथुन, कन्या, मीन के सूर्य घर का बनाना अशुभ और दुःखप्रद है।

साद पहनने का और पुंसवन का मुहूर्त	पुनर्वसु पुष्य मू० रे० पूर्वा भा०, उत्तरा फा० पूर्वासा० उत्तराषा० श्र०मृ०ह० ये नक्षत्र गु० भौ० र० ये वार २।३।५।"।८।१०।११ से १३ ये तिथि १।२।३ मास ६।२।५।८।११ ये लग्न होने चाहियें सीमन्तोन्नयन कर्म ८ महीने में करना चाहिये ।
दुकान करने का मुहूर्त	अनु० उ० तीनों रो० अश्वि० पुष्य पू० श० ह० श्र० ये नक्षत्र १। ३ । ५ । ७ । ८ । १० । ११।१३ ये तिथि गु० शु० बु० च० ये वार २।५।८ ये लग्न शुभ हैं ।
राजा के देखने का मुहूर्त	उत्तरा तीनों श्र० श० ध० मृ० पु० अनु० रो० रे० पुष्य अश्विनी ह० चि० ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभ वार हों ।
नौकरी करने का मुहूर्त	ह० चि० अनु० रे० अश्वि० मृ० पुष्य ये नक्षत्र बु० गु० शु० ये वार शुभ तिथि यानि, राशीश, गण वर्ग मिलावे ।
नाव बनाने का मुहूर्त	पूर्वा तीनों श्ले० म० श्र० पु० श० मृ० ये नक्षत्र शुभ वा २ ३।५ ७।८।१०।११।१३ ये तिथि शुभ हैं ।
दाँय चलाने का मुहूर्त	पूर्वा तीनों उत्तरा म० श्ले० ज्ये० आर्द्रा० ध० श्र० कृ० भू० मू० अनु० ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभ वार में ।
बीज बोने का मुहूर्त	ह० चि० स्वा० म० पुष्य उत्तरा तीनों रो०मृ०ध०रे०अ०मू० अनु० ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभ वार में ।
जच्चा को बाहर निकालने का मुहूर्त	ज्ये० अनु० पु० पुष्य रो० श्ले० मु० ह० रे० उत्तराषाढ़ श्र० ध० ये नक्षत्र र०च०गु०शु० ये वार ५।६।७।१० ये लग्ने २।३।५।७।८ १०।१३ तिथि शुभ हैं ।
शुद्ध करने का मुहूर्त	आर्द्रा० भ० पूर्वा तीनों मू० अश्ले० म० ये नक्षत्र २।८।५।१०।१६ तिथि बु० च० गु० ये वार शुभ लग्न हैं ।
पुल बनाने का मुहूर्त	उत्तरा तीनों रो० स्वा० मृ० ये नक्षत्र म० र० गु० ये वार शुभ लग्न २।३।५।७।८।१०।११।१३ शुभ तिथि ।

ग्रहण का फल देखना

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः । शस्त्रकोपैः क्षयं यांति तदा भयं परस्परम् ॥ अस्तोदितौ च ग्रस्तादितौ धान्यभूपालनाशकौ । सर्वग्रस्तौ चन्द्र सूर्यौ दुर्भिक्ष मरणप्रदौ ॥

टीका—जो एक महीने में सूर्य चन्द्र दोनों ग्रहण पड़ें तो राजाओं में युद्ध हो शत्रु कोपे और नाश हो । जो सूर्य चन्द्रमा ग्रहण होते उदय हो या अस्त हो तो अन्न और राजा का नाश हो सर्वग्रहण हो तो दुर्भिक्ष हो और मरण हो ।

॥ इति मुहूर्त प्रकरण समाप्तम् ॥

अथ प्रश्न-प्रकरण

चतुर्थ भाग

शिरो मुखं कर्णनेत्रं स्पृष्ट्वा पृच्छति यो नरः।
सुवर्णधनधान्यानाँ लाभस्तत्र न संशयः ॥१॥
स्कंधग्रीवाकन्ठहस्त स्पर्शे लाभो हि दुःखतः।
कुक्षीनाभिसमालंभे भक्ष्यपानादि सिध्यति ॥२॥
जंघ लिंगकटिस्पर्श कन्या लाभसमुद्भवः।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥३॥
केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः कार्यसिद्धिर्न जायते।
काष्टकंकमठस्पर्शे ग्रहपीडाभयं भवेत् ॥४॥
सुगन्धमद्य पानादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते।
शून्यालते श्मशाने च शुष्ककाष्ठद्दाते तारो ॥५॥
गुल्फभस्माधर्मस्थाने प्रश्नक्लेशः प्रजायते।
देवस्थाननदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ॥६॥
शुभं दृष्टि श्रुतं सिद्धिर्विदित्त च जायते।

टीका—माथे, मुख, कान, नेत्र इन पर हाथ धरे तो लाभ हो। कन्धा गला हाथ कुल्ले छूवे तो कष्ट से लाभ, कोष नाभि को छूवे तो अच्छा भोजन पावे, जांघ, लिंग, कमर स्पर्श करे तो कन्या या पुत्र हो घोंटा कौनी छुवे तो क्लेश हो यदि केश छुवे तो मृत्यु का कष्ट हो तृण काष्ठ अग्नि इनमें कष्ट हो। फल-फूल सुगन्ध या मद्यपान में सिद्ध हो सूने घर में श्मशान में भस्म पर बैठ के पूछे तो क्लेश हो देवता के मकान पर या नदी पर या गौशाला में या सन्मुख होके पूछे तो शुभप्रद है।

कन्या होगी या पुत्र ये देखना

नामाक्षराणि त्रिगुणीकृतानि तुरंगदेशेतिथिमिश्रितानि
अष्टौ चभागो लभतेचशेष समेच कन्या विषमेकुमारः

टीका—गर्भिणी के नाम जितने अक्षर हों उसके तिगुने करे उसमें घोड़ा के अक्षर देख के अक्षर मिलावे और वर्तमान तिथि मिलावे फिर आठ का भाग दे अंक सम नाम २। ४। ६ इस प्रकार बचे तो कन्या विषम नाम १। ३। ५ इस प्रकार बचे तो पुत्र हो।

गर्भिनी प्रश्न देखना

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमास्तृतीय सप्ते नव पंचमेश। गर्भे पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतःश्चान्यैर्ग्रहैः स्त्री विबुधैः प्रणीता। नखद्वयं गर्भिणी नामधेयम् तिथिप्रयुक्तम् शर संयुक्तं च। एकेन हीनं नव भागधेयम् समे च कन्या विषमे कुमारः॥

टीका—जो कोई पूछे मेरे पुत्र होगा या कन्या उस वक्त का लग्न देख के धरे, लग्न से तीसरे ७,९,५ जो इन स्थानों में सूर्य बु० म० ये ग्रह हों तो पुत्र हो इनमें यदि और ग्रह हों तो पुत्री जानो।

टीका—नख नाम बीस में गर्भिणी स्त्री के नाम के अक्षर और उस दिन की तिथि जोड़ के, पांच और मिलावे उसमें से एक घटा के नव का भाग दे। १,३,५,७ बचे तो पुत्र हो और यदि २,४,६,८ बचे तो कन्या हो।

मुट्ठी का प्रश्न देखना

मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम्।
कर्के च पाण्डुरो ज्ञेयः सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम्॥
कन्यायां नील वर्णस्यात् श्वेतवर्णं तथा तुले।
वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिर्दिशत्।
नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णम् मीने पीतं वदेत्सुधीः।

टीका—जो कोई कहे मेरी मुट्ठी में क्या है मेष लग्न हो तो लाल रंग की वस्तु। वृष में पीला, मिथुन में नीला, कर्क में सफेद, सिंह में धुवें का सा रंग की, कन्या में नीला, तुला में सफेद, वृश्चिक में लाल, धन में पीला, मकर में काला, कुम्भ में भी काला, मीन में पीला, रंग की वस्तु कहे।

कार्य प्रश्न देखना

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रितां।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥
पंचके त्वरिता सिद्धिः षट् तुर्ये च दिनत्रयं।
त्रिसप्तके बिलम्वश्च दौ चाष्टौ नहि सिद्धिदौ॥

टीका – जो कोई पूछे मेरा काम कब तक होगा, पूछने वाले का जिस दिशा में मुंह हो वो दिशा पहर, नक्षत्र, वार सबको जोड़ करके ८ का भाग दे १ या ५ बचे तो जल्दी सिद्ध हो, ६ या ४ बचे तो तीन दिन में, ३, ७ बचे तो देर में होगा, २ या शून्य बचे तो नहीं होगा।

पंथा प्रश्न देखना

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वार मिश्रिता। सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेष तु फलमादिशेत्॥ एकेन गमने सिद्धि द्वीभ्याँ मार्गश्च एव च। तृतीये चार्धमार्गे वै चतुर्थे ग्राम आदिशेत्। पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठेक्लेषः प्रजायते सप्तमे शून्यता ब्रतिरिति ज्ञेयं विचक्षणैः।

टीका—यदि कोई पूछे हमारा आदमी परदेश से कब आवेगा, तो तिथि वार पहर जोड़ कर ७ का भाग दे १ बचे तो घर पै कहना २ बचे तो रास्ते में, ३ बचे तो अर्ध मार्ग में, ४ बचे तो गांव के पास आ गया है। ऐसा कहे, ५ बचे तो रास्ते में से फिर गया, ६ बचे तो कष्ट हो गया। शून्य बचे तो जानो मर गया।

धनसहजगतौ गुरुभार्गवा कथयतोऽन्वगमसं प्रवासि-पुंसां। तनुहिबुकगताविभौ च तद्धज्भटिति नृणां कुरुते गृहप्रवेशम्॥

टीका—पूछने के समय जो लग्न हो उसके दूसरे स्थान गुरु और तीसरे स्थान शुक्र हो तो जल्दी आना कहे। पहले स्थान शुक्र और चौथे स्थान गुरु हो तो जानो आ गया।

रोगी बाबा दोष प्रश्न देखना

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहरमेव च।
अष्टभिस्तहरेद् भागं शेषं तु फलमादिशेत्॥
द्यारेनौ देवताबाधा पैत्रो वै नेत्रदंतिषु।
षट् चतुषु भूतबाधा न बाधा चक्र पंचके॥

टीका—रोगी पूछे क्या दोष है कब आराम होगा तो तिथि वार नक्षत्र पहर लग्न सबको जोड़कर ८ का भाग दे जो ७, ३ बचे तो देवता की बाधा कहे और २ अथवा शून्य बचे तो पितरों की, ६, ४ बचे तो भूत १, ५ तो रोग व ग्रहों का दोष कहे।

अथ जौ देखना

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधासानिर्विवर्णता । वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरदुः स्वप्ननत्ररुक । मिथुने च महा-मायादोषो वेलाज्वरोऽनिलः । कर्के च शाकनीदोषो हास्यरोदनमौनता । सिंहे जले प्रेतदोषो दिवाशीते ज्वरोरुचिः । ग्रहदोषश्च कन्यातां क्रोधालस्यरुचि-र्व्यथा क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले संतानपीडनम् । वृश्चिके नाउदोषश्च ज्वालादेहे कुबुद्धिता ॥ चापे-देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकादरव्यथा मकरेचण्डिकादोषो दहभंगो ज्वरोनिलः ॥ मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् । मीने चांडाकिनीदोषो ज्वरोजंजाल-दर्शनम् ॥

टीका—जब कोई जौ दिखावे तो उन जौ को बारह २ करके गिने । १ बचे तो मेष लग्न, २ वृष ऐसे इस प्रकार जितने जौ बचें १२-१२ से गिनती कर वो ही लग्न जानना । १ मेष में पितरों का दोष कहना पितर गायत्री जपो । उसे भूख नहीं लगती । २ देवी का दोष हलका बुखार रहे । ३ महा-माया का दोष । ४ शाकुनी देवी की पूजा करो, ५ जल का प्रेत है उसका दोष जो इसने खाया है वह चीज नदी के किनारे धर दो । ६ ग्रहों का दान करो । ७ सन्तान का दोष ब्राह्मण के लड़के को कपड़े पहनाओ और क्षेत्रपाल का दोष चौमुखा तेल का दीवा बाल के सिंदूर, उड़द, स्वाही, दही उस पर धर उसके सिर पर उतार कर चौराहे पर रखो । ८ देवता का दोष देही में आग सी लगी रहे, देव पूजन करो । ९ बचे तो अंग रोग अनुभवी वैद्य से चिकित्सा कराओ । १० चण्डी देवी का दोष, चण्डी की जात दो या कन्या जिमाओ । ११ प्रेत का दोष, कुछ प्रेत का उतारा उतार कर धरो या गायत्री जाप करवाओ । १२ योगिनी देवी का दोष, देवी या माता का उठावना धरो ।

पापग्रह फल देखना

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापो यदा भवेत् ।
हते जले कुजे दोषो तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥
शनौ जले कुजे शस्त्रे गरे सूर्यश्च वैवस्तः ।
राहुश्च विकृतो नष्टः शांतिपूजा द्विजार्चना ॥

टीका—१।२।६।३।६ जो इन स्थानों में पाप ग्रह हों तो जल में डूब के मरे या जहर देने से मरे हुए का दोष जानो और जो शनि हो तो कुवे में डूबे हुए का दोष। मंगल हो तो शस्त्र से मरे हुए का दोष। सूर्य हो तो कोठे से गिरे हुए या विष खाकर मरे का दोष या कोई कुमति में मरा हो उसका दोष, जो ऐसा हो तो पीपल की पूजा या शिवजी की पूजा या ब्राह्मण भोजन से दोष दूर हो।

वस्तु खोई जाने का प्रश्न

अन्धश्च चिपिटाद्यश्च काणाद्यो दिव्यलोचनः।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥

अन्धा चिपटा, कांणा सुलोचना, ये चार प्रकार के नक्षत्र हैं। रोहिणी से ७ वार गिने फिर उसका फल कहे।

रो०	पुष्य उ०फा	वि०	पू.षा.	धनि०	रे० नक्षत्र अन्धे।
मृ०	श्ले० ह०	अनु०	उ.षा.	श०	अ० नक्षत्र चिपटे।
आ०	म० चि०	ज्ये०	अभि.	पू भा०	भ० नक्षत्र कांणे।
पु०	पू फा. स्वा०	मू०	श्र०	उ भा०	कृ० नक्षत्र सुलोचना।

अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे चैव दिनत्रयम्।
काणाद्ये मासमेकं तु सुनेत्रे नैव दृश्यते ॥

टीका—अन्धे नक्षत्र में जाय तो जल्दी मिले चिपटा में तीन दिन में मिले, कांण में एक महीने में सुलोचना में न मिले।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक् संख्यया हते चैव सप्तांके विभजेत्पुनः। एकेन भूतले द्रव्यं चेद्भाण्डसंस्थितम्। तृतीये जलम्-ध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥ तुषस्थं पंचमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्म मध्य स्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्।

टीका—जो कोई कहे मेरी चीज जाती रही है, उस दिन की तिथि वार नक्षत्र पहर सबको जोड़े गुणा कर दे ७ का भाग दे १ बचे तो पृथ्वी में कहें, २ बचे तो बर्तन में, ३ बचे तो जल में, ४ बचे तो छत में, ५ बचे तो भूसे में, ६ बचे तो गोबर में, ० बचे तो भस्म में कहे।

पशु खोये जाने का प्रश्न

द्युमणिभान्नवमेषु वनस्थितस्तदनुषट्सु च कर्णप स्थितः। अचलमेष गतोऽचिरेगृहम् द्वयगते गत एव मृतं त्रिषु ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र में ९ वां नक्षत्र हो तो पशु वन में गया ६ में रास्ते में है ७ में जल्दी घर आ जाय।२ में नहीं मिले ३ में मर गया।

वर्षा नक्षत्र संज्ञा देखना

दशार्द्राद्या स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः।
तिस्त्रस्त्रियश्च मूलाद्या पुरुषोश्च चतुर्दशः॥
स्त्रीपुंसयोर्महोवृष्टिस्त्रिनपुंसकयोः क्वचित्।
स्त्री स्त्री शीतलछाया योगे पुरुषायोर्न च।

टीका—आर्द्रा से लेकर दश नक्षत्र स्त्री है। विशाखा से ३ नक्षत्र नपुंसक कहे। मूल में चौदह नक्षत्र पुरुष है। जो स्त्री नक्षत्र पर चन्द्र हो और सूर्य पुरुष में आवे तो वर्षा हो। स्त्री नपुंसक में वर्षा थोड़ी हो। जो सूर्य और चन्द्रमा दोनों स्त्री नक्षत्रों पर मेघ छाया रहे परन्तु वर्षा नहीं हो। यदि दानी पुरुष नक्षत्रों पर हो तो भी वर्षा नहीं हो।

वर्षा का दूसरा योग

उदयास्तं गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रये तथा॥

टीका—शुक्र बुध के उदय अस्त में वर्षा हो और चन्द्रमा जल राशि में हो तो पक्ष के अन्त तक या संक्रान्ति तक वर्षा हो।

बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्॥

टीका—जो बुध शुक्र एक राशि पर हों तो सारी पृथ्वी में जल बरसे और इनके बीच में सूर्य आ जावे तो समुद्र भी सूख जाए।

चलत्यंगारके वृष्टि स्त्रिग्धा वृष्टिः शनैश्चरे ।
वारिपूर्णां मही कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥

टीका—मंगल चले तो वर्षा हो शनिश्चर के चलने में जहाँ-तहाँ वर्षा हो इनके पीछे गुरु हो तो सारी पृथ्वी में जल वरसे ।

भानोरग्रे महीपुत्रो जलेशोषः प्रजायते ।
भानोः पश्चात् धरासूनुः वृष्टिर्भवति भूयसी ॥

टीका—सूर्य के आगे मंगल होय तो प्रजा के जल को सोख जाए और पीछे होय तो वर्षा हो ।

ग्रहं कृत्वा सुवृष्टिश्च हानिश्च भयाकारकाः ।
विद्युत्पादतोऽनिदाहोऽथ परीवेषश्च रोगकृत ॥
दिगदाहोनिभयं कुर्याग्निर्घातः नृपपीडनम् ।
द्वान्द्वायुश्च डवसश्च चारभीतिप्रदायकौ । ग्रहे-
युद्धे राजयुद्धे केतुदृष्टे तथैव चग्रहणांते महावृष्टिः
सर्वदोषविनाशनी ।

टीका—जो विना वायु आकाश में धूर वरसे बिना मेघ बिजली चमके सूर्य का मण्डल लाल हो जाय और सूर्य छिपे छिपे लाल पीला आकाश दीखे विना वादल गरजे, आकाश का गरगराना हो तो चोरभय हो राजाओं में युद्ध का भय हो वीमारी का भय हो और जो केतु उदय हो तो युद्ध हो, जो ग्रहण के पीछे वर्षा हो तो सारा दोष दूर हो जाये ।

अथ गुरुपूर्णमा को पवन परीक्षा

आषाढ़े पूर्णिमायां च नैर्ऋते यदि मारुतः । अना-
वृष्टि धान्यनाशो जलं न दृश्यते । आषाढ़े पूर्णिमाया
तु वायव्ये यदि मारुतः । धर्मसिद्धस्तदा लोके
धनधान्यं गृहे गृहे ॥ आषाढ पूर्णिमायां तु ईशान्यै
वापि मारुतः सुखिनीहि तदा लोके गीतवाद्यपरा-

यणाः। वन्हिकोणे वन्हिभीतिः पश्चिमे ज्जलदमयम्
अन्यत्र यदि वायुः स्तात् सुभिक्षं जायते तदा।
सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत्
उल्कातारा वज्रपातेग्रंस्तास्तौ शशिसूर्य्यकौ ॥
धूम्रकेतुः शुक्रचापः ग्रहणे बहुधा यदा। तदासौ
सर्ववस्तुनां जायते च महार्घता ॥

टीका—जो आषाढ़ की पूर्णिमा को सूर्य से अस्त समय की नैऋत की वायु चले तो वर्षा थोड़ी हो अन्न का नाश हो, कुएं भी सूख जायें वायव्य की वायु चले तो लोक में धर्मशीलता रहे धन धान्य की वृद्धि हो जो ईशान की चले तो लोक सुख आनन्द रहे। अग्निकोण की चले तो आग बहुत लगे। पश्चिमी चले तो जल का भय हो और दिशा की चले तो सुभिक्ष हो। उत्तर की या पूर्व की या दक्षिण की चले तो आनन्द हो पूर्णिमा को भूमि कांपे उल्कापात दिन में तारा टूटे। वज्रपात बिजली गिरे चन्द्र सूर्य ग्रसे या केतु उदय हो या धनुष निकले तो सब वस्तु महंगी हों।

नौतनी का श्लोक पत्रों का

मयूराणां मघ कुवलयकदम्बो मधुलिहाम।
सरोजानां भानु कुसुम समयः काननभुवाम्।
चकोराणाँ चन्द्रः प्रथयति यथा चेतसि सुखम्।
तथास्माकं प्रीतिम जनयति तवालोकनमिदम्।

टीका—जैसे वादल के गर्जन से मोरों के चित्त में सुख प्राप्त होता है और जैसे कमल का पुष्प भौरों के चित्त में सुख देता है और जैसे सूर्य नारायण तालावों के फूलों को सुख देता है और जैसे वसन्त ऋतु वन में रहने वालों को सुख देती है। ऐसे ही आपका दर्शन चित्त में प्रीति को पैदा करता है।

नागो भाति मदेन कंजलरु है पूर्णेन्दुना शर्वरी।
शीलेन प्रमदा जवेन तेरगो नित्योत्सवैर्मंषदरम्।
वाणी व्याकरनेन हंसमिथुनैर्दयः सभा पंडितैः।
सुत्पुत्रेण कुलन नृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना ॥

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा।
पापं तापं तथा दैन्यं हन्ति सज्जनसंगमः॥

टीका—हाथी को मद करके शोभा को प्राप्त होता है। जल कमल करके शोभा को प्राप्त होता है और पूर्ण चन्द्रमा से रात्रि शोभा को प्राप्त होती है और शील से स्त्री शोभा को प्राप्त होती है और घोड़ा ज्यादा चलने से शोभा को प्राप्त होता है और मन्दिर में नित्य उत्सव होने से मन्दिर की शोभा है और वाणी का व्याकरण करके शोभा है और नदियां हंसों के जोड़े से शोभा को प्राप्त होती हैं और पण्डित की सभा करके शोभा है और कुल का सुपुत्र होने में शोभा है। राजा की पृथ्वी करके शोभा है और विष्णु भगवान से त्रिलोकी शोभा है। ऐसे ही आपके सम्बन्ध से हमारी शोभा है।

टीका—गंगा जी का स्नान करने से पाप दूर हो जाते हैं और चंद्रमा के दर्शन करने से ताप दूर हो जाते हैं। कल्पवृक्ष है उसके दर्शन से दरिद्रता दूर हो जाती है। पाप ताप दरिद्रता ये तीनों सज्जनों के मिलने से दूर हो जाते हैं आप सज्जनों से मिलने से सब दुःख दूर हो गए हैं।

पंचगव्य	पंचामृत	पंचपल्लव	पंचरत्न
गोमूत्र	गो घृत	वड़ का पत्ता	सोना
गो गोवर	गो दहि	गूलर का पत्ता	चांदी
गो दूध	गो दूध	पीपल का पत्ता	तांबा
गो घृत	गंगाजल	आम का पत्ता	मूंगा
गो दधि	शहद	पिलखन का पत्ता	मोती

॥ इति श्री ज्योतिष सर्वसंग्रह चारों प्रकरण भाषा टीका सहित।

हर प्रकार की पुस्तकें वी. पो. द्वारा मंगाने का पता :—

जनता प्रकाशन (पंजी०)

कूचा चेलान, खारी बावली, दिल्ली-6

मुद्रक : यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

प्राचीन यन्त्र मन्त्र तन्त्र विद्या का चमत्कार

● देवी-देवता सिद्धि—इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं की सिद्धि करने के दुर्लभ मन्त्र, और उनकी कृपा का पूरा वर्णन दिया गया है मूल्य 20/-

● भूत प्रेत पिशाच सिद्धि—भूत, प्रेत, पिशाच, बैताल, भूतनी, डाकिनी आदि की सिद्धि करने वाले भूत-प्रेतादि निवारक यन्त्र-मन्त्र दिये गए हैं मूल्य २०/-

● अघोर विद्या सिद्धि—तन्त्र शास्त्रोक्त, शव-साधन श्मशान-साधन, वीर-साधन मुण्ड-साधन, अघोर-साधन, आदि करने का विस्तृतवर्णन है। मूल्य २०/-

● बंगला तन्त्र-मन्त्र सिद्धि—बंगला देश में प्रचलित जादू विद्या, मन्त्र-तन्त्र आदि का विस्तृत वर्णन। सैकड़ों आश्चर्यजनक करिश्मों की जानकारी दी गई है मूल्य २०/-

● छाया पुरुष (हमजाद) सिद्धि—इस सिद्धि द्वारा छाया की पुरुष को देखकर उस प्राणी के बारे में सही भविष्य वाणी करने की अनेक विधियाँ दी हैं। मूल्य २०/-

● मनोकामना सिद्धि—यह पुस्तक सब तन्त्र ग्रन्थों का निचोड़ है। प्रत्येक कामना साधन की विधियां विस्तार सहित दी गई हैं मूल्य २५/

● दक्षिणी देश के अद्भुत जादू—विभिन्न प्रकार के तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र, हाथ की सफाई तथा अन्य आश्चर्यजनक खेल तमाशों के रहस्यों का संकलन किया गया है, मूल्य २०/-

● तांत्रिक साधन सिद्धि—इस पुस्तक में तान्त्रिक-साधनों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विधि का विस्तृत वर्णन किया गया है। मूल्य २०/-

● यन्त्र सिद्धि—मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, संकट नाश आदि के ४०० यन्त्रों का सचित्र वर्णन किया गया है। मूल्य २०/-

● मन्त्र सिद्धि—मन्त्र शक्ति से रोग, विपत्ति निवारण व मन्त्र शक्ति से कामना सिद्धि के अनेक विधान, प्राचीन मन्त्रों का विशाल संग्रह मूल्य २०/-

● तन्त्र सिद्धि—सैकड़ों ऐसे तन्त्र दिए गये हैं जो अद्भुत चमत्कार दिखाते हैं। रोगों को ठीक करने के तन्त्र तथा सैकड़ों टोने-टोटके बताए गए हैं। मूल्य २०/-

● वशीकरण सिद्धि—राजा, अधिकारी, पत्नी पुत्र, प्रेमी-प्रेमिका अथवा किसी भी स्त्री, पुरुष को वश में करने की सैकड़ों विधियों से युक्त मूल्य २०/-